अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष: 45, संयुक्तांक: 2-3, 1-30 सितंबर 2021

दिल्ली-विमर्श

10-12 सितंबर 2021

3 झारखंड में विनोबा —डॉ सुखचन्द झा

9 जनाधार के प्रयोग और हमारे अनुभव —धीरेंद्र मजूमदार

11 राष्ट्रवाद युद्ध पैदा करता है —जे कृष्णमूर्ति

13 अमावस्या की रात में टिमटिमाते हुए तारे

14 दिल्ली विमर्श के तीन प्रस्ताव

विमर्श के पीछे की भावना —चंदन पाल 15

क्यों अडिग हैं किसान? —अरविंद अंजुम 19

फ्लोराइड के प्रदूषण से बीमारी —जगतनारायण विश्वकर्मा 25

भूदान यज्ञ समिति के मामले में झारखंड सरकार को हाईकोर्ट की नोटिस 27

गतिविधियां और समाचार 28

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्षः45 ,संयुक्तांक : 2-3, 1-30 सितंबर 2021

अध्यक्ष
चंदन पाल

संपादक : बिमल कुमार
सहसंपादक : प्रेम प्रकाश
09453219994

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह — अरविन्द अंजुम
प्रो. सोमनाथ रोडे — अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385
E-mail : sarvodayajagat.editorial@gmail.com
sarvodayajagat@gmail.com
Website : www.sarvodayajagat.com
www.sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	10 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India, Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. झारखंड में विनोबा... 3
3. संत विनोबा का नवविचारवाद... 5
4. अनघो, विजयो, जेता, विश्व योनि... 6
5. युगांतरकारी ऋषि विनोबा... 6
6. विनोबाजी की 126वीं जयंती के बहाने... 7
7. बेगुनाह कौन है शहर में कातिल के... 8
8. जनाधार के प्रयोग और हमारे अनुभव... 9
9. राष्ट्रवाद युद्ध पैदा करता है... 11
10. अमावस्या की रात है, तारे तो... 13
11. दिल्ली विमर्श में पारित हुए तीन प्रस्ताव... 14
12. विमर्श के पीछे की भावना... 15
13. वाराणसी जिला प्रशासन द्वारा सर्व सेवा... 17
14. क्यों अड़िग है किसान आंदोलन?... 19
15. घातक है अहिंसात्मक आंदोलन की... 21
16. गरीबी एक सुविचारित परियोजना का... 22
17. कृषि क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा निजी... 23
18. आधुनिक काल के संत फादर स्टेन... 24
19. डब्ल्यूटीओ के एजेंडे से बाहर हो भारत... 25
20. फ्लोराइड और प्रदूषण से हजारों बीमार... 26
21. झारखंड सरकार को नोटिस... 27
22. गतिविधियां एवं समाचार... 28
23. पाश की तीन कविताएं... 32

संपादकीय

विनोबा की विरासत

विनोबा जी का जीवन एक साधना का उत्तरोत्तर विकास था। यह साधना अहिंसक व्यक्ति एवं अहिंसक समाज के निर्माण का यज्ञ थी। इस यज्ञ के लिए, उन्होंने आध्यात्मिक शक्ति को माध्यम बनाया। वे आध्यात्मिक ऊर्जा को व्यक्ति को उच्चतम चेतना तक ले जाने का माध्यम ही नहीं मानते थे, बल्कि समाज एवं समुदाय भी उच्च से उच्चतर सामूहिक चेतना की ओर गतिशील हो, इसका भी माध्यम मानते थे।

व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना उसके आत्मिक एवं सामाजिक गुणों का समुच्चय है। इसीलिए गांधी जी ने सत्य एवं अहिंसा की परम्परा को सगुण रूप देने के लिए एकादश व्रत पालन को अनिवार्य माना। इनमें, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शरीर श्रम, सहिष्णुता, स्वदेशी एवं नयी समाज रचना, जो सत्य एवं अहिंसा मूलक हो, की आधार शक्तियां हैं। सत्याग्रह अनुशासन की आधारशिला है। इनके अलावा ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, असंग्रह और अभय भी सर्वत्र भय वर्जन की सामाजिक स्थिति का द्योतक है। ये यूरोपीय आधुनिकता को चुनौती देने वाले मूल्य हैं। गांधीजी के बाद इस विरासत को आगे बढ़ाने का काम विनोबा जी ने किया।

सर्वोदय के अलावा विश्व के अन्य सभी क्रांतिकारी विचार इस मामले में स्पष्ट नहीं हैं कि क्रांति के माध्यम से नये नैतिक मनुष्य का निर्माण कैसे होगा। यूरोपीय आधुनिकता एवं पूंजीवाद ने जिस चयन की स्वतंत्रता (फ्रीडम ऑफ च्वाइस) का ढिंढोरा पीटा है, वह वस्तुतः भोग एवं लोभ को निर्बाध बढ़ाने की स्वतंत्रता है, जो मनुष्य को जीवन मूल्यों से दूर ले जाती है। विनोबा ने जिस अध्यात्मिक ऊर्जा को व्यक्ति व समाज परिवर्तन का माध्यम बनाया, उसमें भोग-लालसा एवं लोभ प्रेरित कर्म का स्थान नहीं होगा, तभी व्यक्ति और समाज उच्च से उच्चतर चेतना की ओर अग्रसर होंगे।

आज इस बात को रेखांकित करने की जरूरत इसलिए पड़ रही है, क्योंकि अहिंसक आंदोलन की गत्यात्मकता में भी तथा संगठन के आंतरिक गतिशास्त्र में भी, हम इन व्रतों के पालन के प्रति सजग नहीं रहते हैं। हमें सोचना होगा कि सर्वधर्म प्रार्थना की परंपरा कहीं कर्मकांड बनकर तो नहीं रह गयी है?

गांधीजी की एक अन्य परंपरा को बढ़ाने का काम विनोबा जी के नेतृत्व में ही संभव हुआ। गांधीजी की अहिंसक क्रांति द्वारा अहिंसक समाज रचना की रूपरेखा का प्रारम्भिक बिन्दु नैतिक लोकसत्ता का निर्माण था। इसलिए विनोबा के नेतृत्व में अहिंसक क्रांति के प्रति प्रतिबद्ध लोकसेवकों ने राजसत्ता से भिन्न लोकसत्ता के निर्माण तथा लोकशक्ति के माध्यम से नव सृजन के कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। इस दिशा में विनोबा जी ने जो प्रथम कदम उठाया, वह था प्रकृति प्रदत्त जीवन आधारों पर व्यक्तिगत स्वामित्व का विसर्जन। 'सबै भूमि गोपाल की' के विचार को स्वीकार करना तथा इस विचार को मूर्त रूप देना। भूदान आंदोलन, इस विचार की ही सगुण अभिव्यक्ति थी। इसी प्रकार दूसरा कदम ग्रामदान का था। ग्रामदान द्वारा यह सुनिश्चित किया गया कि भूमि का लगान व्यक्तिगत न होकर समस्त गांव का एक हो। जमीन पर सरकार गांव के स्वामित्व को स्वीकार करे, व्यक्ति के स्वामित्व को नहीं। भूदान, ग्रामदान के मार्ग को तय करते हुए, यह अभियान ग्राम स्वराज्य तक जाये तो ग्राम स्वराज्य के माध्यम से लोकसत्ता का प्रकटीकरण होगा।

इस आंदोलन का अगला कदम यह होना था कि प्राकृतिक स्रोतों एवं संसाधनों को व्यक्तिगत संपत्ति के दायरे से बाहर और साथ ही पूंजीवादी वैश्विक बाजार के दायरे से बाहर रखने का प्रयास हो। क्योंकि प्राकृतिक स्रोत व संसाधन समस्त मानव जाति (यहां तक कि सभी प्राणियों) की धरोहर है। राष्ट्र स्तर पर राजसत्ता का यह नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व होना चाहिए कि वह एक ट्रस्टी के समान इनका संरक्षण एवं संवर्द्धन करे। इसी प्रकार स्थानीय स्तर पर लोक समुदाय/ग्राम समुदाय एक ट्रस्टी के रूप में इनका उपयोग, संरक्षण एवं संवर्द्धन करे। प्रकृति प्रदत्त संसाधनों एवं श्रम, इन दोनों को बाजार के दायरे से बाहर लाकर ही अहिंसक समाज की रचना हो सकती है। औपनिवेशिक पूंजीवाद का विकास तभी संभव हुआ, जब लोक समुदाय नष्ट कर दिये गये। कारपोरेटी नव उपनिवेशवाद का नाश तभी होगा, जब लोक समुदाय पुनः नयी समाज रचना का आधार बनें। विनोबा की इसी विरासत को हमें आगे बढ़ाना है। **-बिमल कुमार**

झारखंड में विनोबा

❑ डॉ. सुखचन्द्र झा

मैं वामन बनकर जन देवता से जन देवता के लिए जमीन मांगूंगा। पोचमपल्ली में 18 अप्रैल 1951 को जब भूदान गंगा की पहली लहर फूटी, तो भावविभोर विनोबा के मुंह से यही शब्द निकले। और उसके बाद का सबकुछ इतिहास बन गया। लगभग 13000 किलोमीटर की पदयात्रा और लगभग 48 लाख एकड़ का भूदान, ग्रामदान, प्रदेशदान तक। दुनिया के किसी हिस्से में इसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती। सचमुच विनोबा वामन ही बन गये और अपने छोटे-छोटे कदमों से यह विशाल धरती नाप डाली। डॉ. सुखचन्द्र झा का नाम इतिहास के उन पन्नों पर विनोबा के सहयात्रियों में, प्रत्यक्षदर्शियों में दर्ज है। उन्हीं के शब्दों में सुनिये वह कहानी, जिसने नये-नये आजाद हुए देश के सामने एक रक्तहीन क्रांति उपस्थित कर दी। **-सं.**

सत्य, अहिंसा और रचनात्मक कार्यक्रम गांधी दर्शन के प्राणतत्त्व हैं। इन तत्त्वों का प्रयोग कर बापू ने करोड़ों देशवासियों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। फलस्वरूप हम आजाद हुए। यह आजादी सिर्फ राजनीतिक आजादी थी। सामाजिक और आर्थिक आजादी की मंजिल अभी दूर थी। इस मंजिल तक पहुंचने के लिए बापू सत्य और अहिंसा के रास्ते अपने रचनात्मक कार्यक्रमों को जन-जन तक ले जाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से फरवरी 1948 के प्रथम सप्ताह में सेवाग्राम, वर्धा में उन्होंने एक बैठक बुलाई। 29 जनवरी, 1948 को पत्र लिखकर इसका विस्तृत विवरण उन्होंने किशोरलाल मश्रूवाला को दिया, पर एक दिन बाद ही क्रूर नियति ने उनको हमसे छीन लिया। उनके निधन से पसरे विराट सन्नाटे में प्रमुख गांधीजनों की ओर से श्रीकृष्णदास जाजू ने विनोबाजी से मार्गदर्शन करने का आग्रह किया। विनोबा की विनम्र स्वीकृति थी, ''मुझसे जो बन पड़ेगा, मैं करूंगा।''

विनोबा के इस स्वीकृति सूत्र से विराट भूदान आंदोलन अनायास और आकस्मिक रूप से प्रकट हुआ। 11-14 मार्च, 1948 को गांधीजनों के सेवाग्राम, वर्धा सम्मेलन में विनोबा की पहल पर सर्वोदय समाज की स्थापना हुई। सर्वोदय समाज का तीसरा अधिवेशन शिवरामपल्ली, हैदराबाद में 8 अप्रैल 1951 को होना था। साथियों के दबावपूर्ण आग्रह पर बाबा जाने को राजी हुए, वह भी पैदल। 8 मार्च को पवनार से 315 मील पैदल चलकर 7 अप्रैल को वे शिवरामपल्ली पहुंचे। सम्मेलन समाप्ति के पश्चात 18 अप्रैल को पोचमपल्ली पहुंचे। वहां चालीस दलित परिवारों ने उनके समक्ष 80 एकड़ जमीन की मांग रख दी, ताकि वे जीविकोपार्जन कर सकें। बाबा पसोपेश में पड़ गये। फिर भी कहा, अर्जी दीजिए, हम सरकार को पेश करेंगे। अचानक उनकी वाणी वहां एकत्रित जनसमूह से पूछ बैठी, यहां कोई हैं, जो हरिजन भाइयों की मांग पूरी कर सके। तत्क्षण रामचन्द्र रेड्डी नामक सज्जन ने बाबा से 100 एकड़ भूदान स्वीकार करने की प्रार्थना की। इस अप्रत्याशित दान से बाबा भाव विभोर हो गये, आंखें नम हो गयीं। कभी शिव जटा से गंगा निकली थीं। आज विनोबा के नयनों से भूदान गंगा निःसृत हो रही थीं। उस रात वह सो न सके, पर भोर होते होते उनका जागरण संकल्प में परिवर्तित हो गया, मैं वामन बनकर जन देवता के लिए जन देवता से जमीन मांगूगा।

दिल्ली और उत्तर प्रदेश की भूदान यात्रा करते हुए विनोबा 14 सितंबर 1952 को बिहार में प्रविष्ट हुए। तब झारखंड बिहार का अंग था। बिहार में गांव-गांव घूमकर वे सर्वोदय का मर्म समझाते, भूस्वामियों से एक बटा छह हिस्सा जमीन की मांग करते और दान लेकर आगे बढ़ जाते। पटना और गया के रास्ते वह झारखंड में दाखिल हुए। डाल्टेनगंज, बेरमो, लोहरदगा; जहां भी गये अपनी वाणी से जन गण मन को जीत लिया।

चांडिल पहुंच कर बाबा मलेरिया की चपेट में आ गये। दवा लेना आवश्यक हो गया, पर बाबा ने दवा लेने से इनकार कर दिया। देश चिन्तातुर हो गया। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के तार आने लगे। बिहार के मुख्यमंत्री श्री बाबू सदेह उपस्थित हो गये। उन सबके आग्रह पर बाबा ने दवा ली और रोगमुक्त हुए। डॉक्टरों की सलाह पर उन्हें चांडिल में तीन महीनों तक रुकना पड़ा। इस प्रवास में झारखंड को सर्वोदय समाज के पंचम

चालीस दलित परिवारों ने उनके समक्ष 80 एकड़ जमीन की मांग रख दी, ताकि वे जीविकोपार्जन कर सकें। बाबा पसोपेश में पड़ गये। फिर भी कहा, अर्जी दीजिए, हम सरकार को पेश करेंगे। अचानक उनकी वाणी वहां एकत्रित जनसमूह से पूछ बैठी, यहां कोई हैं, जो हरिजन भाइयों की मांग पूरी कर सके। तत्क्षण रामचन्द्र रेड्डी नामक सज्जन ने बाबा से 100 एकड़ भूदान स्वीकार करने की प्रार्थना की। इस अप्रत्याशित दान से बाबा भाव विभोर हो गये, आंखें नम हो गयीं। कभी शिव जटा से गंगा निकली थीं। आज विनोबा के नयनों से भूदान गंगा निःसृत हो रही थीं। उस रात वह सो न सके, पर भोर होते होते उनका जागरण संकल्प में परिवर्तित हो गया, मैं वामन बनकर जन देवता के लिए जन देवता से जमीन मांगूगा।

सम्मेलन की मेजबानी का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 7-9 मार्च 1953 के इस सम्मेलन में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आर आर दिवाकर, काका कालेलकर, जयप्रकाश नारायण, जेसी कुमारप्पा, शंकरराव देव, धीरेन्द्र मजूमदार और ओडीशा के मुख्यमंत्री नवकृष्ण चौधरी सहित देश भर से करीब 2000 प्रतिनिधि उपस्थित हुए। इस अवसर पर

विनोबाजी के सारगर्भित संबोधन को 'सर्वोदय का घोषणा-पत्र' माना गया।

चांडिल सम्मेलन के उपरांत बाबा की टोली मानभूम और हजारीबाग की पदयात्रा पर निकली। तब आज का धनबाद जिला मानभूम जिले का अनुमंडल हुआ करता था। धनबाद के राजा (संभवतः झरिया राजा) ने एक लाख एक हजार एकड़ जमीन का दान किया। रामगढ़ राजा, कामख्या नारायण सिंह ने एक लाख एकड़ भूमि दान की। हजारीबाग में भूदान यात्रा कार्यक्रम की जिम्मेदारी भी राजा रामगढ़ ने निभायी। पालकोट के राजा की ओर से 44,500 एकड़ भूदान प्राप्त हुआ।

खराब तबीयत के कारण जमशेदपुर में बाबा को तीन महीनों तक रुकना पड़ा। अब उनके निवास की व्यवस्था पीडब्ल्यूडी के बंगले में की गयी। यहां भी लोग उनसे मिलने आ जाते। गांधीजी के चलते गुजरात से उनको असीम श्रद्धा थी। वह कहा करते थे, प्रत्येक गुजराती के चेहरे में मुझे बापू का दर्शन होता है। जमशेदपुर में भी उनकी भेंट जब गुजरातियों से हुई तो उन्होंने साधिकार कहा, 'आप सबकी संपत्ति तो मेरे बाप की मिलकियत है, उसपर मेरा पूरा अधिकार है, परंतु अभी तो मैं छठे हिस्से की बात करता हूं, इसलिए आप लोगों से भी संपत्तिदान में छठा हिस्सा ही लूंगा।'

भूदान के नाम पर रंका के राजा गिरिवर नारायण सिंह 13,500 एकड़ पहले ही दे चुके थे। 29 मई को जब विनोबाजी उनसे मिले तो उन्होंने महाराज बलि के सुर में कहा, आप जितना मांगेंगे, उतना दूंगा। बाबा ने कहा, आपकी समस्त बंजर भूमि और कृषि भूमि का छठा भाग। राजा साहब की सहज जिज्ञासा थी, बंजर भूमि लेकर आप क्या करेंगे? बाबा का प्रति प्रश्न, बंजर भूमि रखकर आप क्या प्राप्त करेंगे? राजा रंका ने कुल मिलाकर एक लाख दो हजार एकड़ जमीन सहर्ष विनोबार्पण कर दी। यह दान झारखंड ही नहीं, अपितु संपूर्ण भारत में सबसे बड़ा भूदान था।

18 सितंबर, 1953 को बाबा वैद्यनाथ धाम में थे। वहां के प्रधान पंडा ने उनसे मंदिर में पधारने का अनुरोध किया। बाबा इस शर्त पर मंदिर जाने को राजी हुए कि उनके साथ कुछ दलित भी जायेंगे। अगले दिन सायंकाल वह अपनी टोली के साथ शिव दर्शन के लिए चल पड़े। मंदिर परिसर में वह जैसे ही पहुंचे कि कुछ कट्टरपंथी पुजारियों ने उन पर लट्ठ प्रहार शुरू कर दिया। बाबा के शब्दों में, ''साथियों ने मुझे घेर लिया, इसलिए मारने वाले मुझ पर जो भी सीधा प्रहार करते, उसे साथी लोग झेल लेते, फिर भी यज्ञशेष के तौर पर कुछ मुझे भी चखने को मिला।'' विनोबाजी का दाहिना कान चोटिल हुआ। कई कार्यकर्ता जख्मी हुए, कुछ को तो इलाज के लिए पटना भेजना पड़ा। किन्तु बाबा ने प्रशासन से आग्रह किया कि अज्ञानी हमलावरों के खिलाफ कोई कार्रवाई न हो।

असम और पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) की यात्रा के क्रम में विनोबाजी 24 अक्टूबर 1962 को राजमहल में थे। उसी समय 20 अक्टूबर को चीन ने हमारे देश पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण से आहत बाबा ने जनता से हिम्मत और शांति बनाये रखने की अपील करते हुए कहा, ''हिमालय में हमारी सीमा पर चीन ने अकारण मारकाट शुरू कर दी है। भारत तो सदा उससे प्रेम का बर्ताव करता रहा था।

मई, 1965 में सर्व सेवा संघ, वर्धा की बैठक में बिहार के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। बाबा ने उनसे कहा कि वे छः महीनों में दस हजार ग्रामदान प्राप्त कर तूफान खड़ा करें तो जरूरत पड़ने पर वे बिहार आ सकते हैं। बिहार ने उनकी बात मान ली और वे बिहार के लिए चल पड़े। इस बार बिहार में उनकी यात्रा मोटर से हुई।

झारखंड में ग्रामदान के प्रति आदिवासी गांवों में भ्रांति फैला दी गयी। आदिवासियों के बीच स्वार्थी तत्त्वों द्वारा दुष्प्रचार किया गया कि ग्रामदान में उनकी जमीन गैर आदिवासियों को दे दी जायेगी। झारखंड पार्टी और विरसा दल द्वारा भूदान के खिलाफ पर्चाबाजी भी हुई। उन सबके बीच जाकर बाबा ने कहा कि भूदान में प्राप्त जमीन न तो गैर आदिवासियों को दी जायेगी और न ही सीएनटी ऐक्ट का उल्लंघन किया जायेगा। धीरे-धीरे जनजातीय नेताओं की शंका निर्मूल हुई। विख्यात नेता जयपाल सिंह मुंडा ने स्वयं ग्रामदान अभियान की शुरुआत की और ग्रामदान प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर भी किया। बिरसा दल के नेता खुदिया पाहन की अध्यक्षता में खूंटी अनुमंडल ग्रामदान प्राप्ति समिति का गठन हुआ। भूदान यात्रा में झारखंड से कुल 14,69,280 एकड़ जमीन की प्राप्ति हुई। इसमें 4,88,735 एकड़ भूमि भूमिहीनों, विशेषतया दलितों और आदिवासियों में वितरित की गयी।

झारखंड में विनोबाजी की तूफान यात्रा का आखिरी पड़ाव जमशेदपुर था। 19 दिसंबर को वे अपनी टोली के साथ जमशेदपुर पधारे। यहां जमशेदपुर वीमेन्स कॉलेज में उनको ठहराया गया। इसी दरम्यान प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री आये। वीमेन्स कॉलेज जाकर वे बाबा से मिले और उनके भूदान कार्यक्रम की सराहना की। खराब तबीयत के कारण जमशेदपुर में बाबा को तीन महीनों तक रुकना पड़ा। अब उनके निवास की व्यवस्था पीडब्ल्यूडी के बंगले में की गयी। यहां भी लोग उनसे मिलने आ जाते। गांधीजी के चलते गुजरात से उनको असीम श्रद्धा थी। वह कहा करते थे, प्रत्येक गुजराती के चेहरे में मुझे बापू का दर्शन होता है। जमशेदपुर में भी उनकी भेंट जब गुजरातियों से हुई तो उन्होंने साधिकार कहा, 'आप सबकी संपत्ति तो मेरे बाप की मिलकियत है, उसपर मेरा पूरा अधिकार है, परंतु अभी तो मैं छठे हिस्से की बात करता हूं, इसलिए आप लोगों से भी संपत्तिदान में छठा हिस्सा ही लूंगा।'

स्वास्थ्य में सुधार होते ही बाबा का कारवां 16 मार्च 1965 को लौह नगरी से उत्तर बिहार की ओर चल पड़ा, धरती मां से बिछुड़े बेटों को धरती मां से मिलाने के लिए। ❑

❑ *डॉ. सुखचन्द्र झा, गांधीवादी विचारक एवं कार्यकर्ता हैं और जमशेदपुर शहर में निवास करते हैं। मो. 9234432889*

संत विनोबा का नवविचारवाद, विकल्पहीनता में विकल्प की आशा

❑ डॉ. चन्द्रविजय चतुर्वेदी

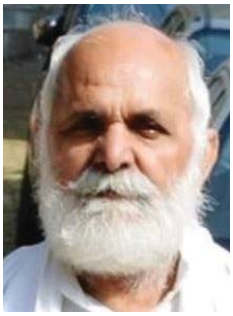

लोकतान्त्रिक राजतंत्र और वाणिज्यतंत्र के हाथों कठपुतली की तरह नाचते हुए आज का मानव एक ऐसी स्थिति में पहुँच चुका है, जहाँ वीभत्स भविष्य की आशंकाओं की आहट होने लगी है। परमाणु अस्त्रों की भयावह छाया में जहाँ युद्ध की विभीषिका होगी, शोषण की क्रूरता होगी, अराजकता का तांडव होगा, प्रदूषण की घुटन होगी, विश्रृंखलित समाज होगा और अनैतिक मूल्य होंगे। वैज्ञानिक प्रगति और सभ्यता के विकासक्रम में पूंजीवादी और साम्यवादी दोनों ही पद्धतियों से यद्यपि मानव का भौतिक स्तर ऊंचा हुआ है, परन्तु उसके नैतिक स्तर में जितनी गिरावट आती जा रही है, उतनी गिरावट पहले कभी नहीं थी।

औद्योगिक और भौतिक मूल्यों को प्रधानता देने वाली आज की वैज्ञानिक सभ्यता ने जिस समाज का संश्लेषण किया है, उसकी जीवंतता नष्टप्राय है। समाज का स्वतः विकासमान ऑर्गेनिक नेचर विलुप्त होता जा रहा है। विगत पांच दशकों से विश्व के लगभग सभी देशों में एक वैकल्पिक समाज और व्यवस्था की खोज की छटपाहट स्पष्ट दीख रही है। आज सारे विश्व के समक्ष एक गंभीर प्रश्न है, उस मानवीय संस्कृति और समाज के निर्माण का, जिससे मानवता की रक्षा हो सके।

विगत पांच दशकों के विश्व का इतिहास साक्षी है कि एक ओर औद्योगिक और भौतिक मूल्यों की संस्कृति का दुष्चक्र, दूसरी ओर वैकल्पिक संस्कृति के निर्माण की खोज की अकुलाहट भरी खीज, दिशाहीन विद्रोह, झूठ, घृणा, हिंसा पर आधारित राजनीति और वैचारिक दासता आदि ने ऐसा संशय और सम्भ्रम उत्पन्न कर दिया है, जैसा मानवीय सभ्यता के इतिहास में इसके पूर्व कभी नहीं था।

इस संशय और सम्भ्रम के निवारण की किरणें आचार्य विनोबा भावे के नवविचार के दर्शन में प्रस्फुटित होती दीख रही हैं। गाँधी के विचार और दर्शन को आध्यात्मिक और वैज्ञानिक प्रसार देने वाले भूदानयज्ञ के संत विनोबा ने लोकजीवन और उसकी व्यवस्थागत संरचना को हिंसामुक्त और जीवंत बनाने के लिए जो सिद्धांत प्रतिपादित किये, उन पर विचार मंथन आज बहुत प्रासंगिक हो गया है। विनोबा एक साथ ऋषि, संत, गुरु, कर्मयोगी और सन्यासी की भूमिका में रहे। सच्चे अर्थों में इस क्रियावान ब्रह्मज्ञानी ने उद्घोषित किया कि नये विज्ञान युग का पदार्पण हो चुका है। इसके पद की आहटों को सुनो। इस वैज्ञानिक युग में राजनीति और धर्म पंथ कालबाह्य हो चुके हैं। अब विज्ञान और अध्यात्म ही रहने वाला है। जाने के पहले राजनीति और धर्म पंथ बहुत तकलीफ देंगे। लेकिन इन्हें जाना ही है। लाख कोशिशों पर भी ये बचेंगे नहीं।

आधुनिक युग में भी सामाजिक परिवर्तन और पुनर्निर्माण के लिए दो ही शक्तियों का प्रयोग किया जा रहा है, हिंसा और दण्डशक्ति, यह हिंसा और दण्डशक्ति, चाहे राज्य की हो या धर्म पंथ की। राजनीति के दुष्चक्र में शासन कर रहे लोकतंत्र, एकतंत्र, समाजवाद और साम्यवाद ने पूरी दुनिया को एक यांत्रिक राजनैतिक तथा संवेदनहीन आर्थिक संगठन के नीचे दबा दिया है।

दुनिया ने धर्म के मूल तत्वज्ञान को समझने के बजाय धर्म पंथ को निषेध के रूप अधिक ग्रहण किया। अपनी धार्मिकता की पहचान के लिए दूसरे धर्म पंथ के निषेध की प्रवृत्ति को राजनीति ने बढ़ावा दिया, जिससे व्यक्ति और समाज नशे में चूर होता गया। धर्म और राजनीति के कुत्सित गठजोड़ से हिंसा और दंड दोनों शक्तियां मानवता की रक्षा में निष्फल साबित हो रही हैं। आवश्यकता है तीसरी शक्ति के उत्सर्जन की। ईसामसीह ने प्रेम से तथा बुद्ध, महाबीर ने अहिंसा, करुणा से समाज का पुनर्निर्माण किया। गांधी ने इसी को संश्लिष्ट करके सत्य, अहिंसा, प्रेम और सत्याग्रह को परिवर्तन का माध्यम बनाया। ब्रह्मविद विनोबा ने इसी दर्शन का विस्तार अपने नवविचारवाद में किया।

ऋषि विनोबा ने देखा कि एक छोर है- ध्यान, धारणा, समाधि, भजन, कीर्तन में डूबे रहना! यानी मोक्ष की कामना में व्यक्ति अपना चित्त शुद्ध कर रहा है। समाज का चित्त शुद्ध नहीं है, तो व्यक्ति की चित्त शुद्धि का कोई अर्थ नहीं है। प्रह्लाद ने नरसिंह भगवान से प्रार्थना की कि इन दीन जनों को छोड़कर मैं अकेले मुक्त नहीं होना चाहता। प्रह्लाद का अनुसरण करते हुए बाबा का अद्वैत चिंतन अभूतपूर्व है। वे कहते हैं कि बाबा व्यक्ति रहा ही नहीं, बाबा समूह है और समूह के नाते ही यह देह है। बाबा सामूहिक मुक्ति के पक्षधर है। बाबा के इस छोर की धारणा है कि जब तक सारी मानव जाति मुक्त नहीं हो जाती, तब तक विदेहमुक्ति की अपनी वासना को एक बाजू रखकर मैं सूक्ष्मरूप में दुनिया की सेवा करता रहूँगा।

कर्मयोगी संन्यासी की दृष्टि में दूसरा छोर है क्रान्ति का बोध। प्रकृति में परिवर्तन की गति शनैः शनैः है। मानव जाति का विकास असत से सत की ओर एक क्रियावान निरंतरता है। फ्रांस की राज्य क्रान्ति से लेकर चीन की क्रान्ति तक की परिणति अपक्रान्ति में ही रही है। बोल्शेविक क्रांति का महानायक ट्राटस्की कहता है, दी रिवोल्यूशन इज बिट्रेड। क्रांतियां हमेशा ही छली गयीं। इन दोनों छोरों को विनोबा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक परिदृष्टि से संयुक्त करके नवविचारवाद को प्रख्यापित करते हैं। **-मीडिया स्वराज**

आभार!

सर्वोदय जगत के इस अंक का प्रकाशन डॉ. विश्वजीत, उत्कल गांधी स्मारक निधि, गांधी भवन, बखराबाद, कटक-753002 (ओडिशा) के आर्थिक सहयोग से किया गया है।

इस सहयोग हेतु डॉ. विश्वजीत के प्रति सर्व सेवा संघ आभार प्रकट करता है।

अनघो, विजयो, जेता, विश्व योनि पुनर्वसु

❑ राजीव नयन बहुगुणा

11 सितंबर को भारत वर्ष के एक परम प्रतापी ऋषि विनोबा भावे का जन्मदिन है। वह गांधी के प्रथम श्रेणी के अंतेवासी, सूर्य सदृश तेजस्वी, उपनिषदों के अप्रतिम व्याख्याकार, महान स्वाधीनता सेनानी तथा युगांतरकारी ब्रह्मवेत्ता थे।

उनका बुद्धि वैचित्र्य बचपन से ही मुखरित था। रात को अध्ययन करते, जब गधों की हूक उन्हें व्यवधान डालती, तो वे स्वयं भी जोर शोर से गधों के सुर में सुर मिलाकर आवाज निकालने लगते। इस तरह उन्होंने पाया कि गधों की आवाज़ अब उन्हें व्यथित नही कर रही है। उन्होंने तब सूत्र दिया कि हम जिसका चिंतन, अनुशीलन तथा अनुगमन करते हैं, शनैः शनैः उसी की तरह हो जाते हैं। अतः नेता, डाकू, सूदखोर, गिरहकट आदि की भी बुराई मत करो। उनकी निंदा करते करते हम भी उन्हीं जैसे हो जाएंगे।

वे दिल्ली से हज़ारों मील दूर पवनार नामक एक छोटे से गांव में रहते थे। भारतीय वांग्मय के प्रचंड उद्गाता होते हुए भी उन्होंने भाषण बहुत कम दिये, बल्कि अपना अधिकांश समय कुदाल से खेत खोदने और गांव की पगडंडियों पर टट्टी साफ करने में बिताया। उन्होंने भूदान अभियान का अविष्कार कर इस देश को भीषण रक्तपात से बचाया।

वह एक प्रयोगधर्मी पुरुष थे। एक बार, सम्भवतः 6 साल की उम्र में मैं अपने माता-पिता के साथ उनके आश्रम गया। उन्होंने मेरे माता-पिता को किसी काम पर जोत दिया तथा स्वयं मेरे साथ खेलने लगे। हठात् उन्होंने एक सेब या संतरा मेरे लिए एक लकड़ी की अलमारी के ऊपर रख दिया। मेरा हाथ बहुत अभिक्रम के बाद भी उस अलमारी तक न पहुंचा, तो पल भर ठुड्डी पर हाथ रख सोचा और फिर पूरी ताकत लगाकर उस अलमारी को झकझोरा। इससे अमुक फल टप् से नीचे आन गिरा। तब बिनोबा ताली बजाकर नाचने लगे और बोले, देखो इस बच्चे ने अहिंसक बम का अविष्कार कर लिया।

गो रक्षा के प्रश्न पर तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से व्यथित होकर उन्होंने 1982 में अन्न जल त्यागकर प्राण दे दिये। ❑

युगांतरकारी ऋषि विनोबा

❑ हफीज किदवई

एक बार कहीं जाने के लिए अपने साथियों के साथ विनोबा लखनऊ आये। लखनऊ में बस स्टैण्ड पर पहुँचे। बस में ज़बरदस्त भीड़ थी। लोग ऊपर चढ़े जा रहे थे। कंडक्टर के पास जाकर उनके एक साथी ने कहा कि हम आठ दस लोग हैं, हमें भी जाना है। कंडक्टर ने कहा, यहाँ कहाँ जगह है, अगली बस से जाओ। उनके बहुत कहने पर भी कंडक्टर ने उन्हें चढ़ने नहीं दिया।

बस आगे बढ़ गयी। बस बाराबंकी पहुँचती, उससे पहले ही कंडक्टर सस्पेंड हो गये। पता चला कि उन्होंने विनोबा भावे को बस में नहीं चढ़ने दिया। अब लगे इधर उधर की सिफारिश में, मगर कोई रास्ता नहीं। महीने भर के बाद किसी ने सुझाया कि विनोबा ही तुम्हें बहाल कर सकते हैं, उन्हीं के पाँव पकड़ लो। बेचारे विनोबा के पास पहुँचे और माफ़ी तलाफ़ी की। अब विनोबा को तो पता ही नहीं कि ये क्या मामला है। पूछताछ में सहयोगियों से पूरी बात का खुलासा हुआ। सारी बात जानकर वे बेहद करुणा से भर उठे और अपने सहयोगियों के प्रति नाराजगी जाहिर की। उन्होंने तुरंत संबंधित लोगों तक संदेश भेजवाया। उसके बाद कंडक्टर साहब की उसी दिन बहाली हो गयी।

यह क़िस्सा मैंने खुद उन कंडक्टर साहब से ही सुना था। वे बताते रहे कि इतना सादा इंसान, सफ़ेद चादर, बेतरतीब सफ़ेद पीली दाढ़ी, हमें लगा कि होगा कोई गाँव का गरीब। मगर भैया, उस दिन से कान पकड़ा कि कोई भी हो, उसे झिड़कना नहीं चाहिए। विनोबा की ज़िन्दगी खुद में एक सन्देश है,बहुत कुछ सीखने के लिए। गाँधी जी की छाँव जिन पर पड़ी, उनमें विनोबा ही थे, जो लम्बे वक्त तक उन्हें जीते रहे।

विनोबा ने ज्यादातर धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया और उसे अपने शब्दों में लिखा। कुरान पर उनके सार को खूब अहमियत मिली। उनके कुरान सार के बारे में मौलाना मूसदी ने कहा कि पचीस मौलवी दस साल बैठकर और दसों लाख खर्च करके भी जो काम नहीं कर पाते, ऐसा यह काम हुआ है। जब विनोबा जी कुरान का अध्ययन कर रहे थे, तो यह बात गांधी जी को पता चली। उन्होंने कहा कि हममें से किसी को तो यह करना ही चाहिए था। विनोबा कर रहा है, यह आनंद का विषय है। कुरान के अध्ययन के बारे में विनोबा लिखते हैं कि उन्होंने सन् 1939 में कुरान शरीफ का अंग्रेजी तर्जुमा देखा था, लेकिन उससे संतोष नहीं हुआ। विनोबा जी ने अरबी भाषा सीखकर पूरा कुरान सात बार पढ़ा। कम से कम 20 साल उसका अध्ययन किया। दूसरे मज़हब को इतना कौन पढ़ता है!

विनोबा हर तरह के धर्मों के अध्ययन के अपने अनुभव के बारे में लिखते हैं, 'मैंने जितनी श्रद्धा से हिंदू-धर्मग्रंथों का अध्ययन किया, उतनी ही श्रद्धा से कुरान का भी किया। गीता पाठ करते समय मेरी आँखों में अश्रु भर जाते हैं, वैसे ही कुरान और बाइबिल का पाठ करते समय भी होता है, क्योंकि सबमें मूल तत्व का ही वर्णन है। खैर विनोबा सारे रास्ते दिखा ही गए हैं। आज उनके जन्मदिन पर जिसे वह रास्ता दिखाई दे, वह बढ़ चले। बाकि लोगों का क्या है,वह मस्त रहें, मौज करें, क्योंकि विनोबा, उनके गुरु और साथी नींव तो डालकर इमारत खड़ी कर गये हैं। हम चाहे उसे चमकायें या खण्डहर बनाएँ। ❑

विनोबाजी की 126वीं जयंती के बहाने

❑ सुरेश खैरनार

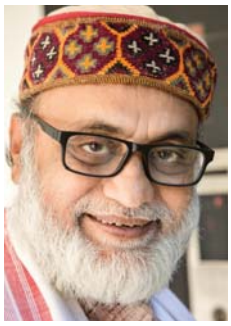

जेपी आंदोलन में विनोबा जी की भूमिका को लेकर मैं उनसे बेहद नाराज था। लेकिन 'गाँधी अब नहीं रहे, आगे क्या?' गोपाल कृष्ण गांधी द्वारा संम्पादित की हुई यह किताब पढ़ने के बाद मेरे मन से वह नाराजगी एकदम खत्म हो गयी।

गाँधीजी की हत्या के छः सप्ताह बाद सेवाग्राम में 1948 के मार्च महीने में 11 से 14 तारीख तक एक बैठक हुई थी, जिसमें नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जेपी, तुकड़ोजी महाराज, कृपलानी, डॉ. जाकिर हुसैन, दादा धर्माधिकारी तथा स्वयं विनोबा जी भी शामिल थे। इसी बैठक में सर्व सेवा संघ की स्थापना हुई थी। डॉ. राम मनोहर लोहिया बैठक में नहीं शामिल हो सके, इसका अफसोस गोपाल कृष्ण गांधी ने किताब की प्रस्तावना में विशेष रूप से लिखा है। बैठक का इतिवृत्त दादा धर्माधिकारी ने लिखा है।

उस बैठक में विनोबा जी बोले कि मैं उस प्रदेश का हूँ, जिसमें आरएसएस का जन्म हुआ है। जाति छोडकर बैठा हूँ, फिर भी भूल नहीं पाता कि मैं उसकी जाति का हूँ, जिसके द्वारा बापू की हत्या हुई। कुमारप्पा जी और कृपलानी जी ने फौजी बंदोबस्त के खिलाफ परसों सख्त बातें कहीं। मैं चुप बैठा रहा। वे दुख के साथ बोलते थे। मैं दुख के साथ चुप था। न बोलने वाले का दुख जाहिर नहीं होता। मैं इसलिए नहीं बोला कि मुझे दुख के साथ लज्जा भी थी। पवनार में मै बरसों से रह रहा हूँ। वहाँ पर भी चार-पांच आदमियों को गिरफ्तार किया गया है। बापू की हत्या से किसी न किसी तरह का संबंध होने का उन पर शुबाह है। वर्धा में भी गिरफ्तारियां हुईं, नागपुर में भी हुईं, जगह-जगह हो रही हैं।

आरएसएस का संगठन इतने बड़े पैमाने पर बडी कुशलता के साथ फैलाया गया है। इसके मूल बहुत गहरे पहुंच चुके हैं। यह संगठन ठीक फासिस्ट ढंग का है। उसमें महाराष्ट्र की बुद्धि का प्रधानतया उपयोग हुआ है। चाहे वह पंजाब में काम करता हो या मद्रास में, सब प्रांतों में उसके सालार और मुख्य संचालक अक्सर महाराष्ट्रीय और अक्सर ब्राम्हण रहे हैं। गोलवलकर गुरूजी भी महाराष्ट्र के ब्राह्मण हैं। इस संगठन वाले दूसरों को विश्वास में नहीं लेते। गाँधी जी का नियम सत्य का था। मालूम होता है कि इनका नियम असत्य का होना चाहिए। यह असत्य उनकी

टेकनीक, उनके तंत्र और उनकी फिलासफी का हिस्सा है!

एक धार्मिक अखबार में मैंने गुरूजी का एक लेख या भाषण पढ़ा। उसमें लिखा था कि हिंदू धर्म का उत्तम आदर्श अर्जुन है, उसे अपने गुरुजनों के लिए आदर और प्रेम था, उसने गुरूजनों को प्रणाम किया और उनकी हत्या की, इस प्रकार की हत्या जो कर सकता है, वह स्थित-प्रज्ञ है। वे लोग गीता के मुझसे कम उपासक नहीं है। वे गीता को उतनी ही श्रद्धा से पढ़ते होंगे, जितनी श्रद्धा मेरे मन में है। मनुष्य यदि पूज्य गुरुजनों की हत्या कर सके तो वह स्थित-प्रज्ञ होता है, यह उनकी गीता का तात्पर्य है। बेचारी गीता का इस प्रकार उपयोग होता है। मतलब यह कि यह सिर्फ दंगा-फसाद करने वाले उपद्रवकारियों की जमात नहीं है। यह फिलासाफरों की जमात भी है। उनका एक तत्वज्ञान है और उसके अनुसार निश्चय के साथ वे काम करते हैं। धर्मग्रंथों का अर्थ करने की भी उनकी अपनी एक खास पद्धति है।

गांधी जी की हत्या के बाद महाराष्ट्र की कुछ अजीब हालत है। यहाँ सब कुछ अत्यांतिक रूप में होता है। गाँधी हत्या के बाद गांधी वालों के नाम पर जनता की तरफ से वैसी ही प्रतिक्रिया हुई है, जैसी पंजाब में पाकिस्तान के निर्माण के वक्त हुई थी। नागपुर से लेकर कोल्हापुर तक भयानक प्रतिक्रिया हुई है। साने गुरूजी ने मुझे आवाहन किया है कि मैं महाराष्ट्र में घूमूं। जो पवनार को भी नहीं सम्हाल सका, वर्धा-नागपुर के लोगों पर असर न डाल सका, वह महाराष्ट्र में घूमकर क्या करता? मै चुप बैठा रहा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हमारी कार्यप्रणाली में हमेशा विरोध रहा है। जब हम जेल मे जाते थे, उस वक्त उनकी नीति फौज और पुलिस में दाखिल होने की थी। जहाँ हिंदू-मुसलमानों का झगड़ा खडा होने की आशंका होती, वहां वे पहुँच जाते। उस वक्त की सरकार इन सब बातों को अपने फायदे की समझती थी। इसलिए उसने भी उनको उत्तेजन दिया। नतीजा हमको भुगतना पड़ रहा है। आज की परिस्थिति में मुख्य जिम्मेदारी मेरी है। महाराष्ट्र के लोगों की है। यह संगठन महाराष्ट्र में पैदा हुआ है। महाराष्ट्र के लोग ही उसकी जड़ों तक पहुँच सकते हैं। इसलिए आप मुझे सूचना करें, मैं अपना दिमाग साफ रखूंगा और अपने तरीके से काम करूँगा। मैं किसी कमिटी में कमिट नहीं हूंगा। आरएसएस से भिन्न, गहरे और दृढ़ विचार रखने वाले सभी

लोगों की मदद लूंगा। जो इस विचार पर खड़े हों कि हम सिर्फ शुद्ध साधनों से काम लेंगे, उन सब की मदद लूंगा। हमारा साधन-शुद्धि का मोर्चा बने। उसमें सोशलिस्ट भी आ सकते हैं और दूसरे सभी आ सकते हैं। हमको ऐसे लोगों की जरूरत है, जो अपने को इन्सान समझते हैं।

आचार्य विनोबा भावे आज से 73 साल पहले आरएसएस के बारे में कितने साफ थे! अपने आप को उनका अनुयायी कहने वाले लोगों को विनोबा जी की 126 वीं जयंती के बहाने आज समझने की जरूरत है। क्योंकि मेरे व्यक्तिगत अनुभव के बाद गाँधीवादी और विनोबा जी को मानने वाले लोगों में काफी गफ़लत लगती है। हिंदुत्व के वर्तमान प्रचार-प्रसार में कुछ लोगों को एक तो मैं बिल्कुल ही मौन देख रहा हूँ, और कुछ सीधे-सीधे हिंदुत्ववादी कैम्प में शामिल हो गए हैं। ये लोग महात्मा गाँधी या विनोबा जी के बारे मे सुविधाजनक अर्थ निकाल कर पाला पलट कर बैठ गये हैं।

विनोबा जी की जयंती के बहाने उन्हें सही मायनों में समझने की और उस पर अमल करने की जरूरत है। मैं गत एक सप्ताह से असम में हूँ। यहाँ पर भी संघ परिवार के कई तरह के काम चल रहे हैं और उधर विनोबाजी, गाँधीजी की संस्थाओं का काम आखिरी साँस लेता नजर आ रहा है। हमें संकल्प करना चाहिए कि संघ परिवार के खिलाफ जिस मोर्चे की बात विनोबा जी ने की थी, आज उस बात को 73 साल हो चुके हैं, लेकिन उस पर चलना तो दूर, हम लोग सिर्फ अपने रोजमर्रा के कर्मकांड में व्यस्त हैं। अभी भी समय है, हमें विनोबा जी की बात को अमली जामा पहनाने के लिए लग जाना चाहिए, क्योंकि कश्मीर, नॉर्थ ईस्ट, 5वीं और 6ठीं अनुसूची, आदिवासियों के लिए जो विशेष प्रावधान हमारे संविधान निर्माताओं ने बनाये हैं, वह सब कुछ बदलने की शुरुआत हो चुकी है। हम लोगों को विनोबा जी की भाषा में एक मोर्चा खोलने की शुरुआत करनी चाहिए, यही विनोबा जी और गाँधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। ❑

बेगुनाह कौन है शहर में कातिल के सिवा!

❑ मनोहर नायक

यह पांच सितम्बर 2021 का ऐतिहासिक दिन था। किसी चुनावी फ़तह का यक़ीन देता दिन नहीं, ज़ालिमों से लम्बी लड़ाई लड़ने के संकल्प का दिन। अपनी ताक़त की याद आने, याद दिलाने का दिन। विभाजनों को पाटने, साम्प्रदायिकता को पटकने का दिन। एकजुटता का दिन! यह देश को संदेश और उद्देश्य देने का दिन था। यह एक तरह से देश को उजाड़ कर रहे लोगों को हरे-भरे खेतों की ओर से चेतावनी का दिन था। एक पंचायत को लेकर इसे अनाप-शनाप कयासबाज़ी मानने की ग़लती न कर बैठियेगा। ज़रा ग़ौर करिये, पलटकर उस राह पर नज़र डालिये, जिससे होकर यह गहमागहमी और यह संकल्प यहाँ तक पहुँचा है और आगे बढ़ने को सन्नद्ध है। इस राह में यातनाएं हैं, बेशुमार तक़लीफ़ें हैं, मौसम की मार है, प्रशासन की प्रताड़ना हैं, कराहें हैं, ख़ून-पसीना है, गहरी वेदना से उपजे आंसू हैं और जान की बाज़ी लगा देने वाले शहीद हैं। इतने ज़ोखिमों के बाद यह मुक़ाम हासिल हुआ है। एक बड़ा लक्ष्य मिला है। तीन कृषि क़ानूनों की लड़ाई का फ़लक व्यापक होकर अब देश बचाओ की जंग में बदल गया है। इसी के लिए उस भाईचारे, एकता और हौसले की दरकार थी, जिसके मुजफ्फरनगर में दर्शन हुए और लाखों किसान-मज़दूर इसके साक्षी बने। पांच सितम्बर को हमारे किसान हमारे शिक्षक भी हो गये। कितना कड़ा और कठिन रास्ता इस शुरुआती सफलता के लिए तय किया गया, यह याद रखा जाना चाहिए।

यही मुज़फ्फरनगर था, जहाँ 2013 में दंगे करवा दिये गये थे। आम चुनाव नज़दीक थे। चुनावी फ़सल काटने के लिए, पहले से कटे-बंटे समाज में दरारें और चौड़ी व गहरी करने के लिए दंगों का षड्यंत्रकारी आयोजन किया गया था। इसबार फिर वही मुज़फ्फरनगर था, पर फिजां बदली हुई थी, वहां दिखायी दे रही रंग-बिरंगी एकता, विभोर करने वाली और ख़ुशी से भर देने वाली थी। यह एकता ही उन लोगों को डराने वाली है, जिन्होंने सालों साल जतन से इसे खंडित किया था और अब जो लोग विभाजन की विभीषिका को याद कराने के अपने आततायी अभियान पर लोलुप आंखे गड़ाये बैठे हैं। बेशक, कोई अंतिम बात अभी कैसे कही जा सकती है। आगे की रणनीति पर, जनता को अधिकाधिक जोड़ने पर बहुत कुछ निर्भर है, फिर जिनसे पाला पड़ा है, वे धूर्त, शातिर, क्रूर और संगदिल लोग हैं। निस्संदेह आज की मंजिल, आज का हासिल, यही एकजुटता और संघर्ष-भावना है। इसने बड़ी उम्मीद बंधायी है। अंधेरों में कुछ रोशनी जगमगायी है।

मुज़फ्फ़रनगर ने जो उम्मीद जगायी है, उसे प्रचारित-प्रसारित करना, प्राणप्रण से जुटने का काम है। सात सालों में देश की दुर्दशा हुई हैं, लोकतांत्रिक-संवैधानिक व्यवस्थाएं बुरी तरह ध्वस्त की गयीं हैं, देश के गृहमंत्री तो लोकतंत्र को महज़ क़ानून-व्यवस्था का मामला मानते हैं और देश की क़ानून-व्यवस्था की हालत किससे छुपी हुई है! बेगुनाह कौन है शहर में क़ातिल के सिवा! उम्मीद के बिना नहीं जिया जा सकता। मुज़फ्फ़रनगर में उम्मीद दिखी तो लगा कि जिनके हाथों की हरारत से फ़सलें लहलहाती हैं, उनके हाथों और दिलों की गर्मी, देश को एक बड़ी मुक्ति की राह पर ले जायेगी। हालांकि दंगों, बाबरी विध्वंस, गुजरात-2002, कट्टर साम्प्रदायिकता के अनुभव और खटके थे, पर जनता को नयी उम्मीद चाहिए थी और उसने उन पर भरोसा किया, जिन्होंने हर तरह से साबित किया कि वे भरोसे के कहीं से भी क़ाबिल नहीं हैं। इनके साथ बीते समय के अनुभव भयावह हैं और आगे इनके इरादे गहन व संगीन हैं। यह लगता नहीं था कि ये इतने संवेदनशून्य, निर्दयी, बेपरवाह और अमानुष हैं, पर इस देश के किसान-मज़दूरों ने भी बताया कि वे किस मिट्टी के जाये हैं। धैर्य, सहनशीलता और शक्ति उनमें किस तरह कूट-कूट कर भरी है। मुज़फ़्फ़रनगर से निकली आशामयी किरणें हृदय को आलोकित किये हुए हैं।

-मीडिया विजिल

जनाधार के प्रयोग और हमारे अनुभव

❑ धीरेन्द्र मजूमदार

कहते हैं कि भारत की आत्मा भारत के गांवों में बसती है। गांव के जीवन और विकास का सिरदर्द वास्तविक अर्थों में हमारी सरकारों ने कभी पाला ही नहीं। यह काम नागर चरित्र के बस का है भी नहीं। आचार्य विनोबा, धीरेन्द्र मजूमदार और आचार्य राममूर्ति जैसे कर्मयोगियों ने अपने जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों से ग्राम्य अभियंत्रण के लगभग सारे ही पृष्ठ पढ़ डाले थे और इसीलिए वे ग्रामीण जीवन और विकास के अद्‌भुत शिल्पी हुए। धीरेन दा का संपूर्ण जीवन क्रांति के चिन्तन और प्रयोग में बीता। क्रान्ति या क्रान्तिशास्त्र की रूढ़ राजनैतिक व्याख्याओं से सर्वथा भिन्न एक नयी, समन्वयकारी और अहिंसक व्याख्या करते हुए वे जनाधारित और श्रमाधारित जीवन के पक्ष में खड़े होते हैं। इस नजरिये से ग्राम्य जीवन के उनके दैनन्दिन अनुभवों से गुजरना, क्रान्ति के व्यावहारिक धरातल से गुजरना है। **- सं.**

आज काम करने की हमारी दृष्टि ऐसी बन गयी है कि हम जहां काम शुरू करते हैं, वहां अपने पास जितनी प्रवृत्तियां हैं, वे सब जल्दी खड़ी हो जायें, यह देखना चाहते हैं। अतः जहां कहीं थोड़ी भी अनुकूलता देखते हैं, वहां अपनी सारी योजनाओं को इस कदर भर देते हैं कि वे समाज-जीवन में न घुलकर, गांव के अंदर एक टीले का रूप ले लेती हैं। फिर गांव की आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक शक्ति से परे होने के कारण गांव वाले उन्हें पचा नहीं पाते हैं, फलस्वरूप उन प्रवृत्तियों को पालने की जिम्मेदारी लेने के बजाय, गांव के कुछ लोग उन्हीं के द्वारा अपने पालन का छोर खोजने लगते हैं।

हम कहते तो हैं कि विकास के काम में हमारी दृष्टि परिस्थितिमूलक होनी चाहिए। हमारा 'अप्रोच' 'मार्जिनल' होना चाहिए। लेकिन जब हम ग्राम-निर्माण की योजना बनाते हैं, तो प्रधान केन्द्र में बैठकर अपने-आप योजना बनाकर देहातों में भेज देते हैं। परिस्थिति क्या है, 'मार्जिन' कहां है, इसकी खोज नहीं करते और न उस 'मार्जिन' को देखकर योजनाओं का कदम-दर-कदम का सिलसिला आंकते हैं। ग्रामदानी गांव में भी हमारी प्रक्रिया यही होती है। नतीजा यह होता है कि हमारे पहुंचने से पहले गांव के लोगों में अपने से जो कुछ करने की भावना रहती है, वह भी समाप्त हो गयी होती है। आज हम खादी और ग्रामोद्योग के काम में नये मोड़ की जो बात करते हैं, उसमें भी हमारी दृष्टि उसी प्रकार की होती है। साधना केन्द्र, काशी में ग्राम-इकाई विद्यालयों के आचार्य, ग्राम-इकाइयों के संगठक तथा कुछ प्रांतों के मुख्य व्यक्तियों की गोष्ठी हुई थी। उस गोष्ठी में काफी अच्छी-अच्छी बातें रखी गयीं। लक्ष्य आदि के बारे में काफी बुनियादी बातें रखी गयीं, लेकिन जब मैंने प्रस्ताव रखा कि बाहरी मदद पहुंचाने से पहले गांव के लोग सामूहिक त्याग द्वारा कुछ पूंजी निर्माण करें तथा उस पूंजी का निर्माण के सिलसिले में कुछ अपना संगठन और नेतृत्व निरपेक्ष रूप में खड़ा करें, साथ-साथ यह भी सुझाया कि इसके लिए कुछ निश्चित स्वरूप भी मुकर्रर किया जाय, जो कई विकल्पों में से एक हो सकता है, तब यह बात मैं किसी से मनवा न सका। इससे स्पष्ट दीखता है कि हमारा मानस कहां है?

पिछले कुछ दिनों से विनोबाजी आंदोलन के कुछ बुनियादी तत्त्वों तथा कार्यक्रमों पर जोर दे रहे हैं, तो साथियों की आम टीका यह होती है कि विनोबाजी निर्माण-कार्य को महत्त्व नहीं देते हैं। असम में उनके सान्निध्य में प्रबंध-समिति की पिछले दिनों बैठक रखी गयी थी, तो उन्होंने निर्माण-कार्य के बारे में अपनी दृष्टि स्पष्ट की थी। उस समय उन्होंने यह कहा था कि वे निर्माण कार्य का महत्त्व कम नहीं समझते हैं। वे रेल-यात्रा में रेलगाड़ी का जो स्थान है, वही स्थान क्रांति-यात्रा में निर्माण-कार्य को भी देते हैं। लेकिन बिना पटरी बनाये रेलगाड़ी खड़ी कर देने से जिस प्रकार रेल यात्रा संभव नहीं है, उसी तरह वैचारिक संदर्भ में मानवीय तत्त्वों की पटरी बिछाये बिना निर्माण कार्य खड़ा कर देने से क्रांति यात्रा संभव नहीं है। यह बात हमें ठीक से समझ लेनी चाहिए। सर्व सेवा संघ तथा सर्वोदय के कार्यकर्ताओं को विनोबाजी के इस संकेत पर गंभीर विचार करना चाहिए, नहीं तो हमारा अपना पुरुषार्थ अपनी क्रांति को दफना दे सकता है।

ग्राम भावना : बलिया के लोगों ने आजादी के आंदोलन में सचेतन भाग लिया था,

> ***खुद धर्म करके स्वर्ग जाने के बजाय दान और दक्षिणा देकर उसके लिए भी 'एजेण्ट' मुकर्रर कर दिये गये। जिस जगह की जनता 'एजेण्टों' की हिदायत ठीक से मानती है, वहां लोकतंत्र ठीक है, ऐसा समझा गया। आज भी हमारे नेता इस बात की शिकायत करते हैं कि योजनाओं में जनता का सहायोग नहीं है, क्योंकि सिरदर्द सरकार का और सहकार जनता का, ऐसी मान्यता रूढ़ हो चुकी है। फलस्वरूप इस देश के लोकतंत्र का लोक कहता है, ''यह कैसा स्वराज्य है? इससे तो अंग्रेजी राज्य अच्छा था।'' और तंत्र कहता है, ''यह कैसा लोक है? इसके लिए इतना किया जाता है, लेकिन इसका सहकार नहीं है।''***

और उसके फलस्वरूप उन गांवों के लोगों में कुछ चेतना दिखायी देती है। उसी चेतना के कारण वहां के लोगों ने अपने-आप आसपास के गांवों को संगठित कर अपनी ताकत से एक आश्रम खोला था। हमारी योजनाओं को इस गांव में केन्द्रित

करने की यह एक अनुकूलता थी, लेकिन इस अनुकूलता के दर्शन मात्र से ही हमने बाहर से आर्थिक साधनों का तांता लगा दिया और वहां पर जितने भावनाशील युवक थे, उन्हें अपने संगठनों में वैतनिक सेवक के रूप में भर्ती करने लगे। फलस्वरूप आज उस गांव में कोई-न-कोई योजना बनाकर बाहर से कुछ पा जाने की आकांक्षा बहुत तीव्र हो गयी है। मैं भी शुरुआत में इस आकांक्षा का शिकार बना। लेकिन जैसे ही मुझे इस आकांक्षा का पता चला, इसके पीछे वहां की जनता की ग्राम भावना के अस्तित्व को देखा, तो नयी आकांक्षा को लांघकर पुरानी भावना को कैसे उभारा जाय, इसका छोर खोजने लगा।

लोकनीति बनाम राजनीति : इसके लिए पहला काम यह किया कि योजनापूर्वक गांव के लोग सारा कार्य अपने अभिक्रम से स्वयं करें। नरेन्द्र भाई से कहा कि ये लोग जो बैठक करते हैं, उसमें भी हम लोगों को नहीं जाना चाहिए। मैंने उन्हें समझाया कि जनाधार का मतलब इतना ही नहीं है कि कार्यकर्ताओं के गुजारे की व्यवस्था सीधे जनता की ओर से हो, बल्कि सारे काम की योजना का नेतृत्व तथा उसके लिए फिक्र उनको हो। कार्यकर्ताओं का काम केवल शिक्षण का होना चाहिए। वह नेता नहीं होगा, व्यवस्थापक नहीं होगा। नरेन्द्र ने एक दिन कहा, मैंने अब जनाधार का मतलब ठीक से समझ लिया है। सवाल, सिरदर्द किसका हो यह है, कार्यकर्ता का या गांव वालों का?

मैंने कहा, ''तुमने ठीक समझ लिया है। राजनीति और लोकनीति में इतना ही फर्क है। जिसका सिरदर्द होगा वही न नीति तय करेगा? अगर समस्याओं के लिए सिरदर्द राज्य का है, तो वह राजनीति है, और वह सिरदर्द सीधे लोगों का है, तो वह लोकनीति है।''

वस्तुतः आज तक समाज ने दर्द के लिए अलग से कुछ सिर मुकर्रर करके निश्चिन्तता रखी और उनके गुजारे का इंतजाम कर दिया। यहां तक कि खुद धर्म करके स्वर्ग जाने के बजाय दान और दक्षिणा देकर उसके लिए भी 'एजेण्ट' मुकर्रर कर दिये गये। जिस जगह की जनता 'एजेण्टों' की हिदायत ठीक से मानती है, वहां लोकतंत्र ठीक है, ऐसा समझा गया। आज भी हमारे नेता इस बात की शिकायत करते हैं कि योजनाओं में जनता का सहायोग नहीं है, क्योंकि सिरदर्द सरकार का और सहकार जनता का, ऐसी मान्यता रूढ़ हो चुकी है। फलस्वरूप इस देश के लोकतंत्र का लोक कहता है, ''यह कैसा स्वराज्य है? इससे तो अंग्रेजी राज्य अच्छा था।'' और तंत्र कहता है, ''यह कैसा लोक है? इसके लिए इतना किया जाता है, लेकिन इसका सहकार नहीं है।''

मैंने बलिया में कोशिश की कि वहां की जनता यह समझे कि धीरेन्द्र भाई के मार्फत बाहर से साधन नहीं आयेंगे। इतना ही नहीं, बल्कि धीरेन्द्र भाई खुद कुछ उनके लिए कर देंगे, इसकी भी आशा नहीं है, ऐसा समझें। मतलब यह कि धीरेन्द्र भाई तो रास्ता बतायेंगे और करना सब उनको है, ऐसा वे महसूस करें। इस दृष्टि से सहकारी खेती की व्यवस्था वे ही करें, ऐसी शर्त रखी थी। जमीन के मालिक अपने हिस्से की जमीन दें, इसके लिए भी सबके पास वे ही जायें और मेहनत के मालिक सप्ताह में एक दिन की मेहनत दें, इसका भी संगठन वे ही लोग करें। उन्होंने उत्साहपूर्वक यह सब किया भी।

अनोखा ढंग : जैसा कि मैंने बताया है, ग्रामवासियों के उत्साह का कारण केवल लोभ नहीं था, ग्राम-भावना भी थी। लेकिन एक तीसरा कारण यह भी था कि मेरा ढंग इतना अनोखा था कि उसके प्रति वे आश्चर्य के साथ आकृष्ट हुए थे। आज तक ऐसी बात उनसे किसी ने की नहीं थी। इसीलिए इसे करके देखने का उत्साह भी काफी जगा। शुरू-शुरू में हर टोली के मजदूर वर्ग ने अपने-अपने निर्दिष्ट दिन पर आकर खेत तैयार किया। जमीन के मालिक लोगों ने जमीन पर जाकर काफी देखभाल की, अपने पास के बीज देकर अच्छी तरह बोआई भी कर दी। लेकिन बोआई के बाद जब खेत में कोई काम नहीं रहा, तो पहले वाला जोश कुछ ठंडा पड़ने लगा। खेत में काम न रहने की अवधि उस साल इसलिए भी बढ़ गयी कि लगातार वर्षा होने के कारण समय पर मकई की गोड़ाई और कमाई के लिए काफी दिन तक मौका नहीं मिल सका। बाद में जब धूप होने के कारण मौका मिला, तो समय काफी बीत गया था। इस तरह गांव वालों के सामने दो समस्याएं खड़ी हुईं : एक तो देरी होने के कारण सबकी अपनी-अपनी व्यक्तिगत खेती की फिक्र, तथा दूसरी यह कि इतने दिनों तक कोई काम न रहने के कारण शुरू का उत्साह ठंडा पड़ जाने से श्रम-सदस्यों की टोली को पुनः संगठित करना संभव नहीं हो रहा था। अतः वातावरण में कुछ मायूसी दिखायी देने लगी। काफी दिनों तक न मैंने कुछ कहा और न नरेन्द्र भाई को कुछ कहने दिया। हम लोगों ने अपने लिए जो एक एकड़ की खेती रख ली थी, उसमें नियमित श्रम करने में लगे रहे। *('क्रांति : प्रयोग और चिन्तन)*

कुछ नया होने का अहसास है सर्वोदय

रचनात्मक पुरोधा धीरेन्द्र मजूमदार की जयंती के दिन 10 सितंबर को दिल्ली में विमर्श प्रारंभ हुआ। यह प्रारंभ एक अनवरत प्रवाह में बदलना चाहिए। प्रवाह में नयापन होता है, ताजगी होती है। सर्वोदय भी इसी नयेपन के अहसास को व्यक्त करता है और आज हम उसी नयेपन को महसूस कर रहे हैं, यह बड़ी बात है। धीरेन दा कहते थे कि ''संगठन में जब संग खत्म हो जाता है, तब सिर्फ ठन-ठन बचता है।'' अर्थात् साथीपन के बिना संगठन निष्प्राण हो जाता है। सर्वोदय आंदोलन का भूदान, मनुष्य के सद्गुणों को जगाकर शक्ति खड़ी करने की एक अहिंसक प्रक्रिया थी और सर्व सेवा संघ अहिंसक लोकशिक्षण प्रकट करने का माध्यम है। सर्वोदय में प्रचारक नहीं, साधक होते हैं। धीरेन दा भी एक अनन्य साधक थे। मैं जब उनसे मिला तो लगा कि अब इनके साथ ही हो जाना चाहिए। हम सब तो कमजोर लोग हैं, साधारण हैं, पर धीरेन दा जैसों का सान्निध्य तथा स्मृति हमें मजबूत बनाती है, दिशा प्रदान करती है। मैं उन कर्मवीर को नमन करता हूं।

-रामचन्द्र राही

राष्ट्रवाद युद्ध पैदा करता है

❑ जे. कृष्णमूर्ति

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपना शिक्षक भी है और शिष्य भी, यह कहने वाले जद्दू कृष्णमूर्ति बाह्य तथा आंतरिक जगत को ध्यान से देखने, सुनने और समझने का सदैव आमंत्रण देते रहे। लगभग साठ वर्षों तक मानव जाति में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता के बारे में बात करते हुए वे पूरी दुनिया की यात्रा करते रहे। यह दुनिया जैसी है, उससे बेहतर हो सकती है, यह विश्वास मन में लिये उस वैकल्पिक दुनिया की तलाश व निर्माण में सतत लगे रहे कृष्णमूर्ति, अपनी अनुभवजन्य शिक्षाओं को अपने उद्देश्यों और संवादों के जरिये मुक्त कंठ से बांटते रहे। इस सिलसिले में उनके विचारों का संग्रहीत रूप है कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य'। इसी पुस्तक का एक अंश यहां सर्वोदय जगत के पाठकों के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। **- सं.**

स्वयं की गहरी समझ से शुरू होने वाली शांति के लिए सरकारों पर निर्भर करना, संगठनों और सत्ताधिकारियों से आशा करना और अधिक व्यापक द्वंद्व को पैदा करना है; और मनुष्यों के परस्पर संघर्ष तथा वैमनस्य से भरी हुई समाज व्यवस्था को जब तक हम स्वीकार करते रहेंगे, तब तक स्थाई खुशहाली संभव नहीं हो सकेगी। यदि हम वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन चाहते हैं तो हमें पहले अपने में परिवर्तन लाना होगा। यानी हमें प्रतिदिन के जीवन में अपनी क्रियाओं, विचारों और भावनाओं के प्रति जागरूक होना होगा।

परंतु वास्तव में हम शांति चाहते ही नहीं, हम शोषण का अंत भी नहीं करना चाहते। हम नहीं चाहते कि हमारी लोलुपता में कोई बाधा पड़े या वर्तमान सामाजिक ढांचे के आधारों में परिवर्तन किया जाये; हम चाहते हैं कि वस्तुएं जैसी हैं वैसी ही, केवल सतही परिवर्तन के साथ, बनी रहें। निश्चय ही इसी कारण शक्तिशाली और धूर्त व्यक्ति हमारे पर शासन करते रहते हैं।

शांति किसी विचार प्रणाली से नहीं पैदा होती, वह कानून पर आश्रित नहीं होती; वह तभी संभव होती है, जब व्यक्ति के रूप में हम स्वयं अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने लगते हैं। शांति स्थापित करने के लिए यदि हम व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के अपने दायित्व से बचकर किसी नयी समाज व्यवस्था की प्रतीक्षा करेंगे, तो हम उस व्यवस्था के केवल दास बनकर रह जायेंगे।

जब सरकारें, अधिनायक, बड़े व्यापारी एवं शक्तिशाली पंडित-पादरी यह देखने लगते हैं कि मनुष्यों के बीच निरंतर बढ़ने वाले संघर्ष से केवल बेइंतहा तबाही होती है और इसलिए वह उनके लिए लाभदायक नहीं रह गया है तो वे कानून अथवा दबाव के दूसरे साधनों के द्वारा हमें अपनी व्यक्तिगत वासनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं का दमन करने तथा मानव मात्र के कल्याण हेतु सहयोग करने के लिए बाध्य कर सकते हैं। जैसे आज हमें प्रतिद्वंद्वी तथा निष्ठुर बनने के लिए शिक्षित एवं प्रोत्साहित किया जाता है, उसी प्रकार तब एक-दूसरे का आदर करने के लिए एवं समस्त विश्व के निमित्त कार्य करने के लिए हमें बाध्य किया जायेगा।

उस अवस्था में चाहे हम सभी को अच्छा भोजन, कपड़ा और आवास मिले, परंतु हम अपने द्वंद्वों और संघर्षों से मुक्त नहीं हो पायेंगे। वे द्वंद्व एवं संघर्ष केवल एक स्तर से हटकर दूसरे स्तर पर चले जायेंगे, जहां वे कहीं अधिक राक्षसी और विनाशकारी होंगे। केवल स्वैच्छिक कार्य ही नैतिक और उचित कार्य होते हैं और केवल बोध ही मनुष्य के लिए शांति और सुख ला सकता है।

विश्वास, विचारधाराएं तथा संगठित धर्म हमारी अपने पड़ोसियों के साथ दुश्मनी पैदा करते हैं; संघर्ष केवल विभिन्न समाजों में ही नहीं, बल्कि एक ही समाज के विभिन्न समूहों में भी होता है। हमें यह समझना चाहिए कि जब तक किसी देश के साथ हम अपना तादात्म्य किये हुए हैं, जब तक हम सुरक्षा से चिपके हैं, जब तक हम धर्म-मतों से संस्कारबद्ध हैं, तब तक हमारे अपने अंदर ही नहीं, विश्व में भी संघर्ष और पीड़ा बनी रहेगी।

राष्ट्रभक्ति का भी अपने-आप में एक मसला है। हम राष्ट्र-प्रेम का अनुभव कब करते हैं? स्पष्ट है कि वह नित्य-प्रति की कोई सामान्य भावना नहीं है। बल्कि अनवरत परिश्रम से स्कूल की पुस्तकों द्वारा, समाचार-पत्रों द्वारा तथा प्रचार के दूसरे साधनों द्वारा हमें राष्ट्रभक्त बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और परिणामस्वरूप अपने राष्ट्र-वीरों की प्रशंसा तथा अपनी राष्ट्रीय जीवन-पद्धति की श्रेष्ठता का बयान कर जातीय अहंकार को उत्तेजित किया जाता है। बालपन से वृद्धावस्था तक राष्ट्रभक्ति की यह भावना हमारे अहंकार का पोषण करती रहती है।

राष्ट्रभक्ति का भी अपने-आप में एक मसला है। हम राष्ट्र-प्रेम का अनुभव कब करते हैं? स्पष्ट है कि वह नित्य-प्रति की कोई सामान्य भावना नहीं है। बल्कि अनवरत परिश्रम से स्कूल की पुस्तकों द्वारा, समाचार-पत्रों द्वारा तथा प्रचार के दूसरे साधनों द्वारा हमें राष्ट्रभक्त बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और परिणामस्वरूप अपने राष्ट्र-वीरों की प्रशंसा तथा अपनी राष्ट्रीय जीवन-पद्धति की श्रेष्ठता का बयान कर जातीय अहंकार को उत्तेजित किया जाता है। बालपन से वृद्धावस्था तक राष्ट्रभक्ति की यह भावना हमारे अहंकार का पोषण करती रहती है।

हम किसी विशेष राजनीतिक या धार्मिक समूह के सदस्य हैं, हम इस देश के हैं या उस देश के हैं, ऐसा बार-बार कहना हमारे क्षुद्र अहंकारों को बढ़ावा देता है और उन्हें गुब्बारे

की तरह फुला देता है, और यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक हम अपने देश, जाति अथवा विचार-प्रणाली के लिए मारने और मरने के लिए तैयार नहीं हो जाते। यह सब कितना मूर्खतापूर्ण और अस्वाभाविक है! राष्ट्रीय और सैद्धांतिक सीमाओं की अपेक्षा मनुष्य निश्चय ही कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रवाद वाली अलगाव की भावना आग की तरह विश्व में चारों ओर फैल रही है। अधिकाधिक विस्तार, व्यापक अधिकार एवं समृद्धि चाहने वाले लोग राष्ट्रभक्ति का संवर्द्धन करते हैं और बड़ी धूर्तता से इसका इस्तेमाल करते हैं। हममें से प्रत्येक व्यक्ति इस प्रक्रिया में भाग लेता है क्योंकि हमें भी इन वुस्तुओं की अभिलाषा है। दूसरे देशों तथा दूसरी कौमों पर विजय हमें केवल अपने माल के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी राजनीतिक और धार्मिक विचार-प्रणालियों के लिए भी नये बाजार उपलब्ध कराती है।

कुछ प्राप्त करने तथा उसे सुरक्षित रखने की इच्छा, अपने से बड़ी किसी वस्तु के साथ तादात्म्य की लालसा, राष्ट्रवाद की भावना को जन्म देती है; और राष्ट्रवाद युद्ध पैदा करता है। सभी देशों में सरकारें, संगठित धर्म का प्रोत्साहन पाकर, राष्ट्रवाद और उसकी अलगाववादी भावनाओं को बनाये रखती हैं। राष्ट्रवाद एक बीमारी है, वह विश्व एकता कभी स्थापित नहीं कर सकती। बीमारी के द्वारा हम स्वास्थ्य को नहीं प्राप्त कर सकते; हमें पहले उस बीमारी से अपने को मुक्त करना होगा।

हमें हिंसा तथा वैमनस्य की इन सभी अभिव्यक्तियों को पूर्वाग्रहरहित होकर देखना चाहिए, यानी एक ऐसे मन से जो किसी राष्ट्र, जाति या विचार-प्रणाली के साथ अपना तादात्म्य नहीं करता, बल्कि जो कुछ सत्य है उसका पता लगाने का प्रयत्न करता है। चाहे सरकार हो, विशेषज्ञ हो या कोई विद्वान, किसी की भी शिक्षाओं तथा धारणाओं के प्रभाव में न आकर हर वस्तु को साफ-साफ देखने में अत्यधिक आनंद है। जब एक बार वास्तव में हम समझ लेते हैं कि राष्ट्रभक्ति मानव-सुख के लिए बाधा है, तब हमें इस मिथ्या भावना से जूझना नहीं पड़ता; वह हमसे सदा के लिए विदा हो जाती है।

राष्ट्रवाद, राष्ट्रप्रेम की भावना, वर्गबोध और जातिबोध आदि सभी 'स्व' की प्रक्रियाएं हैं और इसलिए विघटनकारी हैं। आखिर एक राष्ट्र है क्या? आर्थिक एवं आत्मरक्षा के कारणों से एक साथ रहने वाले व्यक्तियों का एक समूह। भय और परिग्रही आत्मरक्षा से ही 'यह मेरा देश है' ऐसी कल्पना पैदा होती है, उसकी सीमाएं और कर-निर्धारण के क्षेत्र निश्चित होते हैं, और इस प्रकार मनुष्य की एकता एवं भ्रातृत्व को असंभव बना दिया जाता है।

कुछ प्राप्त करने तथा उसे सुरक्षित रखने की इच्छा, अपने से बड़ी किसी वस्तु के साथ तादात्म्य की लालसा, राष्ट्रवाद की भावना को जन्म देती है; और राष्ट्रवाद युद्ध पैदा करता है। सभी देशों में सरकारें, संगठित धर्म का प्रोत्साहन पाकर, राष्ट्रवाद और उसकी अलगाववादी भावनाओं को बनाये रखती हैं। राष्ट्रवाद एक बीमारी है, वह विश्व एकता कभी स्थापित नहीं कर सकती। बीमारी के द्वारा हम स्वास्थ्य को नहीं प्राप्त कर सकते; हमें पहले उस बीमारी से अपने को मुक्त करना होगा।

हम राष्ट्रवादी हैं इसलिए हम अपने संप्रभु राज्य की, अपने विश्वासों की और अपनी उपलब्धियों की सुरक्षा के लिए तैयार रहते हैं, और इसीलिए यह आवश्यक है कि हम निरंतर अस्त्र-शस्त्र से सज्जित रहें। मनुष्य के जीवन की अपेक्षा संपत्ति और विचार हमारे लिए कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो गये हैं, इसलिए हमारे और दूसरों के बीच निरंतर शत्रुता और हिंसा बनी रहती है। अपने देश की संप्रभुता को सुरक्षित करने के लिए हम अपने बच्चों को नष्ट कर रहे हैं। राज्य की उपासना करके, जो और कुछ नहीं हमारा ही प्रक्षेपण है, हम स्वयं अपने ही परितोष के लिए अपने बच्चों का बलिदान कर रहे हैं। राष्ट्रवाद और संप्रभु सरकारें युद्ध के कारण भी हैं और साधन भी।

हमारी वर्तमान सामाजिक संस्थाएं विश्व-संघ में विकसित नहीं हो सकतीं, क्योंकि उनका आधार ही दोषपूर्ण है। राष्ट्रीय प्रभुत्व एवं समूह के महत्त्व को बढ़ावा देने वाली संसदें और शिक्षा-प्रणालियां कभी भी युद्ध का अंत नहीं कर सकेंगी। शासक और शासित के रूप में व्यक्तियों के अलग-अलग समूह युद्ध की जड़ हैं। जब तक मनुष्य और मनुष्य के बीच रिश्ते में हम बुनियादी परिवर्तन नहीं लाते, तब तक हमारे सारे प्रयास भ्रांति ही पैदा करेंगे तथा विनाश व पीड़ा को बढ़ावा देंगे; जब तक हिंसा और उत्पीड़न है, प्रचार और धोखेबाजी है, तब तक मनुष्यों के बीच भाईचारा संभव नहीं। ❑

प्रस्तुति - शक्ति कुमार, संपादक-परिसंवाद

महत्त्वपूर्ण सूचना

सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म्स पर सर्वोदय जगत के एकाउंट्स शुरू हो गये हैं। इसके अलावा सर्वोदय जगत की वेबसाइट भी शुरू की गयी है। पाठकों की सुविधा के लिए इन सभी के लिंक्स दिये जा रहे हैं। सर्वोदय जगत से जुड़े रहने के लिए पाठक इन विभिन्न लिंक्स पर विजिट कर सकते हैं।

Facebook

Website > www.sarvodayajagat.com
Facebook > https://www.facebook.com/sarvodayajagat
Twitter > https://twitter.com/sarvodayajagat
Instagram > https://www.instagram.com/sarvodayajagat/
YouTube > https://www.youtube.com/channel/UCmSaqcLG7HG2EoX5NePfvgQ

Youtube

अमावस्या की रात है, तारे तो टिमटिमायेंगे

राजघाट, नई दिल्ली में आयोजित विमर्श

सर्व सेवा संघ एवं राष्ट्रीय गांधी स्मारक निधि के संयुक्त उद्यम से 10 से 12 सितंबर 2021 को नई दिल्ली में तीन दिवसीय 'विमर्श' का आयोजन राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के सभागार में किया गया। विमर्श में देश भर से गांधी परंपरा के संगठनों एवं प्रबुद्ध गांधीजनों की भागीदारी हुई। प्रख्यात गांधीवादी प्रवाह के रचनात्मक व्यक्तित्व धीरेंद्र मजूमदार की स्मृति के साथ यह आयोजन शुरू हुआ।

विमर्श का उद्घाटन करते हुए प्रवीण गांधीवादी अमरनाथ भाई ने विनोबाजी के संदर्भ का उल्लेख करते हुए कहा कि ''पूर्णिमा में तो अकेला चांद ही चमकता है, पर मुझे अमावस्या का आकर्षण है, जहां असंख्य तारे टिमटिमाते हैं।'' इस उदाहरण का तात्पर्य समझाते हुए उन्होंने कहा कि सर्व सेवा संघ एवं गांधी परंपरा के सामने विविध प्रकार की चुनौतियां हैं, जिनका सामना उन्नत विवेक एवं सामूहिक उद्यम से ही संभव है। उन्होंने एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य को रेखांकित किया कि लोग अनावश्यक युवा पीढ़ी के प्रति निराशा व्यक्त करते रहते हैं। मैं जहां भी जाता हूं, युवा पीढ़ी गांधी प्रवाह की बातें सुनने को उत्सुक और तैयार रहती है। यह देखकर हमारी उम्मीदें बलवती होती हैं।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चंदन पाल ने कहा कि हम लोग संघर्ष एवं रचना की दोहरी प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में फीके पड़ रहे हैं। फिर भी, कभी-कभी कुछ करने का प्रयास हो रहा है, लेकिन इसका ज्यादा असर दिखायी नहीं देता है। यह कोई निराशा की बात नहीं है, वास्तविकता है। निराशा को पकड़कर बैठने से तो हम कहीं और खो जायेंगे। अब तक का जो प्रयास है, उसको खुलेपन और खुले मन से समीक्षा करने की आवश्यकता है। आज की चुनौतियों की पहचान करनी है और उनसे निपटने के लिए रास्ता खोजना है। गांधी परंपरा के संगठनों और कार्यकर्ताओं में जो बिखराव है, उसे रोकना है और आपसी समझ को विकसित करते जाना है। अपनी आलोचनाओं को उदारतापूर्वक स्वीकार करना है और कटु आरोपों को नजरअंदाज करना है।

वरिष्ठ गांधीवादी रामचंद्र राही ने कहा कि दूसरों को समझाने के बजाय खुद को समझाने की कोशिश की जाय। खुद से खुद का विमर्श पहले है, तब परस्पर का हो। हमारा दर्शन आत्मपरीक्षण एवं आत्मशोधन का है। धीरेन्द्र दा को याद करते हुए उन्होंने कहा कि अहिंसा की प्रक्रिया में हम पर सहज ही कुछ जिम्मेवारी आ जाती है। अगर हम इसका निर्वाह करते रहें, तो समस्याएं स्वयं हल होती चली जायेंगी।

विमर्श में कोर गांधीवादी संगठनों की शिरकत

1. सर्व सेवा संघ
2. राष्ट्रीय गांधी स्मारक निधि
3. गांधी शांति प्रतिष्ठान
4. सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान
5. नई तालीम समिति
6. सर्वोदय समाज
7. राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय

इसके अलावा भी कई संगठनों के प्रतिनिधि विमर्श में शामिल हुए।

विमर्श में भागीदारी

1. अमरनाथ भाई, 2. रामचंद्र राही, 3. चंदन पाल, 4. कुमार प्रशांत, 5. आशा बोथरा, 6. ए. अन्नामलाई, 7. टीआरएन प्रभु, 8. पी.वी. राजगोपाल, 9. राजेन्द्र सिंह, 10. डॉ. विश्वजीत, 11. रामधीरज भाई, 12. अरविन्द अंजुम, 13. अरविन्द कुशवाहा, 14. रवीन्द्र सिंह चौहान, 15. शंकर नायक, 16. खम्मनलाल शांडिल्य, 17. संजय सिंह, 18. अशोक शरण, 19. शुभा प्रेम, 20. लक्ष्मण सिंह, 21. संजय राय, 22. रामशरण, 23. विनोद रंजन, 24. संतोष द्विवेदी, 25. सोमन सेंडे, 26. शेख हुसैन, 27. अविनाश काकड़े, 28. रमेश दाने, 28. प्रदीप खेलुलकर, 29. अशोक भारत, 30. अजय सहाय, 31. प्रो. बी. के. त्रिपाठी, 32. सोपान जोशी, 33. जवरमल वर्मा, 34. भगवान सिंह, 35. सुखपाल सिंह, 36. डॉ. सच्चिदानंद, 37. डॉ. ए. के. अरुण, 38. गौरांगचंद्र महापात्रा, 39. डॉ. मणिमाला, 40. सत्यपाल ग्रोवर, 41. डॉ. सुगन बरंठ, 42. सुरेश मिश्रा, 43. लतांत प्रसून, 44. सवाई सिंह, 45. जगन कौशिक, 47. डॉ. तारा गांधी भट्टाचार्य, 47. राकेश रफीक आदि।

सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान के अध्यक्ष टीआरएन प्रभु ने गांधी विचार प्रणाली को अन्यतम बताते हुए कहा कि हमें बाहर की ओर देखना बंद कर, अपनी ओर देखना चाहिए। हमें अपनी कमजोरियों की पहचान कर, उनको दूर करने के उपायों पर ध्यान देना चाहिए। इस दौर में सभी सकारात्मक क्रियाएं और संस्थाएं कमजोर हुई हैं। 1990 के बाद पूरी दुनिया में काफी तकनीकी परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों को नजर में रखकर कार्ययोजना बनाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के अध्यक्ष ए अन्नामलाई ने कहा कि अंततः जिस आयोजन का बेसब्री से इंतजार था, वह आज सफलता पूर्वक संपन्न हो रहा है, जिसका हम सब हार्दिकता से स्वागत करते हैं। नई तालीम के अध्यक्ष डॉ. सुगन बरंठ की राय थी कि सैद्धांतिक बातों के साथ-साथ उसके व्यावहारिक स्वरूप को भी निर्धारित करना चाहिए। देश के कई स्थानों पर शिक्षा क्षेत्र सहित अन्य क्षेत्रों में प्रयोग हो रहे हैं, जिनके साथ समन्वय बनाने का दायित्व हम सब पर है। उद्घाटन सत्र में अभ्यागतों का स्वागत अशोक कुमार शरण, संचालन संजय सिंह एवं धन्यवाद गौरांग महापात्र ने किया।

विमर्श की चर्चा चार महत्त्वपूर्ण सत्रों में विभाजित होकर चली। इन सत्रों में वर्तमान परिस्थिति में गांधीवादी नेतृत्व की भूमिका, जन आंदोलनों की भूमिका, सर्व सेवा संघ का उद्देश्य एवं अब तक के प्रयास की समीक्षा, स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियां, गांधी परंपरा के व्यक्तियों एवं संगठनों के बीच समन्वय विकसित करने की पद्धति, सरकारी संस्थाओं के साथ गांधीवादी संगठनों के संबंध की समझ एवं रूपरेखा, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साझा पहल आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। अंतिम सत्र में विमर्श में उभरे सहमति के बिन्दुओं को समेटते हुए तीन प्रस्ताव और संशोधन पारित किये गये। कार्यक्रम के तौर पर साबरमती आश्रम को विरूपित करने के प्रयास को रोकने के लिए सेवाग्राम से साबरमती तक यात्रा निकाली जायेगी तथा पूरे देश में गांधीजन व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से उपवास रखेंगे। ❑

दिल्ली विमर्श में पारित हुए तीन प्रस्ताव

प्रस्ताव - एक

गांधीजनों का सामूहिक संकल्प

सर्व सेवा संघ एवं राष्ट्रीय गांधी स्मारक निधि द्वारा नई दिल्ली में आयोजित तीन दिवसीय विमर्श (10 से 12 सितंबर 2021) में शामिल गांधीजन एवं गांधी परंपरा के संगठन तीव्रता से यह महसूस कर रहे हैं कि देश और दुनिया की वर्तमान चुनौतियों के सामने अहिंसक समाधान प्रस्तुत करना हम सबका साझा और अहम दायित्व है। हम सब यह मानते हैं कि सत्य, अहिंसा और सहअस्तित्व के मूल्यों के आधार पर संपूर्ण मानवीय सभ्यता का पुनर्गठन एवं पुनर्निर्माण संभव है। हमारा पूर्ण विश्वास है कि इस रास्ते पर चलकर ही विश्व में शांति, एकता व बंधुत्व के सूत्र मजबूत किये जा सकते हैं।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम आपसी संवाद की धारावाहिकता बनाए रखते हुए एक समन्वित हस्तक्षेप की प्रक्रिया और मैकेनिज्म विकसित करने का इरादा रखते हैं। हम यह उम्मीद करते हैं कि इस दिशा में गांधी परंपरा के संगठनों का औपचारिक नेतृत्व और अनौपचारिक प्रयासों द्वारा ठोस पहल की जायेगी।

गांधी परंपरा के संगठनों का यह समन्वित प्रयास देश और दुनिया के ज्वलंत विषयों एवं महत्वपूर्ण घटनाओं पर नियमित रूप से साझा मंतव्य प्रकाशित एवं प्रसारित करेगा तथा आपसी समझ के आधार पर अन्य जरूरी भूमिकाएं अदा करेगा।

प्रस्ताव - दो

विरासत का संरक्षण

सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, नैतिकता, स्वावलंबन और समता के पाठ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के आधारभूत मूल्य रहे हैं। इन्हीं आधारशिलाओं पर गांधीजी ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष का ताना-बाना बुना और एक एक सफल तथा ऐतिहासिक लड़ाई जीतकर दुनिया को संदेश दिया। इस परिप्रेक्ष्य में गांधीजी की संस्थाएं तथा आश्रम हमारे मार्गदर्शक रहे हैं।

भोगवादी जीवनशैली तथा आधुनिक विकास से परे, हम सादगी और सत्य के मूल्यों पर आधारित सृजनशील जीवन जी सकते हैं, देश और दुनिया के करोड़ों लोग गांधी जी के आश्रमों से यह संदेश ग्रहण करते रहे हैं। इस पृष्ठभूमि में साबरमती और सेवाग्राम आश्रम हमारी राष्ट्रीय धरोहर की तरह हैं। अहमदाबाद, गुजरात में साबरमती नदी के तट पर स्थित साबरमती आश्रम आज भी दुनिया को शांति का संदेश और प्रेरणा देता है। इसकी सादगी में स्थित दिव्यता ही इसका गौरव है। इसकी साधारणता ही इसे असाधारण बनाती है। चमक-दमक और चकाचौंध से भरी जिस सभ्यता का विरोध गांधी जी ने जीवन भर किया, अफसोस की बात है कि उसी तथाकथित भव्यता की आड़ में साबरमती आश्रम के मूल स्वरूप को नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। जिनका अपना कोई इतिहास नहीं होता, वे दूसरों के इतिहास में दखल देने की कोशिश करते हैं। आश्रम परिसर में पंचसितारा सभ्यता का यह प्रयोग आहत करने वाला है।

भारतीय स्वतंत्रता के अमृत जयंती वर्ष में गांधी जी के आदर्शों और कार्यक्रमों का प्रसार करने के बजाय वर्तमान केन्द्र सरकार उनके स्मृतिशेष मिटाने हेतु आजादी के संघर्ष से जुड़े स्मृति स्थलों को तहस-नहस करने की कोशिश कर रही है। साबरमती आश्रम को विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल में तब्दील करने की योजना उसी कोशिश का एक बड़ा हिस्सा है। जलियांवाला बाग बलिदान की जगह है, उसे उत्सव की जगह में तब्दील करने और उसका ऐतिहासिक स्वरूप नष्ट करने के बाद अब साबरमती आश्रम को विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल बनाने के नाम पर लगभग 1200 करोड़ रुपये की योजना लायी जा रही है। उसमें नया संग्रहालय, एमफी थिएटर, वीआईपी लाउंज, खाने-पीने की दुकानें और मनोरंजन की व्यवस्था का निर्माण करने का प्रावधान है। इस पर्यटन स्थल का निर्माण भारत के प्रधानमंत्री तथा गुजरात के मुख्यमंत्री के नेतृत्व में किये जाने की योजना है। इस निर्माण के कारण साबरमती आश्रम का मूल स्वरूप समाप्त हो जायेगा, जो भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक धरोहर है। गांधी जी के निजी निवास हृदयकुंज पर इस आधुनिक निर्माण के कारण लुप्त हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। हृदयकुंज एक ऐतिहासिक धरोहर है, जो समाप्त की जा रही है। गांधी जी की विचारधारा से जुड़ी आश्रम के कार्यकर्ताओं की जीवनशैली पर यह एक आघात की तरह है। सरकार का यह रवैया आहत करने वाला है। हम इसका पुरजोर प्रतिकार करते हैं और साबरमती आश्रम को बचाने का संकल्प लेते हैं।

देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों और महापुरुषों की स्मृतियों को नष्ट करके उन्हें पर्यटन स्थलों में परिवर्तित कर, व्यावसायिक स्वरूप देना, समाज में संभ्रम पैदा करने की कोशिश है। दिल्ली की राजघाट समाधि पर भी सरकार की कुदृष्टि की खबरें हैं। हमें इन कोशिशों के प्रतिकार में जनमत को संगठित करके इन राष्ट्रीय धरोहरों को बचाना होगा, हम इसके लिए संकल्पबद्ध हैं।

प्रस्ताव - तीन

अफगानिस्तान अंतर्राष्ट्रीय शर्म का विषय है

कभी भारत का हिस्सा रहे अफगानिस्तान को हमें किसी दूसरे चश्मे से नहीं, अफगानी नागरिकों के चश्मे से ही देखना चाहिए, उन नागरिकों के चश्मे से, जिनमें हम गांधीजनों की सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान की छवि दिखायी देती है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद तथाकथित मित्र राष्ट्रों ने पराजित राष्ट्रों के साथ जैसा क्रूर व चालाक व्यवहार किया था, अफगानिस्तान के बहादुर व शांतिप्रिय नागरिकों के साथ खुद को महाशक्ति कहलाने वालों ने वैसा ही कायरतापूर्ण, बर्बर व्यवहार किया है। सबसे पहले ब्रितानी साम्राज्यवाद ने, फिर रूसी खेमे ने और फिर अमरीकी खेमे ने। यदि अंतर्राष्ट्रीय शर्म जैसी कोई संकल्पना बची है, तो आज का अफगानिस्तान दुनिया के हर लोकतांत्रिक नागरिक

के लिए शर्म का विषय है।

बहादुर अफगानियों को गुलाम बनाये रखने की तमाम चालों के विफल होने के बाद अमरीकी उन्हें खोखला व बेहाल छोड़कर चले गये, लेकिन अफगानी नागरिकों का दुर्भाग्य ऐसा है कि अब उनके ही लोग, वैसी ही हैवानियत के साथ हथियारों के बल पर उनके सीने पर सवार हो गये हैं। हमारे लिए तालिबान किसी जमात का नहीं, उस मानसिकता का नाम है, जो मानती है कि आत्मसम्मान के साथ आजाद रहने के नागरिकों के अधिकार का दमन हिंसा के बल पर किया जा सकता है। लेकिन इतिहास गवाह है कि ऐसी ताकतें न कभी स्थाई रह सकी हैं, न रह सकेंगी।

हमें वेदनापूर्वक यह भी कहना पड़ता है कि अफगानिस्तान की इस करुण गाथा में भारत की सरकारों की भूमिका किसी मजबूत व न्यायप्रिय पड़ोसी की नहीं रही है। राष्ट्रहित के नाम पर हम समय-समय पर अफगानिस्तान को लूटने वाली ताकतों का ही साथ देते रहे हैं। हम जोर देकर कहना चाहते हैं कि ऐसी कोई परिस्थिति नहीं हो सकती है, जिसमें किसी का अहित, हमारा राष्ट्रहित हो।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि अफगानिस्तान की बहादुर जनता जल्दी ही अपने लोगों के इस वहशीपन पर काबू करेगी, अपनी स्त्रियों की स्वतंत्रता व समानता तथा बच्चों की सुरक्षा की पक्की व स्थायी व्यवस्था बहाल करेगी। हम अपने पड़ोस में स्वतंत्र, समतापूर्ण और खुशहाल अफगानिस्तान देखने के अभिलाषी भी हैं और उस दिशा में अपनी तरफ से हर संभव प्रयास भी करेंगे। ❑

श्रद्धांजलि

सर्वोदय बुक स्टाल, भोपाल के व्यवस्थापक वीरेन्द्र पाण्डेय के पिता रमेशचन्द्र पाण्डेय का 5 सितंबर को निधन हो गया। वे लगभग 74 वर्ष के थे। वे कैंसर से पीड़ित थे और लंबे समय से उनका इलाज चल रहा था। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। सर्वोदय जगत परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

विमर्श के पीछे की भावना

दिल्ली विमर्श में सर्व सेवा संघ अध्यक्ष का संबोधन

सर्व सेवा संघ तथा अन्य गांधीवादी संगठनों में यह चिन्तन चल रहा है कि सर्वोदय आंदोलन को कैसे सक्रिय व प्रभावी बनाया जाय? वर्तमान समय में हम लोगों के दायरे के अंदर व बाहर जो चुनौतियां हैं, उसको कैसे सुलझाया जाय? बाहर में जो विपरीत प्रवाह चल रहा है, उसको कैसे रोका जाय? इन सभी प्रश्नों के उत्तर गहराई में जाकर खोजने होंगे। यह स्वीकार कर लेना बुद्धिमानी की बात है कि सर्वोदय संगठन तथा उसका कामकाज धीरे-धीरे क्षीण होता गया है, विचारों में भी बहुत शिथिलता तथा ढीलापन दिख रहा है। एक के बाद एक हम लोग मकड़जाल में फंसते जा रहे हैं। प्रदेशों के सर्वोदय मंडल निष्प्राण दिखायी दे रहे हैं। रचनात्मक कार्यक्रम जन-आंदोलन नहीं बन पा रहे हैं। कभी-कभी कुछ करने का प्रयास तो हो रहा है, लेकिन उसका असर दिखायी नहीं देता है। यह कोई निराशा की बात नहीं है, हकीकत है। निराशा को पकड़कर बैठने से तो हम कहीं खो जायेंगे। अब तक जो कुछ हुआ, उसकी खुलेपन से, सामूहिक रूप से समीक्षा करना बेहद जरूरी है।

मेरा जन्म अति साधारण छोटे किसान परिवार में हुआ है। बचपन से ही काफी संघर्षों से जूझते हुए अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ाया। हाईस्कूल में पढ़ते समय पहली बार सर्वोदय, विनोबा जी का नाम सुना। भूदान, ग्रामदान शब्द कान में गूंजे। शांति-पदयात्रा में भाग लेते समय नारे दोहराते थे—'हमारा मंत्र - जयजगत, हमारा तंत्र - ग्रामस्वराज्य, हमारा लक्ष्य - विश्वशांति'। उन दिनों इन नारों को बिना समझे जोर-जोर से चिल्लाने में मजा आता था। धीरे-धीरे जब अर्थ समझने लगा, तब आवाज कमजोर पड़ने लगी और आज तो इन नारों में शामिल होते समय मेरा हृदय कांपने लगता है। अंदर ही अंदर सवाल पैदा होता है कि क्या सच में इसका अर्थ मैं समझ पाया? फिर सवाल उठता है समझ पाया तो किया क्या?

मैंने कभी सोचा नहीं था कि सभी साथी मिलकर सर्वोदय संगठन की इतनी बड़ी जिम्मेवारी मुझे सौंपेंगे। जिम्मेवारी स्वीकार करने के पहले मेरे मन में यह था कि सर्वानुमति नहीं, सर्वसम्मति से निर्णय होगा, तो हम उसे स्वीकार करेंगे। नहीं तो हम खुद को इस प्रक्रिया से अलग कर लेंगे। अब जब जिम्मेवारी ले ली है, तब इसको यथासंभव आगे बढ़ाने के लिए काम करना है। लेकिन जिम्मेवारी लेने के दिन से ही समस्याएं खड़ी हो रही हैं। मेरे कामकाज की आलोचना कोई करे, तो वह सहन हो सकता है, लेकिन कोई मुझे सत्ता, सम्पत्ति-लोलुप, कब्जाधारी कहकर अफवाह फैलाने या चरित्रहनन करने का प्रयास करे, तो सहन नहीं होता। मन में दुख होता है, लेकिन बापू बचा लेते हैं। मुझे संतोष है कि ऐसे लोगों के बारे में आज तक एक भी गलत शब्द का प्रयोग मैंने नहीं किया है।

समस्याएं, संकट तो हैं ही, लेकिन संभावनाएं क्या हैं, हमें उनको तलाशना होगा। इसी कारण सामूहिक रूप से सोचने के लिए जनवरी 2021 में सेवाग्राम में सम्पन्न हुई सर्व सेवा संघ की कार्यसमिति के सामने यह प्रस्ताव रखा गया और निर्णय भी हुआ। तय हुआ था कि अप्रैल 2021 में दिल्ली में एक संगीति होगी। अब संगीति का नाम बदलकर विमर्श रखा गया है। संगीति में खुली चर्चा होती है, विमर्श में भी ऐसा ही होगा। फर्क बस इतना ही है कि संगीति में विचार या आदर्श की भिन्नता के बावजूद दो भिन्न समूह एक साथ बैठकर एक दिशा व लक्ष्य से सहमत होकर काम करने के लिए प्रेरित होते हैं। लेकिन विगत कई महीनों से सर्व सेवा संघ को लेकर सर्वोदय साथियों के बीच चले आ रहे तनाव के पीछे ऐसा कोई आदर्श नहीं रहा है, बल्कि नियम-कानून, पद्धति और तरीकों को लेकर विवाद है। इसलिए नियम-कानून को लेकर जो साथी मैदान में उतरे हैं और हमारे विरोध में काम कर रहे हैं, उन लोगों के प्रति अनुराग रखते हुए उन्हें नहीं बुलाया गया है।

सच कहूं तो संगीति, जो बौद्ध परंपरा का शब्द माना जाता है, के बारे में हमें बहुत कुछ मालूम नहीं है। इतना ही मालूम है कि जब कोई संकट पैदा होता है, तो उसमें से रास्ता निकालने

के लिए आपस में बैठकर संगीति का आयोजन करते हैं। इस परंपरा को सर्वोदय समाज में भी अपनाया गया है, लेकिन इस बार विशेष परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए चुने हुए कुछ ही साथियों को बुलाया गया है। विमर्श में जो निष्कर्ष निकलेगा, उसे साथियों के बीच रखने की कोशिश होगी। तीन दिन के इस विमर्श के लिए देश भर के चुनिंदा साथियों को आमंत्रण भेजा गया था, लेकिन कोरोना महामारी के कारण और खराब स्वास्थ्य के चलते कई साथी नहीं आ पा रहे हैं, हालांकि उनकी सद्भावनाएं हमारे साथ हैं, विमर्श में जो साथी साहसपूर्वक शामिल हुए हैं, सर्व सेवा संघ की ओर से हम सभी का आभार मानते हुए स्वागत करते हैं।

गांधी, विनोबा, जेपी ने समाज, देश तथा दुनिया को जोड़ने की कोशिश की, लेकिन आज कई राजनेता धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भाषा, संप्रदाय, संस्कृति के नाम पर समाज और देश को तोड़ने में लगे हैं। भारत की आजादी के संघर्ष में जिनकी भूमिका संदेह से परे नहीं है, उनको महान देशभक्त बताने की कोशिश चल रही है, दूसरी ओर जिन लोगों का नाम आना चाहिए था, ऐसे कई नाम हटाये जा रहे हैं। चुनाव आयोग, रिजर्व बैंक, ईडी, सीबीआई आदि संस्थाओं की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़ा हो गया है। लोकतांत्रिक संस्थाएं आज कठघरे में हैं।

हाल ही में न्यायमूर्ति डी. वाई. चन्द्रचूर्ण ने एक सेमिनार में आम जनता का आवाहन करते हुए कहा है कि किसी भी सरकार या राष्ट्र के प्रतिनिधि जो बोलते हैं, उसी को सच मानकर विश्वास नहीं करना चाहिए। जो सरकार स्वेच्छाचारी होती है, वह सारी सत्ता को अपनी मुट्ठी में रखने के लिए लगातार झूठी बातें तथा झूठे आश्वासन के बल पर आम जनता को गुमराह करती है। सत्य पर आस्था व आग्रह रखने वाले गांधीजनों की इस झूठ के जंजाल के प्रति क्या कोई भूमिका है? हमें सोचना चाहिए। सोचकर कदम उठाना जरूरी है, नहीं तो बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने के चक्कर में साबरमती आश्रम की तरह आने वाले दिनों में सेवाग्राम आश्रम, साधना केन्द्र, वाराणसी सहित अन्य गांधी संस्थाओं पर भी सरकार का कब्जा हो सकता है। ये आश्रम व केन्द्र गांधी मूल्यों के प्रतीक हैं, हमारी धरोहर हैं।

अहिंसक समाज रचना के लिए जो संस्थाएं गठित हुई थीं, वह काम फीका पड़ गया है। लक्ष्य की ओर जाने में विफल रह गये तो इन सब संस्थाओं की जरूरत क्या है? यह सवाल बार-बार उठता है। काफी संस्थाएं गांधीजी का जीवन-दर्शन लेकर उच्च शिक्षा या मूलतः डिग्री देने का काम करती हैं। चलिए, वह काम भी चले, लेकिन अभी गांधियन एकेडेमीशियन से ज्यादा जरूरत है गांधियन एक्टिविस्ट की। गांधियन एकेडेमीशियन अगर एक्टिविस्ट बन जायें, तो यह और भी अच्छा है। यह बात मैं पिछले अनुभवों के आधार पर कह रहा हूं।

वर्ष 2012 में असम के कोकराझार तथा आसपास के जिलों में बोडो-मुस्लिम समुदायों के बीच दंगा हुआ। सर्वोदय की एक छोटी-सी टीम लेकर हम वहां पहुंचे और शांति स्थापना में लग गये। 5 वर्ष के दौरान आदरणीय राधा बहन, अमरनाथ भाई, रामजी बाबू, सुब्बाराव जी जैसे लोगों को छोड़कर इस अवधि में किसी से अपेक्षित सहयोग नहीं मिला। इस अवधि में कई अन्य लोगों ने भी अपना योगदान दिया, लेकिन हमारे साथ जमकर बैठने वाला कोई नहीं मिला। सर्वोदय समाज को एक मौका मिला था, उसका उपयोग हम नहीं कर सके। शांति सैनिक का काम घर में बैठकर पुस्तक पढ़ना या सोशल मीडिया पर चर्चा करना ही नहीं है, उन्हें मैदान में उतरना भी है और चुनौती भी स्वीकार करनी है। युवा यही चाहते हैं। हम लोगों को आत्मदर्शन चाहिए। हम कहते हैं कि सबको साथ में लेकर चलना है, बोलने व सुनने में यह बहुत अच्छा लगता है, लेकिन वास्तविकता अलग है। क्या हम कभी सोचते हैं कि हमारे साथ कितने आदिवासी, दलित, अल्पसंख्यक, युवा, महिला या थर्ड जेन्डर हैं?

तीन दिन के इस विमर्श में यह भी कोशिश होनी चाहिए कि गांधी संस्थाओं से जुड़े विचारों के साथ हमारा संपर्क कमजोर क्यों हुआ? खादी, नई तालीम एवं महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रमों में जुड़े समूहों के साथ मजबूत संबंध कैसे हों और एक साथ कैसे चल सकें, इस पर भी विचार होगा।

इस संबंध में एक निवेदन और भी करना है कि कुछ संस्थाएं लोगों के बीच अच्छा काम कर रही हैं, लेकिन हम उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं को एनजीओ के नाम पर दूर रखना चाहते हैं। जो लोग अच्छे काम कर रहे हैं, उनको भी साथ लेना है। ऐसे लोग एवं संस्थाएं वैकल्पिक शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि आदि विषयों को लेकर आदिवासी एवं दलितों के बीच काम कर रहे हैं। पानी, नदी, किसानों के अधिकार, मछुआरों की समस्याओं को लेकर भी काम हो रहा है, उनको भी जोड़ना चाहिए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोने-कोने में स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के बारे में (खासकर हिंसा, नवपूंजीवाद, ग्लोबल वार्मिंग आदि) भी चर्चा हो। भारत की आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए जब हम लोग प्रस्तुत हैं, उसी समय कहीं न कहीं हमारे अस्तित्व पर भी संकट मंडरा रहा है। जिस प्रकार मार्क्सवादी, लेनिनवादी, माओवादी, समाजवादी, लोहियावादी, अम्बेडकरवादी के रूप में हमारा समाज बिखरा हुआ है, वैसे ही गांधीवादियों के बीच में भी कहीं न कहीं विनोबावादी तथा जयप्रकाशवादी की भावना काफी सक्रिय है। यह हमें कमजोर करती है। हमारे सामने सबसे बड़ा खतरा हिन्दुत्ववादी भावना है, जो समाज को टुकड़ों में बांट रही है। देश में निजीकरण, विनिवेशीकरण का महोत्सव चल रहा है। इसके पीछे गहरी साजिश है, इस बारे में कोई दो राय नहीं है। ये बात सही है कि इन कार्रवाइयों से कुछ राजनैतिक ताकतों को फायदा मिल सकता है, लेकिन आम जनता, ग्राम समाज, नगर समाज तथा देश के लिए यह अत्यंत अशुभ संकेत हैं।

इन परिस्थितियों को सामने रखते हुए सर्वोदय समाज को अपने प्रयोगों, अनुभवों, परिणामों, विफलताओं और सफलताओं पर विचार-विमर्श के बाद सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक कार्यक्रम क्या हो सकते हैं, इस पर भी सामूहिक रूप से विचार करना एवं निर्णय लेना पड़ेगा। हमें यह भी सोचना पड़ेगा कि अगले दस वर्षों में सर्वोदय जमात किस दिशा में आगे बढ़ेगी और उसकी रूपरेखा क्या होगी? ये सब हमारे दायित्व हैं, इसका निर्वाह हमें करना है। देश और दुनिया के लोगों को गांधीजनों और सर्वोदय जमात से बहुत उम्मीदें हैं। संकट कितना भी गंभीर क्यों न हो, हम सब मिल-जुलकर बढ़ेंगे, तो हमें सफलताएं भी जरूर मिलेंगी। इसी आशा और विश्वास के साथ विमर्श का आयोजन किया गया है। हमें यह सिद्ध करना है कि गांधी और समाज के सामने हम खरे हैं। **—चंदन पाल**

वाराणसी जिला प्रशासन द्वारा सर्व सेवा संघ की जमीन पर बलात कब्जा

एक दिन का मौन सत्याग्रह

सर्व सेवा संघ की प्रादेशिक इकाई उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल की ओर से दिनांक 5 सितंबर, 2021 को राजघाट परिसर (साधना केन्द्र) स्थित गांधी प्रतिमा के समक्ष प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये वरिष्ठ गांधीजनों ने दिन भर का मौन उपवास रखा। मौन उपवास में प्रमुख रूप से प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष भगवान सिंह, पूर्व अध्यक्ष रवीन्द्र सिंह चौहान, कार्यक्रम समन्वयक रामधीरज भाई एवं राष्ट्रीय मंत्री अरविन्द कुशवाहा शामिल हुए।

मौन उपवास का यह कार्यक्रम सुबह 10 बजे गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं सर्वधर्म प्रार्थना के साथ प्रारम्भ हुआ। यह उपवास सत्याग्रह वाराणसी प्रशासन द्वारा सर्व सेवा संघ की क्रयशुदा जमीन (अराजी नं. 8, रकबा 2.65 एकड़, मौजा-किला कोहना, मोहल्ला-राजघाट काशी, परगना-देहात, अमानत-तहसील सदर, जिला-वाराणसी) को नियम एवं कानून विरुद्ध किये गये कब्जे से मुक्त कराने के लिए किया गया।

ध्यातव्य है कि विनोबा जी ने भूदान-ग्रामदान आंदोलन को प्रभावी बनाने के लिए सर्वोदय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, अध्ययन, वैचारिक-आध्यात्मिक साधना एवं गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों पर शोध-अध्ययन के लिए सर्व सेवा संघ (साधना केन्द्र) की स्थापना की थी। इस केन्द्र से गांधी साहित्य का प्रकाशन होता है और समाज परिवर्तन एवं उत्थान की अनेक गतिविधियां संचालित होती हैं। जयप्रकाश जी स्वयं यहां रहकर शोध कार्यों का संचालन करते थे। शंकरराव देव, अच्युत पटवर्धन, दादा धर्माधिकारी, पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा, आचार्य राममूर्ति तथा पूर्व सांसद निर्मलादेश पांडे आदि अनेक विभूतियां यहां रहती थीं। यह स्थान जीवंत राष्ट्रीय धरोहर है, जिसे प्रशासन नष्ट और कलंकित कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि दिसंबर 2020 में जिला प्रशासन ने सर्व सेवा संघ के उक्त भूखंड को जबरन अपने कब्जे में ले लिया था, यह कहते हुए कि इस पर विश्वनाथ कॉरिडोर का कुछ सामान रखा जायेगा। चूंकि प्रधानमंत्री का यह ड्रीम प्रोजेक्ट है, इसलिए इसे अगस्त 2021 तक पूरा करना है और इसके पूरा होते ही हम अगस्त अंत तक जमीन खाली कर देंगे। लेकिन अभी तक प्रशासन ने जमीन खाली नहीं

मौन सत्याग्रह पर बैठे गांधीजन

की है, बल्कि वहां नये निर्माण भी कर रहा है, जो आपत्तिजनक और गैरकानूनी है। इस संदर्भ में सर्व सेवा संघ द्वारा जिला प्रशासन को बार-बार अवगत कराया गया है कि यह जमीन क्रयशुदा है, हमारी सहमति के बिना इसका जबरन उपयोग करना कानूनी रूप से सही नहीं है। जिला प्रशासन से यह भी आग्रह किया गया कि उक्त जमीन से वह अपना कब्जा हटा ले, लेकिन जिला प्रशासन ने हमारे निवेदन पर अब तक ध्यान नहीं दिया है। अतः क्षुब्ध होकर गांधीजनों ने सत्याग्रह के रास्ते अपना क्षोभ व्यक्त करने का निर्णय लिया।

उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल एवं सर्व सेवा संघ ने इस उपवास सत्याग्रह के द्वारा जिला प्रशासन से आग्रह किया है कि वे उक्त क्रयशुदा भू-भाग को यथाशीघ्र मुक्त करें, अपने सारे उपकरण तथा माल-असबाब हटा लें और संस्था को ठेस पहुंचाने व अपमानित करने के लिए खेद प्रकट करें। सायं 5.00 बजे राष्ट्रीय गीत के साथ मौन उपवास का समापन हुआ।

जिला प्रशासन, वाराणसी द्वारा बलात कब्जा की गयी जमीन (अराजी नं. 8) से संबंधित आवश्यक तथ्य

1. आराजी बन्दोबस्त नम्बरी 8 (आठ) रकबा 2.65 एकड़, आराजी नम्बर 9 (नौ) रकबा 4.44 एकड़, आराजी नम्बर 10 (दस) रकबा 1.5 एकड़, आराजी नम्बर 11 (ग्यारह) रकबा 0.16 एकड़, आराजी नम्बर 12 (बारह) रकबा 1.30 एकड़, जुमला रकबा 8.70 एकड़ सभी स्थित मौजा किला कोहना, परगना देहात अमानत, मोहल्ला राजघाट काशी, जिला वाराणसी का स्वामी पहले भारत संघ (Union of India) था।
2. उक्त आराजियात को **महामहिम राष्ट्रपति महोदय** ने डिवीजनल इन्जीनियर, नार्दन रेलवे, लखनऊ के माध्यम से अखिल भारत सर्व सेवा संघ, वर्धा नामक सोसाइटी, जो **भारतीय सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 (52 Of 1950-1951)** एवं **'मुम्बई पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1950 (रजिस्ट्रेशन नं. एफ.-57 डब्ल्यू.)** के अन्तर्गत पंजीकृत है, को बजरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांकित 15.05.1960 ई. को विक्रय कर दिया था।
3. उक्त विक्रय-पत्र का निबन्धन उपनिबन्धक, वाराणसी के कार्यालय में बही नम्बर 1, जिल्द संख्या 3533, पृष्ठ संख्या 28 से 33 पर बतौर दस्तावेज संख्या 3245 दिनांक 11.06.1960 ई. को किया गया है।
4. उक्त विक्रय-पत्र के आधार पर उपरोक्त क्रेता सोसाइटी का नाम राजस्व विभाग के अभिलेखों में नियमानुसार सन् 1960 ई. में ही बहैसियत मालिक दर्ज हो गया था और अभी तक कायम चला आ रहा है।
5. तारीख बैनामा से ही उक्त क्रेता (प्रार्थी) आराजियात क्रयशुदा पर बहैसियत तनहां मालिक वाकई काबिज दाखिल चला आ रहा है।

6. क्रेता सोसाइटी यानी अखिल भारत सर्व सेवा संघ उपरोक्त के अलावा सन्दर्भित आराजियात के कब्जा दखल व हक मालिकाना से भारत संघ और उसके अधीन किसी भी सरकार, कार्यालय अथवा विभाग एवं किसी व्यक्ति विशेष का वास्ता व सरोकार किसी भी किस्म का कानूनन न तो है, और न हो सकता है।

जिला प्रशासन द्वारा सर्व सेवा संघ की जमीन पर किया जा रहा कार्य

7. उपरोक्त आराजियात का विस्तृत विवरण अंत में दिया जा रहा है।
8. उपरोक्त आराजियात में से आराजियात नम्बर मि. 8 (आठ) रकबा-206 हेक्टेयर, नम्बर मि. 9 (नौ) रकबा 3.108 हेक्टेयर, नम्बर 10 (दस) रकबा 0.363 हेक्टेयर, नम्बर 12 (बारह) रकबा 10.153 हेक्टेयर नार्दन रेलवे, लखनऊ के स्वामित्व में है, जिसकी नवइयत **कृषि योग्य बंजर भूमि** की है।
9. इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आराजियात नम्बर 8 (आठ), 9 (नौ), 10 (दस) 11 (ग्यारह) तथा 12 (बारह) स्थित मौजा किला कोहना, परगना देहात अमानत, तहसील सदर, जिला वाराणसी में अखिल भारत सर्व सेवा संघ तथा नार्दन रेलवे, लखनऊ सह-हिस्सेदार है।
10. क्रयशुदा जायदाद का सीमांकन नहीं होने के कारण मौके पर कई बार असुविधाजनक एवं भ्रामक स्थिति पैदा हो जाती है।
11. दिनांक 02.12.2020 ई. को श्रीमान् एसडीएम, (सदर) वाराणसी, सर्व सेवा संघ की क्रयशुदा जायदाद यानी आराजी नम्बर 8 (आठ) पर आकर उसका समतलीकरण कराने लगे, जिसका विरोध करने पर उनके द्वारा जाहिर किया गया कि चूंकि सर्व सेवा संघ द्वारा क्रयशुदा जायदाद की नवइयत **कृषि योग्य बंजर भूमि** की है, लिहाजा वह राज्य सरकार की सम्पत्ति मानी जायेगी।
12. एस.डी.एम. महोदय द्वारा अगले दिन यानी दिनांक 03.12.2020 ई. को सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों को अपने कार्यालय में कागजात सबूत के साथ बुलाया गया तो उनके समक्ष सभी तथ्यों को विस्तारपूर्वक रखने के साथ-साथ उन्हें उक्त बैनामा की छायाप्रति व खतौनी की छायाप्रति प्रदान की गयी, परन्तु इसके बावजूद वे उक्त बैनामा के प्रभाव को मानने से इनकार कर रहे हैं और बलपूर्वक दिनांक 02.12.2020 ई. से सर्व सेवा संघ द्वारा क्रयशुदा आराजियात पर मनमाना एवं अनधिकृत तरीके से कब्जा दखल नाजायज किये हुए हैं, जिसका उन्हें कानूनन कोई हक व अधिकार प्राप्त नहीं है।
13. दिनांक 23.01.2021 को स्थल माप हेतु आयी राजस्व टीम द्वारा स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि उक्त आराजी नं. 08 (आठ) के खाता सं. 33 के नाम मालिकान के कालम में अखिल भारत सर्व सेवा संघ का नाम दर्ज है।
14. प्रश्नगत आराजियात नम्बर 8 (आठ) का हस्तांतरण चैरिटी कमिश्नर, अंतर्गत महाराष्ट्र पब्लिक ट्रस्ट्स एक्ट 1950 की धारा 36 की अनुमति से ही किया जा सकता है।
15. उक्त संबंध में कई शिकायती प्रार्थना-पत्र श्रीमान जिलाधिकारी वाराणसी के कार्यालय में सर्व सेवा संघ की ओर से उपलब्ध कराया गया है, परन्तु **अभी तक उक्त शिकायती प्रार्थना-पत्रों पर कोई कार्यवाही नहीं की गयी है।**
16. इस तथ्य की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया जाना आवश्यक है कि राज्य सरकार द्वारा बजरिये एसडीएम, (सदर) वाराणसी द्वारा किये जा रहे उक्त नाजायज क्रिया-कलाप की वजह से प्रार्थी (ट्रस्ट) के भवनों के पानी के निकास को गिट्टी-सीमेंट द्वारा जबरस्ती अवरुद्ध कर दिया गया है, जिससे प्रार्थी को मौके पर असहज स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।
17. संस्था अपनी क्रयशुदा उपरोक्त आराजियात पर पूर्वानुसार कब्जा दखल वापस प्राप्त करने का अधिकारी है।
18. ऐसी अवस्था में संस्था द्वारा क्रयशुदा निम्नवर्णित आराजियात का सीमांकन कराने के साथ-साथ उन पर उसका वास्तविक कब्जा दखल कराया जाना अति आवश्यक एवं न्याय संगत है।

विवरण आराजियात

क्रम	आराजी नम्बर	रकबा
1.	08 (आठ)	2.65 एकड़
2.	09 (नौ)	4.44 एकड़
3.	10 (दस)	0.15 एकड़
4.	11 (ग्यारह)	0.16 एकड़
5.	12 (बारह)	1.30 एकड़

कुल 05 (पांच गाटा), रकबा 8.70 एकड़ मय पक्का कुंआ व पेड़, सभी स्थित मौजा किला कोहना, मोहल्ला राजघाट काशी, परगना देहात, अमानत तहसील सदर, जिला वाराणसी, जिसकी चतुर्दिक सीमायें निम्न हैं—

उत्तर- आराजी नम्बर-1 (उत्तर रेलवे की जमीन, जिसे बाद में प्रार्थी-ट्रस्ट द्वारा जरिये पंजीकृत बैनामा दिनांकित 20-05-1970 क्रय किया गया)

दक्षिण- संपर्क मार्क फाउण्डेशन फॉर न्यू एजुकेशन सोसाइटी

पूरब- आराजी नम्बर 18 एवं 19 स्थित मौजा सरैताबाद (प्रार्थी-ट्रस्ट की जमीन)

पश्चिम- जी. टी. रोड।

-रामधीरज

क्यों अडिग है किसान आंदोलन?

❑ अरविंद अंजुम

एक खबर से हम इस प्रश्न का जवाब तलाशने की शुरुआत कर सकते हैं। दुनिया का सबसे अमीर आदमी बिल गेट्स, अमेरिका का सबसे बड़ा भूस्वामी हो गया है। उसने 42 हजार एकड़ जमीन खेती के लिए खरीदी है। आप सोचें, कंप्यूटर का सॉफ्टवेयर बनाने वाला आदमी खेती की जमीन क्यों खरीद रहा है?

मनुष्य के जीवन के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है-हवा, पानी और अनाज। आजकल बढ़ते प्रदूषण के चलते वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो रही है। इसलिए सम्पन्न लोग अब अपने घरों, दफ्तरों, कारों में एयर प्यूरीफायर लगवा रहे हैं। घरों और कार्यालयों में ऑक्सीजन की संतुलित मात्रा बनाये रखने के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर लगा रहे हैं; अर्थात ऑक्सीजन,हवा की बिक्री शुरू हो चुकी है। पानी तो पहले से ही बिक रहा है। तीसरी जो सबसे जरूरी चीज है अनाज, उसे भी कॉरपोरेट के हाथ में एकमुश्त दे देने की योजना पर वैश्विक ताकतें काम कर रही हैं। बिल गेट्स जैसे कारपोरेट का इतनी बड़ी मात्रा में खेती की जमीन खरीदना इसी योजना का हिस्सा है। इसी योजना के तहत भारत की जनता पर ये तीन कृषि कानून भी थोपे गये हैं।

कृषि उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्द्धन और सरलीकरण) कानून

सरकार का दावा है कि किसान सरकारी मंडियों के बाहर भी अपनी उपज बेच सकेंगे और इस तरह वे आज़ाद हो जाएंगे। निजी खरीदारों से उन्हें बेहतर दाम भी मिलेगा। अभी भी देश में मात्र 6% अनाज ही सरकारी मंडियों में बेचा जाता है,बाकी 94% तो व्यापारी ही खरीदते हैं। क्या ये व्यापारी किसानों को उचित दाम देते हैं? धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रति क्विंटल 1868 रुपये है, पर सोनभद्र के किसानों को 1100 रु प्रति क्विंटल से ज्यादा नहीं मिला है।

किसान व्यापारियों को कम कीमत पर धान बेचने के लिए मजबूर हैं,क्योंकि यहां मंडियों की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। भारत में सिर्फ 5 हज़ार मंडियां हैं, जबकि यहां 42 हज़ार मंडियों की जरूरत है। प्रत्येक 5 किलोमीटर के दायरे में एक मंडी होनी चाहिए। सरकार दीर्घकाल में फायदा होने का भी दावा करती है। बिहार में एपीएमसी कानून 2006 में खत्म कर मंडियों को समाप्त कर दिया गया। अनाज खरीदी के लिए पैक्स बनाया गया, लेकिन 2020 में बिहार के कुल गेहूं उत्पादन का मात्र 1% ही खरीदा गया।

सरकार इस कानून के द्वारा अपनी मंडियों को समाप्त कर देगी और इसे कॉरपोरेट्स के हवाले कर देगी। कॉरपोरेट

आंदोलित किसान

मनमानी कीमत तय करेंगे और उसे खरीदेंगे। इस साल हिमाचल प्रदेश में अदानी एग्री फ्रेश कंपनी बागवानों को सेब का दाम पिछले वर्ष की तुलना में प्रति किलो 16 रु कम दे रही है। जियो सिम को तो आप भूले नहीं होंगे। पहले फ्री और अब 599 रुपये। किसानों के साथ भी यही होगा।

कृषि (सशक्तिकरण और संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा करार कानून

सीधी भाषा में इसे कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग या ठेका खेती कहा जा सकता है। इस कानून के जरिए ठेकेदार या कॉरपोरेट्स किसानों से निश्चित समय के लिए निश्चित कीमत पर खेती करने के लिए किराए पर जमीन ले सकेगा और उसमें मनमाने तरीके से खेती करेगा। अगर इस करार को लेकर कोई विवाद हुआ तो किसान न्यायालय भी नहीं जा सकेंगे, इस कानून के द्वारा यह सुनिश्चित किया गया है। एक अनुमंडल स्तर का अधिकारी ही ऐसे विवादों का निपटारा करेगा। आप समझ सकते हैं कि ये पदाधिकारी किसके पक्ष में रहेंगे, बड़े-बड़े ठेकेदारों के पक्ष में या साधारण किसानों के पक्ष में। इस तरह किसान अपनी ही जमीन पर दूसरे दर्जे का हो जाएगा,बेचारा बन जाएगा।

आवश्यक वस्तु संशोधन कानून

इस कानून के द्वारा खाद्यान्न के भंडारण पर लगी सीमा को समाप्त कर दिया गया है। सरकार का कहना है कि किसानों को इसका लाभ मिलेगा। अब इन हुक्मरानों से कौन पूछे कि कितने किसानों के पास गोदाम है? होगा यही कि फसल के आते ही कॉरपोरेट्स अनाज को सस्ते में खरीद कर अपने गोदामों में भर लेंगें। जमाखोरी द्वारा बाजार में बनावटी अभाव बनाएंगे और फिर ऊंची कीमत पर अनाज बेचेंगे।

वास्तव में इन तीनों कृषि कानूनों का उद्देश्य कृषि एवं अनाजों को कॉरपोरेट के हवाले करना है। कहा यह जा रहा है कि इससे कृषि क्षेत्र का मुनाफा बढेगा पर वह मुनाफा किसकी जेब में जाएगा, किसान इस बात को समझ गये हैं। इसलिए इन कानूनों को समाप्त कराने के लिए अडिग हैं।

पूर्वांचल और बिहार के किसान

यह सवाल भी उठाया जाता है कि जब पूर्वांचल और बिहार के किसान ज्यादा गरीब हैं,तो फिर वे आंदोलन क्यों नहीं कर रहे हैं? इस प्रश्न का इशारा यह है कि अपेक्षाकृत संपन्न होने के बावजूद अगर पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान आंदोलन कर रहे हैं, तो यह राजनैतिक उद्देश्यों से प्रेरित है।

देश में दो प्रकार के किसान हैं—विपन्न और खुशहाल किसान। बिहार, पूर्वांचल और

देश के अन्य कई हिस्सों में विपन्न किसान बसते हैं। विपन्न किसान परिवारों की नौजवान पीढ़ी देश के विभिन्न शहरों में जाकर मजदूरी करती है और घर के वृद्ध बची-खुची खेती - बारी संभालते हैं। इन इलाकों में न्यूनतम समर्थन मूल्य प्राप्त करने के लिए मंडियां नहीं हैं। इन्होंने कभी अपने अनाज मंडियों में नहीं बेचे और न ही उसके लाभ के अभ्यस्त हुए। इसलिए आज जब एमएसपी खत्म किया जा रहा है, तो इनको कोई फर्क नहीं पड़ता। इन गरीब किसानों में न तो कुछ खोने का एहसास है और न ही बेहतर जीवन की आकांक्षा। इसलिए यहां के किसान आंदोलनरत नहीं है। यहां आंदोलन तभी हो सकता है, जब किसान अपनी तरक्की की चेतना और संकल्प से लैस हों।

किसान, आंदोलन के अलावा और क्या करें?

भारत में 14 करोड़ किसान परिवार हैं। इनके जीवन में सुधार से ही समाज और अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। खेती बहुत हद तक स्वायत्त, आत्मनिर्भर और आज़ाद क्षेत्र है। लेकिन खेती भी धीरे-धीरे खाद, बीज, कीटनाशक,उपकरण,डीजल, बिजली इत्यादि के मामले में बाजार पर निर्भर होती गयी है। इन सामानों के उत्पादक इनका दाम तय करते हैं। खेती की लागत बढ़ रही है। अनाज, सब्जी, फल, दूध, मांस-मछली, जड़ी-बूटी इत्यादि का उचित दाम नहीं मिलता है, क्योंकि इसका मूल्य-निर्धारण किसान नहीं, बाजार करता है। बाजार मुनाफाखोरों और व्यापारियों के हाथ में है। ये कानून उन पर लगे प्रतिबंधों को और कम करेंगे।

इसलिए किसान अभी खेती के क्षेत्र में जो कर रहे हैं, उससे आगे बढ़कर उन्हें उद्यमशीलता अपनानी होगी। किसान अभी सिर्फ उत्पादन करते हैं;जबकि किसानों को उत्पादन के साथ-साथ भंडारण, प्रसंस्करण, वितरण और मूल्य निर्धारण भी करना है। खेती के नये-नये तरीके ढूंढने हैं, बीजों को उन्नत बनाना है, शोध करना है, पानी की व्यवस्था करनी है, खेती की लागत को कम करना है, यह सब करके ही बाजार और सरकार की खोटी नीयत का मुकाबला किया जा सकता है। ❑

8 सितंबर : शहादत दिवस

क्रांतिवीर गंगू मेहतर

स्वाधीनता संग्राम में अनेक क्रांतिवीरों के नाम आज तक लोगों के सामने नही आये हैं। उन्हीं में से एक नाम 'गंगू मेहतर' जैसे वीर का भी है। 1857 की क्रांति के वीर योद्धा गंगू मेहतर से अंग्रेज़ों की हुकूमत थर्राती थी। उन्हें हथकड़ियाँ और पैरों में बेड़ियाँ पहनाकर जेल की काल कोठरी में रखा गया था और कड़ा पहरा लगा दिया गया था।

गंगू मेहतर ने लगभग 150 अंग्रेजों को मारा और जब वह पकड़े गये तो अंगेजों ने उन्हें घोड़े में बाँधकर पूरे शहर में घुमाया और लगभग मरणासन्न अवस्था में कानपुर के चुन्नीगंज में एक पेड़ पर फाँसी दे दी। गंगू मेहतर नाना साहब पेशवा की सेना में नगाड़ा बजाते थे।

कानपुर में चुन्नीगंज चौराहे के पास सड़क किनारे गंगू मेहतर की एक बहुत छोटी-सी प्रतिमा लगी हुई है। वहाँ पर उन्हीं के समाज के लोग प्रतिवर्ष उनकी याद में मेला लगाते हैं। देश को आज़ाद करवाने की ख़ातिर उन्होंने अपना सर्वस्व देश पर न्योछावर कर दिया, अंग्रेज़ों की क्रूरता को हंसते-हंसते झेला और फांसी के फंदे को स्वाभिमान के साथ हंसते-हंसते ही चूम लिया।

ऐसे बहादुर योद्धा गंगू मेहतर की वीरता और शहादत को नमन!

प्रस्तुति : क्रांति कुमार कटियार

9 सितंबर : जंयती

अवतार सिंह संधू पाश

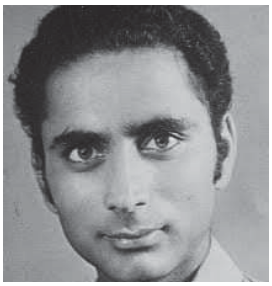

दुनिया में ऐसे बहुत कम कवि हुए होंगे, जिनकी हत्या उनकी कविताओं की वजह से कर दी गयी हो। ऐसे एक नाम है, अवतार सिंह संधू 'पाश'। पाश की आलोचनात्मक और क्रांतिकारी कविताओं तथा खालिस्तानी व्यवस्था पर तीखे सवाल करने के कारण खालिस्तानी आतंकवादियों ने मात्र 23 वर्ष की आयु में 23 मार्च 1988 को लुधियाना स्थित उनके गांव तलवंडी सलेम में उनकी हत्या कर दी। हत्या के बाद भी पाश के विचार और उनकी कविताएं नहीं मरे, बल्कि अजर-अमर होकर लोगों के दिलों में आज भी कहीं न कहीं जिंदा हैं। इसी कारण नामवर सिंह, पाश की तुलना स्पेन के प्रसिद्ध कवि लोर्का से किया करते थे, जिनकी हत्या जरनल फ्रैंकों ने उनकी कविताओं की वज़ह से करवा दी थी।

मात्र 20 वर्ष की आयु में ही पाश का पहला काव्य-संग्रह 'लौह कथा' प्रकाशित हो गया था। पाश ने अपने छोटे से जीवन-काल में लगभग सभी विषयों पर कविता लिखी। जिंदगी पर हों, प्रेम पर हों, आक्रोश पर हों चाहे क्रांति पर हों, उनकी कविताएं जीवन की सच्चाई को बखूबी बयां करती हैं।

बेशक पाश पंजाबी कवि थे, लेकिन उनको और उनकी कविताओं को हिंदी में भी पढ़ने और पसंद करने वाले बड़ी संख्या में हैं। उनकी प्रसिद्धि कभी कम नहीं हुई। वे आज भी लोगों के दिलों में क्रांतिकारी कवि के रूप में स्थापित हैं। जिस दिन खालिस्तानियों ने पाश की हत्या की थी, 1931 में ठीक उसी दिन 23 मार्च को शहीदे आजम भगत सिंह को फांसी दी गयी थी। भगत सिंह लेनिन को अपना आदर्श मानते थे और पाश भगत सिंह को। इन दोनों में एक और समानता यह है कि दोनों की हत्या फासिस्टों द्वारा ही की गयी। एक ओर भगत सिंह को ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता ने मारा तो दूसरी ओर पाश को खालिस्तानी फ़ासिस्टों ने मारा।

पाश की कविताएं बेहद संवेनशील हैं और जीवन की वास्तिवकताओं से भरी पड़ी हैं। ये कविताएं हमें पढ़ने को मजबूर करती हैं। उनकी कविताएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी तब थीं, जब लिखी गयी थीं। उनकी स्मृति को हम प्रणाम करते हैं।

-अजय कुमार

घातक है अहिंसात्मक आंदोलनों की अनदेखी

❑ डॉ. स्नेहवीर पुण्डीर

किसान आन्दोलन को चलते हुए छह माह से भी अधिक समय हो गया है। यह आन्दोलन ऐतिहासिक रूप लेता जा रहा है। यह कई अर्थों में अपनी शुरुआत से ही ऐतिहासिक है। किसान इस देश में बहुसंख्या में रहते हैं और वह सभी धर्मों, क्षेत्रों और जातियों से हैं। इस आन्दोलन के सांझे चूल्हे और लंगरों में सामाजिक दूरियाँ छूमन्तर होती दिखायी देती हैं, किसान आन्दोलन ने जातीय और धार्मिक दूरी को कम करने का भी काम किया है। इस आन्दोलन की एक विशिष्टता यह भी है कि किसानों ने मुख्यधारा की मीडिया को आइना दिखाकर अपना वैकल्पिक मीडिया खड़ा करके, आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों और बड़े नेताओं द्वारा निकाले गये अपने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की याद ताजा करा दी है। अपने बहुत से साथियों को खो देने और लाखों लोगों द्वारा लगभग नौ माह से भी अधिक समय से लगातार गर्मी, बरसात और सरकार की उपेक्षा झेलने के बावजूद इसका अहिंसक स्वरूप, धैर्य और अनुशासन इस आंदोलन की एक बड़ी विशेषता है।

महात्मा गांधी दुनिया के पहले सफल अहिंसक आंदोलनकारी थे। उन्होंने दुनिया को सन्देश दिया कि सत्य को अन्यायपूर्ण या असत्य तरीकों से नहीं पाया जा सकता। इसी तरीके को समझाने के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह पर जोर दिया। अगर आप सत्य में विश्वास करते हों और उसे पाने की परवाह करते हों तो गांधीजी कहते थे कि आप निष्क्रिय नहीं रह सकते, आपको सत्य के लिए दुख उठाने के लिए सक्रिय तौर पर तैयार रहना होगा। अहिंसा विपक्षी को चोट पहुंचाये बिना सत्य को साबित करने का तरीका है, बल्कि इसके लिए खुद चोट खायी जा सकती है। गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए यही रास्ता चुना और यह प्रभावी भी रहा।

डॉ. सुशीला नैय्यर द्वारा लिखित पुस्तक 'कारावास की कहानी' में उल्लिखित आगा खां महल में बंदी बनाकर रखे गये गाँधी जी से सम्बन्धित एक वाकया भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी और कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों को अंग्रेजों द्वारा मुंबई में 9 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिया गया था। गिरफ्तारी के बाद गांधी जी को पुणे के आगा खां पैलेस में दो साल तक नजरबंद रखा गया। आगा खां पैलेस में बंदी महात्मा गाँधी ने अंग्रेजी नीतियों के विरुद्ध इक्कीस दिन के अनशन की घोषणा की। अनशन की इस खबर ने देश के बहुत से लोगों और अंग्रेजी सरकार को भी परेशान कर दिया। देश के तमाम बड़े नेताओं ने गाँधी जी से इतने लम्बे अनशन पर नहीं बैठने की प्रार्थना की। लेकिन उन्होंने अपना अनशन शुरू कर दिया। जैसे जैसे दिन बढ़ते गये, वैसे वैसे गाँधी जी की हालत बिगड़ती गयी। एक दिन गाँधी जी के स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँच के लिए आने वाली चिकित्सकों की टीम ने जांच के बाद पाया कि गांधी जी की हालत लगातार बिगड़ रही है, जो उनके लिए जानलेवा भी साबित हो सकती है। टीम का एक अंग्रेज डॉक्टर गाँधी जी की हालत से बहुत व्यथित होकर उनके कमरे के सामने चहलकदमी करने लगा। गाँधी जी ने अंग्रेज डॉक्टर से पूछा कि क्या वह कुछ कहना चाहते हैं? इसके जवाब में अंग्रेज डॉक्टर गाँधी जी के पैरों में बैठकर फफककर रो पड़े और बोले कि आप यह अनशन समाप्त कर दीजिये, आपकी जान को खतरा है और इस दुनिया को आप जैसे सच्चे और नेक इंसान की बहुत जरूरत है। यह एक सत्याग्रही का आत्मिक और नैतिक बल था, जिसने उनके विरोधी के दिल में भी संवेदनाएं पैदा कर दीं।

वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में जनता से यह उम्मीद की जाती है कि वह अपना कोई भी आन्दोलन या प्रदर्शन अहिंसात्मक और संवैधानिक तरीकों से करे। शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का अधिकार हमारा संविधान देश के नागरिकों को प्रदान करता है। लेकिन यह एक अत्यधिक गंभीर और खतरनाक प्रश्न हो सकता है कि अगर सत्ता अहिंसात्मक विरोध प्रदर्शन को सम्मान ही न दे, तो आम जनता के पास चारा क्या बचता है? स्वाभाविक है कि सरकारों का ऐसा काम आम लोगों के अहिंसात्मक आंदोलनों और लोकतंत्र में भरोसे को कम करने का काम करेगा, जिससे हिंसात्मक लड़ाइयों का पक्ष मजबूत होगा, जो किसी भी व्यवस्था और सभ्यता के लिए हितकर नहीं हो सकता।

गांधी जी की अहिंसात्मक नागरिक अवज्ञा की ताकत यह कहने में निहित है कि 'यह दिखाने के लिए कि आप गलत हैं, मैं खुद को दंडित करूंगा।' लेकिन इसका उन लोगों पर कोई असर नहीं होता, जो इस बात को मानते ही नहीं हैं कि वे गलत हैं, या जो लोग असहमति के अधिकार में विश्वास ही नहीं रखते और पहले से ही उनके साथ असहमति की वजह से आपको दंडित करना चाहते हैं। नैतिकता के बिना गांधीवाद का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था का अस्तित्व ही असहमति के अधिकार पर टिका हुआ है। यह भी एक दुखद तथ्य है कि गत कुछ दशकों में पूंजी की ताकत ने संवेदनात्मक सरोकारों को खत्म कर दिया है। दुनिया में पूंजी ने सरकारों को बिचौलिया और नागरिकों को बाजार बना दिया है।

सरकार को यह समझना चाहिए कि यह प्रश्न अहम का नहीं, अपितु लोकतंत्र पर आम आदमी के भरोसे का है। यह भी समझना आवश्यक है कि एक तरफ आजादी के बाद के सभी हिंसात्मक आंदोलनों को दरकिनार करके, सरकारें लोकतान्त्रिक तरीकों से अपनी मांग करने पर जोर देती रही हैं। दूसरी तरफ अगर लाखों लोगों के इतने कष्ट और बलिदान को भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था से चुनी गयी सरकारें सम्मान नहीं देंगी तो क्या व्यवस्था खुद अहिंसात्मक लड़ाइयों का रास्ता बंद करने का काम नहीं कर रही है? हमें विचार करना होगा कि अहिंसात्मक आंदोलनों को गंभीरता से नहीं लेकर कहीं हम तालिबानियों जैसे सशस्त्र विद्रोह को सही सिद्ध करने का काम तो नहीं कर रहे हैं। ❑

गरीबी एक सुविचारित परियोजना का हिस्सा है

❑ किशन गिरि गोस्वामी

यह बात अब तमाम आंकड़ों से जाहिर हो गयी है कि दशकों तक मन-बेमन से गरीबी के खिलाफ चली जंग के बावजूद भारत में दिशा पलट चुकी है।

इस साल मई में 'भारत में श्रमिकों की अवस्था' शीर्षक से जारी अजीम प्रेम जी युनिवर्सिटी की रिपोर्ट में बताया गया है कि कोरोना महामारी के पहले वर्ष में ग्रामीण भारत की गरीबी में 15% और शहरी क्षेत्र में 20% की बढ़ोत्तरी हुई। इससे 21 करोड़ लोग फिर से गरीबी रेखा के नीचे चले गये हैं, जो बड़ी जद्दोजहद के बाद उससे बाहर निकले थे।

इस साल मार्च में अमेरिकी रिसर्च एजेंसी 'पिड रिसर्च सेंटर' ने अपने सर्वे के आधार पर बताया कि 2020 में भारत के मध्यम वर्ग से 3 करोड़ 20 लाख लोग फिसल कर नीचे चले गये। यानी भारत के मध्यम वर्ग का आकार एक-तिहाई सिकुड़ गया।

ये आंकड़े किसी संयोग का परिणाम नहीं हैं, बल्कि ये वर्तमान सरकार की नीतियों एवं प्राथमिकताओं का नतीजा है। कभी एनएएच एस-5 में दिखे ट्रेंड की एक उचित व्याख्या अर्थशास्त्री अरविन्द सुब्रह्मण्यम ने की थी कि कुपोषण में बढ़ोत्तरी असल में मोदी सरकार की 'नयी' जन कल्याणकारी नीतियों का परिणाम है। उन्होंने बतलाया कि 'न्यू वेल्फयरिज्म' का मतलब ऐसे कल्याणकारी कार्यों से है, जो वोटरों को प्रत्यक्ष रूप से दिखे और जिनका फौरी फायदा उन्हें मालूम हो।

मोदी सरकार ने शौचालय निर्माण, उज्ज्वला योजना के तहत रसोई गैस के कनेक्शन, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, सड़क निर्माण और किसानों को नकदी ट्रांसफर आदि योजनाओं को तरजीह दी। इन कार्यक्रमों से सत्ताधारी दल के लिए फायदे की बात यह है कि उनसे जितने लोग लाभान्वित होते हैं, उनसे कई गुना ज्यादा लोगों में यह आस जगायी जा सकती है कि जल्द ही ऐसे प्रत्यक्ष लाभ उन तक भी पहुंचेंगे। ये लाभ कौन दे रहा है, यह संदेश भी उन्हें बेलाग दिया जा रहा है। जाहिर है कि मतदान के समय इन

मतदाता समूहों की पसंद उससे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है।

बहरहाल मोदी सरकार का विशेष योगदान यह है कि उसने 'गरीबी' और 'रोजगार' जैसे अहम मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श से बाहर कर दिया है, जबकि पहले की सरकारों पर इन मुद्दों की जवाबदेही की स्थिति बनी रहती थी। मोदी के दौर में भाजपा हिन्दू-मुस्लिम के अपने डिस्कोर्स से राजनीति एवं अर्थव्यवस्था के बीच संबंध विच्छेद करने में सफल हो गयी है। ऐसे में एक दुखी व्यक्ति को (जिसके दुखी बने रहने की परिस्थितियां लगातार गंभीर होती जा रही हैं) प्रचार तंत्र के व्यापक उपयोग से यह समझाना आसान हो गया है कि देश प्रगति कर रहा है और इसके लाभ देर-सबेर उस तक भी पहुंचेंगे। विगत 7 साल से यही विमर्श देश का प्रमुख विमर्श है। जरा याद करें, देश में गरीबी के पैमाने को लेकर आखिरी सार्वजनिक बहस कब हुई थी? आज हकीकत यह है कि जब ये बहस ही नहीं है, तो बहुत कम लोग हैं, जो गरीबी बढ़ने या घटने से चिन्तित हों या इस मुद्दे में उनकी दिलचस्पी हो। यहां यह उल्लेख करना जरूरी है कि भारत में गरीबी मापने का अपनाया गया पैमाना हमेशा 'न्यूनतम' रहा है।

मनमोहन सरकार द्वारा बनाया गया 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी' कानून आज भी गरीबों के लिए एक सहारा बना हुआ है। तब इस कानून के तहत रोजगार की गारंटी मिल जाने के कारण गांवों व शहरों में मजदूरी की दर बढ़ने लगी थी। इससे धनी तबकों में भारी नाराजगी देखी गयी थी। यूपीए से नाराजगी और उसके खिलाफ छेड़े गये कॉरपोरेट वार के पीछे के कारण थे - मनरेगा, वनाधिकार कानून और ऐसी ही अन्य योजनाएं। आखिर इसके पीछे क्या सोच झलकती है?

सोच यह है कि गरीब को तो गरीब ही रहना चाहिए। तभी संपन्न तबकों और 'निवेशकों' को सस्ते और झुककर काम करने वाले मजदूर मिलते रहेंगे। ऐसे लाभ उन्हें मिलने पर उनकी मजबूरियां कम होंगी, तब वे आत्मसम्मान व बेहतर जिन्दगी के सपने देखने लगेंगे। वास्तव में अगर 'बुनियादी मानवीय विकास' का ढांचा खड़ा होता है, तो उससे जिन्दगी सस्ती और आसान होती है। मसलन अगर बच्चों की शिक्षा मुफ्त हो और मुफ्त या सस्ते इलाज का आश्वासन हो, तो कम कमाई में भी एक परिवार आराम की जिन्दगी जीने की स्थिति में होता है। परंतु नवउदारवाद में यह पहलू नकारात्मक समझा जाता है। ये अनुभव सिर्फ भारत के ही नहीं, बल्कि विकसित देशों के भी हैं।

आजादी के बाद भारत द्वारा अपनायी गयी अर्थव्यवस्था से गरीबों के सशक्तीकरण की राह प्रशस्त हुई थी। उसका परिणाम आजादी के 40-50 साल बाद दिखना भी शुरू हुआ था। मगर तभी पहले तो नवउदारवाद की नीतियां अपना ली गयीं और फिर 'न्यूनतम सरकार' का वादा करते हुए मोदी के नेतृत्व वाली सरकार सत्ता में आ गयी। ऐसे घोर नवउदारवादी नारे में यकीन करने वाली इस सरकार की 'पालिटिकल इकॉनामी' से वाकिफ कोई भी व्यक्ति समझ सकता है कि अगर देश में गरीबी व कुपोषण बढ़े हैं, तो उसका कारण क्या है।

'नोटबंदी' का भी आखिर यही परिणाम हुआ था कि गरीबों और निम्न मध्यम वर्ग की कमर एकबारगी टूट गयी थी। इसीलिए कई जानकार उसे गरीब तबके से धनी वर्ग के हाथ में पैसा ट्रांसफर करने की योजना मानते हैं। जीएसटी और उसके साथ परोक्ष करों एवं सेस के बढ़ते गये दौर से भी इसी तरह का ट्रांसफर हो रहा है। इसलिए गरीबी बरकरार रहना विवेकशील लोगों को भले ही चिन्ताजनक लगे, परंतु असलियत यह है कि यह एक सुविचारित परियोजना का हिस्सा है। यह परियोजना जब तक राजनतिक रूप से कामयाब है, बदहाली की कहानियां हमारे आसपास यूं ही बनी रहेंगी। ❑

कृषि क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा निजी क्षेत्र है

❑ बरून मित्रा

सन 2003 में अटल बिहारी वाजपेई की एनडीए सरकार ने कृषि उपज बाजार समिति (एपीएमसी) बनाई थी. तब से 22 राज्य, बाजार समिति (मंडी) कानूनों में सुधार कर निजी मंडियां ले आये हैं। केरल के पास एपीएमसी कभी नहीं थी। वहीं बिहार ने 2006 में एपीएमसी कानूनों को खत्म कर दिया था। इसके साथ ही 18 राज्यों ने फल और सब्जियों के व्यापार संबंधी एपीएमसी कानून को खत्म कर डाला. 2018 में केन्द्र सरकार ने मॉडल कॉन्ट्रैक्ट कानून बनाया. इस कानून ने संकेत दिया कि केंद्र ने खेती को राज्यों का विषय माना है. खेती अपनी प्रकृति में ही स्थानीय गतिविधि है और इसके प्रति विकेंद्रित रुख रखना चाहिए. लेकिन नये कृषि कानूनों ने संविधान की नयी व्याख्या सामने रख दी है।

दर्जनों सरकारी रिपोर्टों में पिछले दो दशकों में कृषि सुधार के अनेक पक्षों पर अनेक सुझाव आये हैं, पर ऐसी चालाकी करने का सुझाव कभी किसी ने नहीं दिया है। एक देश एक बाजार के नाम पर, नया कानून दो श्रेणी के बाजारों को मान्य कर रहा है. कानून की इस चालाकी ने दशकों से चली आ रही इस साझेदारी को कम करके आंका है. समझदारी यह रही है कि कृषि प्राथमिक तौर पर राज्यों का विषय है. इसलिए इन कानूनों में सुझाये गये संशोधन तब तक कम पड़ेंगे, जब तक संवैधानिक आधार स्पष्ट नहीं होते. इस कानून से भारत के संघीय ढांचे पर और टैक्स लगाने की शक्ति पर असर पड़ेगा. सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों के पक्ष में जाकर ऐसी कई कोशिशों को कई बार रोका है.

केन्द्र बनाम राज्य

केंद्रीकरण केंद्र और राज्य सरकारों के लिए ताकत के दुरुपयोग का रास्ता होता है। 1951 की सरकार ने यह वादा किया था कि 9वें शेड्यूल के बचाव के अधीन कोई कानून नहीं रखा जायेगा। शुरू में 13 कानूनों को नाइंथ शेड्यूल में रखा गया था, धीरे-धीरे इसमें 284 कानून आ गए. इसी तरह राष्ट्रद्रोह का कानून आजादी के बाद, इस शर्त पर बनाये रखा गया कि आजाद भारत में इसे बहुत कम लागू किया जाएगा. परंतु इसका इस्तेमाल गुलामी काल के शासन से ज्यादा किया जा रहा है. इसी तरह नये कृषि कानूनों के जरिये खेती पर केंद्रीकृत नियंत्रण किया जाना है.

उदारीकरण का मतलब होता है विकेंद्रीकरण और सत्ता का विलोपन. इस तरह बाजार से संबंधित सुधारों के नाम पर सत्ता का केंद्रीकरण विरोधाभासी है। लोगों को और राज्य सरकारों को इसके खिलाफ अपने-अपने हाईकोर्ट में जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट को इसमें तेजी लाने का सुझाव उच्च न्यायालय को देना चाहिए। इस तरह से ही हाईकोर्ट विविध पक्षों की सुनवाई कर सकता है। हाईकोर्ट की सुनवाई के आधार पर सुप्रीम कोर्ट को रूलिंग देनी चाहिए।

बिजली कानून में प्रस्तावित बदलाव

नया बिजली कानून यह कहता है कि किसान बिजली बिल पहले अदा करें और फिर वह राज्य सरकारों द्वारा दी गयी राहत (सब्सिडी) को वापस लें. खेती के लिए कई राज्यों में सस्ती बिजली की योजनाएं हैं। इस कानून का परिणाम मुद्रा के भारी चलन के रूप में होगा। इसे सीधा लाभ हस्तांतरण कहते हैं। इसके अलावा कई जगह खेती कोई दूसरा करता है और मीटर मालिक के नाम से होता है या कई खेतों का पटवन बिजली के एक ही मीटर से होता है।

कॉन्ट्रैक्ट खेती

कॉन्ट्रैक्ट खेती में भी सीधा लाभ बाधक होगा, कानूनी कॉन्ट्रैक्ट खेती में अन्य भी बाधाएं हैं। इसके लिए किसान को अपने सारे कागजात, बंटवारे आदि को पक्का करना होगा, जो अभी तक आपसी समझदारी से चलता रहा है। अभी 20 से 50 प्रतिशत तक कृषि मुख्य रूप से अनौपचारिक कॉन्ट्रैक्ट में है। नए कॉन्ट्रैक्ट खेती का नया कानून व्यावहारिक नहीं है।

कृषि उत्पादन और मुक्त व्यापार में बाधा

सबसे पहली बाधा यह है कि सरकार ने संसद में जिस तरह से कानून पास करवाया, उससे सरकार की विश्वसनीयता पर संदेह उपजता है. सरकार ने विदेश व्यापार कानून लगाकर प्याज के निर्यात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगायी थी. इस तरह प्याज के निर्यात के ऊपर रोक हर साल की कहानी है। बावजूद इस तथ्य के कि भारत में खपत से 50 प्रतिशत ज्यादा अनाज उपजाया जाता है और यहां पर स्तरीय भंडारण की सुविधा लगातार कम पड़ रही है।

जरूरी उत्पादनों के कानून (ECA) में संशोधन को समझा नहीं जा सकता है. क्योंकि इसने कई खास कृषि उत्पादों को अपनी लिस्ट से बाहर रखा है और कई कृषि जिंसों के लिए निजी व्यापारियों को जमा करने की सीमा से मुक्त कर दिया है। प्रश्न यह उठता है कि कुछ कंपनियाँ अनाज जमा करने की क्षमता बढ़ाने से विशेषाधिकार की स्थिति में रहेंगी. खाद्यान्न का उत्पादन पिछले दशकों में ज्यादा ही होता गया है. इस वजह से इनकी कीमतों में ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं होता है। यदि इन पर से अनिवार्य वस्तु कानून (ECA) को हटा लिये जाने संबंधी अनिश्चितता रही, तो कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव होगा. सब्जी और फलों का उतार-चढ़ाव 100 से 300 प्रतिशत तक होता है। इनमें से 40 प्रतिशत तक बर्बादी भी हो जाती है।

एमएसपी का मसला

नये कृषि कानून की वजह से न्यूनतम समर्थन मूल्य से ध्यान हट जायेगा। बावजूद इसके कि कानून पर कुछ लिखा नहीं गया। हरित क्रांति से भारत भोजन की कमी से निकलकर खाद्यान्न की प्रचुरता वाला देश बना। जन वितरण प्रणाली भारत की अर्थव्यवस्था और भोजन का अनिवार्य अंग है। मंडी को कमजोर करने की कोशिश का असर इस ढांचे पर पड़ेगा।

कृषि बाजार और कॉन्ट्रैक्ट खेती पर दो दशक से बातें चल रही हैं और कई अध्ययन हुए हैं. आम सहमति यही है कि खेती और जमीन राज्य के विषय हैं. यदि किसानों में आपसी भेद पैदा करके कानून लादा जाता है, तब जो जरूरी सुधार है, उस पर से भी ध्यान हटेगा. कृषि सुधार बहुत जरूरी है और कोई भी देश अपनी आधी आबादी को केवल खेती पर निर्भर रख के तरक्की नहीं कर सकता है. इसलिए अभी इन कानूनों को लाने की जगह, राज्यों में कृषि सुधार का मौका बनने देना चाहिए।

(E-mail : mitra.bs@gmail.com) ❑

आधुनिक काल के संत फादर स्टेन स्वामी

❑ राम पुनियानी

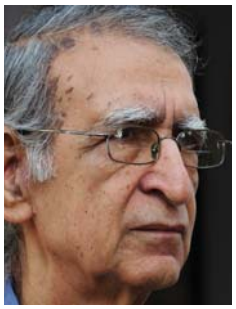

फादर स्टेन स्वामी को लगभग 8 माह पहले गिरफ्तार किया गया था। भीमा-कोरेगांव में हुई जिस घटना के सिलसिले में फादर स्टेन स्वामी को आरोपी बनाया गया था, वह 1 जुलाई 2018 को हुई थी। उस दिन सन् 1818 में पेशवा की सेना के साथ हुए युद्ध में मारे गए दलित योद्धाओं को श्रद्धांजलि देकर लौट रहे हजारों दलितों पर हमले हुए थे। भीमा-कोरेगांव युद्ध, पेशवा बाजीराव की सेना, जिसके अधिकांश सैनिक उच्च जातियों के थे और ईस्ट इंडिया कंपनी की महार-बहुसंख्यक सेना के बीच हुआ था। इस युद्ध में पेशवा की हार को दलितों ने जातिवादी ताकतों की पराजय के रूप में देखा और उसका उत्सव मनाया। युद्धस्थल पर एक विजय स्तंभ का निर्माण किया गया और हर साल 1 जुलाई को हजारों की संख्या मे दलित, ब्राह्मणवादी ताकतों की पराजय का उत्सव मनाने वहां पहुंचने लगे। बाबासाहेब अंबेडकर ने भी सन् 1928 में भीमा-कोरेगांव पहुंचकर दलित सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की थी। भीमा-कोरेगांव का विजय स्तंभ, दलितों के लिए एक प्रतीक था, वहां जाकर वे अपने आपको सशक्त महसूस करते थे।

2018 में इस युद्ध के दो सौ साल पूरे होने पर लाखों दलितों ने वहां पहुंचकर दलितों के उत्थान और ब्राह्मणवादी शक्तियों के पतन के संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की थी। दलितों पर हमले के तुरंत बाद, दो हिन्दुत्ववादी नेताओं, संभाजी भिड़े और मिलिंद एकबोटे के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी। जस्टिस पी. बी. सावंत और जस्टिस कोलसे पाटिल ने भीमा-कोरेगांव में एलगार परिषद का आयोजन किया था। बाद में इस प्रकरण की जांच राज्य सरकार से लेकर एनआईए को सौंप दी गई।

एनआईए ने कहा कि हिंसा की योजना माओवादियों ने बनाई थी और एक के बाद एक कई लोगों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। इनमें शामिल थे सुरेन्द्र गार्डलिंग, वरनान गौंसालवेस, अरुण फरेरा, सुधा भारद्वाज और शोमा सेन। आरोप यह लगाया गया कि ये लोग सरकार का तख्ता पलट करना चाहते थे और प्रधानमंत्री मोदी की हत्या की योजना बना रहे थे। गिरफ्तार लोगों को 'शहरी नक्सल' बताया गया, अर्थात ऐसे लोग, जो शहरों में रहकर नक्सली गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हैं। इस मामले में एनआईए ने अब तक अपने आरोपों के समर्थन में कोई सबूत प्रस्तुत नहीं किया है। हां, ऐसे सबूत अवश्य सामने आए हैं जो आरोपों का खोखलापन दर्शाते हैं।

अमरीकी कंपनी आर्सनेल कंसल्टिंग के अनुसार रोना विल्सन और सुरेन्द्र गार्डलिंग के लैपटाप में कथित पत्र एक षड़यंत्र के तहत बाद में डाले गये थे। अदालत ने इस तथ्य का संज्ञान नहीं लिया है। इस मामले में केवल क्रांतिकारी कवि वरवरा राव को स्वास्थ्य कारणों से 6 माह की जमानत दी गयी है।

स्टेन स्वामी को जमानत नहीं मिल सकी। वे पार्किन्सन डिजीज से पीड़ित थे। उन्हें पानी और चाय पीने लिए सिपर तक उपलब्ध नहीं कराया गया। स्टेन स्वामी ने जेल से एक पत्र लिखा, जिसका शीर्षक था 'पिंजरे के पंछी भी गा सकते हैं'। उन्होंने लिखा कि जेल में बंद अन्य कैदी हर तरह से उनकी मदद कर रहे हैं, परंतु उनके शरीर की स्थिति खराब होती जा रही है। इसके काफी दिनों बाद अदालत ने एक सामुदायिक अस्पताल में उनका इलाज करवाने की इजाजत दी। उन्हें जमानत फिर भी नहीं दी गयी। इस बीच उन्हें कोरोना भी हो गया, जिससे वे और कमजोर हो गये। उनकी मृत्यु पर भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया भर के अनेक मानवाधिकार संगठनों ने शोक व्यक्त किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार उच्चायोग के कार्यालय और यूरोपीय यूनियन के मानवाधिकार प्रतिनिधि ने भी उनकी मृत्यु पर गहरा दुःख और चिंता व्यक्त की है।

फादर स्टेन, झारखंड के आदिवासियों के बीच काम करते थे। भाजपा सरकार इस राज्य की अमूल्य प्राकृतिक संपदा को आदिवासियों से छीनकर उद्योग जगत के कुबेरपतियों के हवाले कर रही थी। इसका विरोध करने वाले हजारों आदिवासियों को जेल की सलाखों के पीछे धकेल दिया गया था। फादर स्टेन स्वामी, आदिवासियों के साथ मजबूती से खड़े थे। उन्होंने लिखा था, 'अगर आप इस तरह के विकास का विरोध करते हैं तो आप विकास विरोधी हैं; जो विकास विरोधी हैं, वे सरकार विरोधी हैं और जो सरकार विरोधी हैं, वे राष्ट्र विरोधी हैं। यह बहुत स्पष्ट समीकरण है। यही कारण है कि सरकार मुझे माओवादी कहती है यद्यपि मैं माओवादियों के तरीकों का विरोधी हूं और मेरा उनसे कोई लेना-देना नही है।'

फादर स्टेन स्वामी उस दल के सदस्य थे, जिसने 2016 में झारखंड में आदिवासियों की स्थिति पर एक रपट तैयार की थी। इस रपट का शीर्षक था, 'प्राकृतिक संसाधनों पर अपने अधिकारों से वंचित आदिवासियों को मिल रही है जेल'। उनका जीवन अत्यंत सादा था। वे आदिवासियों के बीच रहते थे और उनके अधिकारों के लिए लड़ते थे।

स्टेन स्वामी के साथ जो कुछ हुआ, वह हमारी न्यायपालिका की असंवेदनशीलता को भी दर्शाता है। उन पर प्रधानमंत्री की हत्या का षड़यंत्र रचने का अत्यंत अविश्वसनीय आरोप था। दरअसल स्टेन स्वामी की गिरफ्तारी प्रतिरोध की आवाजों को कुचलने का प्रयास थी। उन लोगों की आवाज को, जो महात्मा गांधी के शब्दों में आखिरी पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े हैं। आज की सरकारों की कृपादृष्टि पहली पंक्ति में सबसे आगे खड़े लोगों पर है।

इस महान व्यक्ति की तुलना केवल उन संतों से की जा सकती है, जो न्याय और नैतिकता के हिमायती थे। फादर स्टेन की संस्थागत हत्या हमें याद दिलाती है कि कैसे इस देश में हमेशा से संतों को सत्ताधारियों के हाथों प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा है, जिससे हमारे देश और हमारी संस्कृति का कद छोटा ही होता है। फादर स्टेन स्वामी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अन्याय के खिलाफ आवाज उठायें और प्रजातांत्रिक मूल्यों के हनन का पुरजोर विरोध करें। ❑

किसान स्वराज यात्रा

डब्ल्यूटीओ के एजेंडे से बाहर हो भारत की खेती

❑ राजेन्द्र सिंह

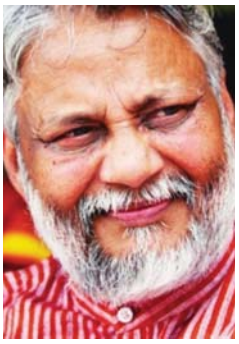

भारत की 'किसानी' व्यापार नहीं, बल्कि संस्कृति है। संस्कृति व्यापार नहीं हो सकती। डंकल प्रस्तावों के माध्यम से खेती को विश्व व्यापार संगठन की सूची में सम्मिलित किया गया, यह भयानक अपराध था। अब नये परिदृश्य में विश्व व्यापार संगठन ने व्यापार में खेती को सबसे ऊपर शामिल कर लिया है। इसको रोकने के लिए भारत भर में सर्वोदय समाज, पर्यावरण, सामाजिक, प्रकृति और पुनर्जनन के कार्यों में लगे हुए कार्यकर्ताओं, संस्थानों व भारत के सर्वोदय संगठनों ने यह माँग उठायी थी कि यूरोप तथा अमेरिका की खेती भारत जैसी नहीं है। वहाँ की खेती को यहाँ की खेती से अलग करके देखा जाना चाहिए, लेकिन उस काल में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के दबाव में यह बात स्वीकार नहीं की गयी और खेती को उद्योग के दायरे में शामिल कर लिया गया।

पिछले 9 महीनों से किसान आंदोलन भारत भर में चल रहा है। अन्नदाता दिल्ली के चारों तरफ सड़कों पर पड़ा है। भारत सरकार राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठनों के दबाव में आकर किसानों की बात नहीं सुन रही है। सरकार का चरित्र भारत में तानाशाह जैसा है, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत कमजोर दिखायी दे रहा है। सरकार की इस कमजोरी का फल किसानों को भुगतना पड़ रहा है। भारत सरकार को विश्व व्यापार संगठन को अपनी सच्चाई बताकर इससे बाहर हो जाना चाहिए था। अभी भी वक्त है, सरकार को इस दिशा में कुछ पहल करनी चाहिए।

वर्तमान सरकार झूठ बोलकर इसे सत्य बनाने के प्रयास में लगी है। किसानों को यह झूठ मंडियों में दिख रहा है। अब किसानों को ही इन कानूनों को रद्द करा के नया कानून बनवाने हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ, खासकर विश्व व्यापार संघ पर दबाव डालने की जरूरत है। किसान जो कर रहे हैं, वे उसी को करते रहें और कॉलेज में पढ़ने वाले छात्र व छात्राएँ, विश्व व्यापार संगठन व संयुक्त राष्ट्र संघ का घेराव करें, तभी भारत की खेती और संस्कृति बची रह सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के विकास अधिकार, बाल अधिकार, आदिवासी अधिकार प्रस्ताव, सतत् विकास लक्ष्य 2015 के पेरिस एग्रीमेंट, पृथ्वी शिखर सम्मेलन-21 आदि अन्य प्रस्तावों में यह बात स्वीकार की गयी है कि जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण एवं मानवता के विरुद्ध कोई भी ऐसा काम नहीं किया जाये, जिससे जलवायु परिवर्तन का संकट और बढ़े, समुद्र का तल ऊपर उठे, बे-मौसम अकाल-बाढ़ व हरियाली घटे तथा तापक्रम बढ़े।

यह सब परिस्थिति खेती के औद्योगीकरण व बाजारीकरण ने बनायी है। इस नयी बनती पारिस्थिति को हम संगठित होकर व समझकर रोकें और भारत के पुनर्निर्माण हेतु खेती को प्रतिष्ठा दिलाने का काम करें। हमारे चंद उद्योगपतियों को भारत में कंपनी राज चलाने से रोकने की जरूरत है। यह किसान आंदोलन के नैतिक समर्थन व ऊर्जा से ही संभव होगा, लेकिन इस काम को करने के लिए अब भारत के सभी शैक्षणिक संस्थानों को एकजुट होकर भारतीय कृषि संस्कृति एवं पर्यावरण की रक्षा के कार्यों में लगने की जरूरत है।

यदि भारत की खेती को विश्व व्यापार संघ के एजेंडे से बाहर नहीं किया गया तो तेजी से अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण का प्रभाव बढ़ेगा। इससे विनाश तेजी से बढ़ेगा और फिर भारत का पुनर्निर्माण संभव नहीं होगा। पुनर्निर्माण की शुरुआत खेती को संस्कृति बनाने से ही संभव है। कृषि के तीनों कानून रद्द कराने से ही हमारी खेती और संस्कृति बचेगी।

एक अच्छी खबर यह है कि तमिलनाडु सरकार ने 'चेन्नई किसान सम्मेलन' के बाद कृषि के तीनों कानूनों को नकार दिया है। पंजाब, राजस्थान आदि कुछ राज्य इन्हें पहले ही नकार चुके हैं। अब समय है कि भारत के सभी राज्य इसे नकारें। इस प्रकार के वातावरण के निर्माण हेतु किसान स्वराज यात्रा शुरू हो रही है। किसान आन्दोलन अब उन सभी राज्यों की राजधानियों में शुरू होगा, जिन राज्यों ने अभी तक इन कानूनों को नकारा नहीं है। इसकी शुरुआत 'किसान स्वराज यात्रा' करेगी। जिन राज्यों ने इन्हें रद्द कर दिया है, उन्हें इस यात्रा में बधाई भी दी जायेगी और इस आंदोलन में शहीद हुए किसानों के घर पहुँचकर कृतज्ञता भी प्रकट की जायेगी।

जल संकट, नदी संकट, बेरोजगारी व किसान आंदोलन के अनुकूल वातावरण के निर्माण और विस्तार हेतु 'किसान स्वराज यात्रा' का निर्णय चेन्नई किसान सम्मेलन में लिया गया है। इस सम्मेलन के बाद ही तमिलनाडु सरकार ने तीनों कृषि कानूनों को अपने राज्य में लागू नहीं करने का प्रस्ताव विधानसभा में पारित किया।

संयुक्त किसान मोर्चा द्वारा चल रहे किसान आन्दोलन को पूरे भारत के किसानों से ऊर्जा मिले, इस हेतु 2 अक्टूबर 2021 से 26 नवंबर 2021 तक 'किसान स्वराज यात्रा' चलेगी। यह यात्रा किसानों के हित में संयुक्त किसान मोर्चा के आन्दोलन को राष्ट्र व्यापी बनाने का प्रयास है।

जिन कानूनों और नीतियों के कारण संकट बढ़ रहा है, उनके विरुद्ध भारत के किसानों-मजदूरों ने संगठित होकर जो आवाज उठायी है, उस आवाज को बल देने वाले इस यात्रा में एक होकर जुटें और अपने-अपने राज्यों में आंदोलन शुरू करें। ❑

सोनभद्र

फ्लोराइड और प्रदूषण से हजारों बीमार

(प्रशासन की आपराधिक लापरवाही)

❑ जगतनारायण विश्वकर्मा

सोनभद्र जिले के दक्षिणांचल में चोपन, म्योरपुर, बभनी और दुद्धी ब्लॉक के फ्लोराइड प्रभावित 269 गाँवों में लगे लगभग 11 सौ रिमूवल प्लांट प्रशासनिक अनदेखी के कारण निष्क्रिय होकर जंक खा रहे है। जल निगम के सूत्रों की मानें तो 2011 से 2015 के बीच जल निगम द्वारा चिंहित किये गये हैंडपंपों में प्रत्येक हैंडपंप पर पौने तीन लाख रुपये की लागत से रिमूवल प्लांट स्थापित कराये गये थे। इससे काफी हद तक लोगों को फ्लोराइड युक्त पानी से राहत मिल रही थी। लेकिन जल निगम के अधिकारियों की अनदेखी और उपेक्षा से नाराज जिला प्रशासन ने रिमूवल प्लांट की देखरेख और मरम्मत का कार्य 2018 में ग्राम पंचायतों को सौंप दिया। जानकारी और जागरूकता के अभाव में ग्राम पंचायतों ने रिमूवल प्लांट की मरमत ही नहीं करायी और अब लगभग सभी रिमूवल प्लांट बन्द पड़े हैं। अनदेखी का आलम यह है कि डीपीआरओ विशाल सिंह कहते हैं, जानकारी जुटा रहा हूँ कि रिमूवल प्लांट मरम्मत कराये जा रहे हैं या नहीं। वहीं सहायक अभियंता अनिल मौर्या को यह जानकारी तक नहीं कि कितने रिमूवल प्लांट लगाये गये थे और उन पर कितनी लागत आयी थी।

अगस्त 2018 में सोनभद्र (दक्षिणांचल) के लोगों में फ्लोराइड की मात्रा, मानक 1.5 ग्राम प्रति लीटर से 16 गुना ज्यादा खतरनाक स्थिति में पायी गयी थी। लखनऊ स्वास्थ्य महानिदेशालय को 18 गाँवों में जांच के बाद यह जानकारी मिली, वहीं पीएसआई देहरादून, सीइसई दिल्ली तथा एनजीटी की कोर कमेटी की जांच में हैंडपंपों, तालाबों और नदियों के पानी की जांच में फ्लोराइड के साथ मर्करी, आर्सेनिक तथा सीसा जैसे अन्य घातक तत्व भी पाये गये हैं, जो लोगों के स्वास्थ्य को खराब कर रहे हैं। सोनभद्र के पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी एसपी सिंह की मानें तो चार ब्लॉकों में लगभग 10 हजार फ्लोरोसिस के मरीज हैं और दो हजार से ज्यादा गंभीर स्थिति में हैं। पीएसआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनिल गौतम का कहना है कि फ्लोराइड मनुष्य की हड्डियों के कैल्शियम को कमजोर करता है, जिससे हड्डियां टेढ़ी हो जाती हैं और लोग विकलांग हो जाते हैं। फ्लोराइड युक्त पानी पीने से जो बीमारी होती है, उसे फ्लोरोसिस कहते हैं। फ्लोरोसिस की यह बीमारी हड्डियों को ही नहीं, रिश्तों को भी खोखला कर रही है। पड़वा कोड़वारी, नई बस्ती तथा कुड़वा गंभीरपुर, गोविन्दपुर की युवा लड़कियों और लड़कों के अभिभावक इस बात से चिंतित हैं कि इनके हाथ कैसे पीले करें। किशोर उम्र में ही दांत पीले और हड्डियां टेढ़ी हो जा रही हैं। लोग गांव का नाम सुनते ही शादी से इनकार कर देते हैं। 2015 से ही बिस्तर पकड़े विजय शर्मा अपनी पीड़ा बताते हुए कहते हैं कि हमारा जो हुआ, वह हाल बच्चों का न हो, यह चिंता सता रही है। शांति देवी को अपनी बेटी की शादी को लेकर चिंता सता रही है। मासूम बच्चे, जिनकी उम्र खेलने-कूदने और स्कूल जाने की है, वे ठीक से बैठ नहीं पा रहे हैं, क्योंकि हड्डियां टेढ़ी हो गयी हैं। एनजीटी ने जगतनारायण विश्वकर्मा और अश्विनी कुमार दुबे बनाम यूनियन ऑफ इंडिया, जनहित याचिका की सुनवाई के बाद पीड़ितों की नियमित जांच और पूरक पोषण देने का आदेश दे रखा है, लेकिन उन्हें यह सुविधा भी नहीं मिल रही है। डॉ. गौतम कहते हैं कि फ्लोरोसिस का कोई इलाज नहीं है, लेकिन अच्छे खान पान और शुद्ध पानी के सेवन से इनकी परेशानी कम हो सकती है।

कहां से आता है फ्लोराइड

क्षेत्र में फ्लोराइड जमीन के नीचे चट्टानों की सतह पर प्राकृतिक रूप से मैजूद है, लेकिन सबसे ज्यादा प्रभाव उद्योगों से निकलने वाले फ्लोराइड से पड़ा है। कोयले के जारण से हवा में उड़कर भी यह सतही जल को प्रभावित करता है। जांच में पाया गया है कि तालाब, कुआं और बंधी आदि में भी इसकी मात्रा मानक से ज्यादा है।

सिंगरौली परिक्षेत्र के उद्योगों में प्रतिदिन लगभग 3 लाख 26 हजार टन कोयला जलाकर लगभग 2150 मेगावाट बिजली पैदा की जाती है, जो देश में कुल बिजली उत्पादन 2 लाख 10 हजार मेगावाट का लगभग बीसवां हिस्सा है। इतना कोयला जलाने से 30 हजार किग्रा फ्लोराइड, 100 किग्रा पारा, 1400 किग्रा आर्सेनिक, 1900 किग्रा क्रोमियम तथा 1220 किग्रा निकल प्रतिदिन निकलता है, जो राख और हवा तथा धूलकणों के माध्यम से खेतों, तालाबों, कुओं और नदियों में फैलता है।

सिंगरौली परिक्षेत्र में 13 कोयला खदानों और 5 एनटीपीसी के साथ ओबरा, अनपरा आदि यूपी तापीय परियोजनाएं स्थित हैं। वहीं, बड़ी संख्या में क्रशर तथा एल्यूमीनियम, कार्बन, सीमेंट और अन्य केमिकल फैक्ट्रियां मौजूद हैं, जो प्रदूषण के प्रमुख कारक हैं। गांधी विचारधारा से जुड़ा सामाजिक संस्थान 'वनवासी सेवा आश्रम' गोविन्दपुर, प्रदूषण की गंभीर समस्याओं को लेकर 1996 से ही आवाज उठाता रहा है। समस्या के समाधान के लिए आश्रम ने अनेक विचारगोष्ठियों का आयोजन किया तथा विभिन्न संस्थानों और केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के साथ मिलकर कई बार हवा, पानी, मिट्टी आदि की जांच करवायी।

आश्रम की मंत्री शुभा प्रेम का कहना है कि उद्योगों का संचालन तय मानकों और कानूनी प्रक्रियाओं के दायरे में हो, तो इतनी बुरी स्थिति नहीं होगी। वे कहती हैं कि क्षेत्र में भार वहन क्षमता का आंकलन भी किया जाना चाहिए। आखिर एक ही क्षेत्र में इतनी बड़ी संख्या में भारी उद्योगों की स्थापना क्यों की जानी चाहिए? आंकड़ों से साफ है कि यह क्षेत्र विनाश के मुहाने पर खड़ा है। 2014 में सीएससी, दिल्ली के एक अध्ययन में यहां के रहवासियों में मर्करी की मात्रा खतरनाक स्तर पर पायी गयी थी, सरकारों और जनप्रतिनिधियों को यह सब दिखायी नहीं पड़ रहा है। ❑

भूदान यज्ञ समिति के गठन को चुनौती

झारखंड सरकार को उच्च न्यायालय की नोटिस

सर्व सेवा संघ प्रकाशन विभाग के संयोजक और झारखंड भूदान यज्ञ समिति के सदस्य अरविंद अंजुम की रिट पिटीशन संख्या 2649/2020 की सुनवाई 16.09.2021 को माननीय झारखंड उच्च न्यायालय में माननीय न्यायाधीश राजेश शंकर की अदालत में हुई। अरविंद अंजुम, जिन्हें झारखंड सरकार ने अधिसूचना 4355/2019 के तहत झारखंड भूदान यज्ञ समिति का मनोनीत सदस्य नियुक्त किया है, ने झारखंड सरकार की उक्त अधिसूचना को ही चुनौती देते हुए माननीय उच्च न्यायालय से दरख्वास्त की थी कि उक्त अधिसूचना को निरस्त किया जाये, क्योंकि झारखंड सरकार ने भूदान की पांच सदस्यीय समिति में झारखंड के तीन सेवानिवृत प्रशासनिक अधिकारियों को नियुक्त किया है, जो बिहार भूदान यज्ञ अधिनियम, 1954 के प्रतिकूल है।

अरविंद अंजुम ने अपनी रिट में सानुरोध याचना की थी कि भूदान आंदोलन आचार्य विनोबा भावे ने शुरू किया था और जब तक वे जीवित रहे, तब तक भूदान यज्ञ अधिनियम के तहत स्वयं इसके एप्रोप्रियेट अधिकारी बने रहे और दान में मिली जमीनों का भूमिहीनों में वितरण उनके ही अधिकार क्षेत्र में चलता रहा। अरविंद अंजुम ने अपनी याचिका में आगे कहा था कि आचार्य विनोबा भावे ने अपनी मृत्यु से पूर्व ये अधिकार क्षेत्र सर्व सेवा संघ को वसीयत कर दिया, इसलिए सरकारों को सर्व सेवा संघ द्वारा सुझाये लोगों को भूदान की समितियों में शामिल करना होता है। ज्ञातव्य है कि सर्व सेवा संघ अरविंद अंजुम सहित नौ सदस्यों का नाम झारखंड सरकार को अनुमोदित कर चुका है।

अरविंद अंजुम ने अपनी याचिका के मार्फत यह भी सानुरोध याचना की थी कि भूदान की समिति झारखंड में 2002 में बनी और सरकार ने 2010 तक समिति के कर्मचारियों के मानदेय और संचालन के खर्चे को वहन किया है। उन्होंने निवेदन किया कि पिछले दस सालों से समिति के कर्मचारियों को कोई मानदेय नहीं मिला है और इससे कर्मचारियों के समक्ष भुखमरी का खतरा पैदा हो गया है, खासतौर पर कोरोना लॉकडाउन के दौरान और उसके बाद उनकी हालत बहुत खराब हो गयी है। उन्होंने अदालत के समक्ष साक्ष्य सहित यह निवेदन किया कि कर्मचारियों के मद में 1.92 करोड़ रुपये बकाया हो गये हैं। उन्होंने यह भी निवेदन किया कि प्रशासनिक अधिकारियों के चलते भूदान समिति का कामकाज आरंभ ही नहीं हो सका है।

माननीय अदालत ने अरविंद अंजुम के अधिवक्ता अखिलेश श्रीवास्तव की दलीलें सुनने के बाद सरकार को नोटिस जारी किया है। बहस में अधिवक्ताद्वय रोहित सिन्हा और आकाश शर्मा भी शामिल रहे।

भूदान यज्ञ समिति, झारखंड : दो वर्षों का यात्रावृत्त

8 नवंबर 2019 को हाईकोर्ट,रांची के आदेश के बाद झारखंड भूदान यज्ञ कमेटी का पुनर्गठन अक्टूबर, 2020 में हुआ। इस कमेटी में चेयरमैन सहित पांच सदस्य हैं, जिनमें 3 पूर्व नौकरशाह और 2 सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

इसमें से एक सदस्य,धर्मेंद्र पांडेय आज तक एक भी बैठक में शामिल नहीं हुए हैं और न ही इस्तीफा दिया है। भूदान यज्ञ कमेटी की नियमित बैठकें नहीं होती हैं। जो बैठकें हुई हैं, उनका भी मिनट्स सर्कुलेट नहीं हुआ है और न ही उसकी पुष्टि हुई है। झारखंड भूदान यज्ञ कमिटी का पहले से ही स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंद्रपुरी रातू रोड शाखा में अकाउंट है। अकाउंट में नये हस्ताक्षरी का नामांतरण नहीं हुआ है। इस कारण वह खाता अचल (डेड) है।

2020 में सरकार द्वारा भूदान यज्ञ कमेटी को 25 लाख रुपए का अनुदान दिया गया, लेकिन अकाउंट का संचालन नहीं होने के चलते रकम का कोई उपयोग नहीं हो पा रहा है। कमेटी की ओर से किसी प्रकार के अनुदान की मांग सरकार से नहीं की गयी है। कमेटी के पुनर्गठन के बावजूद कर्मचारियों को वेतन नहीं मिला है। सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पीएफ की रकम भी नहीं मिल पायी है, क्योंकि पीएफ का अकाउंट अध्यक्ष और कर्मचारी के संयुक्त हस्ताक्षर से संचालित होता है। बैठकों के नियमित न होने, खाते का संचालन तथा कार्यालयों के सक्रिय न होने के चलते भूमि वितरण का मूल काम नहीं हो रहा है।

झारखंड में 1469280 एकड़ जमीन दान में प्राप्त हुई थी, जिसमें से मात्र 497020 एकड़ जमीन वितरित हुई है। आधे से अधिक 771204 एकड़ जमीन अभी भी बची हुई है।

भूदान घोटालों की जांच कराने की मांग

तेलंगाना सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष आर शंकर नायक ने राज्य सरकार से भूदान भूमि घोटालों की जांच के लिए उच्च न्यायालय के मौजूदा न्यायाधीश के नेतृत्व में जांच आयोग की स्थापना करने की मांग की है।

एक प्रेस कान्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि भूदान आंदोलन के दौरान तेलंगाना में अमीर जमींदारों द्वारा लगभग 1,77,333 एकड़ भूमि स्वेच्छा से दान की गयी थी, जिसमें से तत्कालीन सरकार ने भूमिहीन गरीबों को कुछ भूमि वितरित की थी। लेकिन भूदान यज्ञ बोर्ड और पिछली राज्य सरकारों ने एक लाख एकड़ से अधिक भूमि वितरित करने में कोई रुचि नहीं ली। 2014 में एस.के. सिन्हा राजस्व कार्यबल समिति ने भूदान भूमि एवं अन्य सरकारी भूमि घोटालों की जांच के लिए भूमि हड़पने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और भूमि को जब्त करने के लिए सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी थी। लेकिन छह साल बाद भी राज्य सरकार ने भूदान भूमि के कब्जे पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया और अभी भी उदासीन रवैया प्रदर्शित किया जा रहा है।

उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि कुछ सब-रजिस्ट्रार और जोनल रेवेन्यू अधिकारियों ने हैदराबाद सहित सभी जिलों में भूदान की करोड़ों रुपये की जमीन निजी पार्टियों को हस्तांतरित करने के लिए भूमि हड़पने वालों के साथ मिलीभगत की थी और राज्य में अभी भी कब्जा चल रहा है। सर्व सेवा संघ कार्यसमिति ने भूदान भूमि की रक्षा के लिए कई वर्षों तक तेलंगाना के मुख्यमंत्री से बार-बार आग्रह किया, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। भूदान आंदोलन की भावना को बनाये रखने के लिए उन्होंने मांग की कि मुख्यमंत्री को भूदान भूमि जैसे गंभीर मुद्दे पर तुरंत हस्तक्षेप करना चाहिए और शेष भूमि को भूमिहीन गरीबों में तुरंत वितरित करना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि तेलंगाना सर्वोदय मंडल ने भूदान भूमि के समाधान तथा तत्काल कार्रवाई के लिए राज्य के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, राजस्व सचिव, सीसीएलए आयुक्त और सभी जिला कलेक्टरों को ज्ञापन सौंपे थे। ज्ञापन में सर्व सेवा संघ के सुझाव पर भूदान यज्ञ बोर्ड पुनर्गठित करने, भूदान भूमि से अतिक्रमण को एक निश्चित समय में बेदखल करने, भूदान भूमि योग्य पात्र को वितरित करने, गलत तरीके से फर्मों को आवंटित की गयी भूदान भूमि को वापस लेने, तेलंगाना भूदान यज्ञ बोर्ड में नये प्रावधानों को समाप्त करने और केन्द्र सरकार से अपील कर भूदान भूमि विवादों को निपटाने के लिए फास्ट ट्रैक अदालतें शुरू करने की मांगें की गयी थीं। **-आर. शंकर नायक**

देश भर के गांधीजनों ने मनायी विनोबा जयंती

11 सितंबर को दिल्ली स्थित राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के सभागार में विनोबा जयंती के अवसर पर देश भर के गांधीजनों— अमरनाथ भाई, आशा बोथरा, सवाई सिंह, राजेन्द्र सिंह आदि ने उनके चित्र पर सूतों की माला पहनाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चंदन पाल ने कहा कि विनोबा जी के अनुसार युद्ध की अनुपस्थिति का मतलब शांति नहीं है,बल्कि भय की अनुपस्थिति से शांति आती है। आज चारों ओर भय का वातावरण है, जिसे निर्भयता के संकल्प और कार्यक्रम के माध्यम से दूर करना सर्वोदय आंदोलन का दायित्व है। हम इस कर्तव्य के निर्वाह के लिए प्रतिबद्ध हैं।

वयोवृद्ध गांधीवादी अमरनाथ भाई ने कहा कि विनोबा का व्यक्तित्व हिमालय की शांति और बंगाल की क्रांति का समन्वय है। उन्होंने कहा कि भूदान और ग्रामदान युगांतर विचार और घटना है, जिसने समाज को एक हद तक बदला है।

सर्वोदय समाज के संयोजक पीवी राजगोपाल ने कहा कि वन अधिकार कानून, भूअर्जन-पुनर्वास कानून 2013 को भूदान-ग्रामदान के विस्तार और निरंतरता में देखा जाना चाहिए। जमीन की समस्या के समाधान के बारे में विनोबा जी ने तीन तरीके बताए थे— करुणा, कानून और कत्ल। विनोबा जी ने कत्ल का रास्ता खारिज कर करुणा का रास्ता अपनाया। अब कई कानूनों के जरिये जनता को भू-अधिकार मिले हैं, इसे भूलना नहीं चाहिए।

दिल्ली में आयोजित विमर्श में रमेश दाने, डॉ विश्वजीत, गौरांग महापात्र, रवीन्द्र सिंह चौहान, रामधीरज भाई, अशोक भारत, शुभा प्रेम, भगवान सिंह, शंकर नायक, शेख हुसैन, खम्मनलाल शांडिल्य, सुखपाल सिंह, प्रदीप खेलुलकर,संतोष द्विवेदी, अरविंद अंजुम, अविनाश काकड़े, सोपान जोशी, राकेश रफीक, जौहरीमल वर्मा आदि शामिल हुए।

संत विनोबा की जयंती पर वेबीनार गोष्ठी का आयोजन

गांधी स्टडी सर्कल द्वारा संत विनोबा भावे की जयंती के अवसर पर 11 सितंबर को जोधपुर के शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमदान, पुष्पांजलि, सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। वेबीनार गोष्ठी के प्रारंभ में विनोबा के चित्र पर सूतांजलि अर्पित कर अशोक चौधरी ने सर्वधर्म प्रार्थना, नाम माला का पाठ कराया एवं भूदान आंदोलन के समय विनोबा द्वारा गाया जाने वाला गीत 'बोल रहा है संत विनोबा करके ऊंची बांह रे...' गाया। डॉ. संतोष छापर ने संत विनोबा का जीवन परिचय बताते हुए कहा कि वे भारत की एक दर्जन से अधिक भाषाओं के ज्ञाता थे। गांधी के सत्याग्रह को उन्होंने आगे बढाया तथा भू-दान के माध्यम से क्रांतिकारी काम किया, देश के भूमिहीनों को भूमि प्रदान करने के लिए भूदान आंदोलन चलाया। उन्हें 42 लाख एकड़ से अधिक भूमि दान में मिली। बुद्धि पटेल ने संत विनोबा द्वारा स्थापित ब्रह्म विद्या मंदिर, पवनार के संस्मरण साझा किए और कहा कि विनोबा ने गीता प्रवचन, आष्टादशी जैसी पुस्तकें लिखीं। इसके बाद इकबाल, राधिका, गणपत, आरिफ, सीमा और मनीष ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में गांधीजनों, सर्वोदय मित्रों, भारतीय लोक शिक्षण मंच, महाराज श्री राजाराम कलबी किसान युवा मंडल, जीएसडीपी स्टूडेंट्स एल्यूमिनी एसोसिएशन तथा अखिल राजस्थान विश्नोई युवा मंडल के कार्यकर्ताओं की भागीदारी रही। **-राधिका**

नगला मंदिर में विनोबा जयंती

प्राइमरी पाठशाला, नगला मन्दिर तथा क्षेत्रीय श्री गांधी आश्रम, नारखा सराय में विनोबा जी की जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सर्वोदय मंडल शाखा के संयोजक जय भारत ने विनोबा जी के भूदान आंदोलन पर प्रकाश डाला। समाज सेवी बहन आशा राठौर और कल्याण प्रसाद शर्मा ने गाँधी दर्शन पर विचार व्यक्त किये। गोष्ठी में जय भारत, सावित्री, विद्यावती, राजकुमारी, बृजपाल, शशि प्रभा, मनोज, रामअवतार मिश्र, महेंद्र पाल सिंह, रेनू, धर्मेंद्र पाल सिंह एडवोकेट, राज रानी साहू, धर्मवीर सिंह, सर्वोदय मंडल के जिला अध्यक्ष, अरविंद कुमार, विद्याराम यादव तथा जयप्रकाश ने सूतांजली अर्पित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कल्याण प्रसाद शर्मा ने व मंच का संचालन जय भारत द्वारा किया गया। **- जय भारत**

उन्नाव में विनोबा जयंती

सर्वोदय मंडल उन्नाव द्वारा आयोजित आचार्य विनोबा भावे की जयंती का कार्यक्रम डॉ राम मनोहर लोहिया विद्यालय के सभागार में डॉक्टर रामनरेश के मुख्य आतिथ्य एवं वरिष्ठ साहित्यकार नसीर अहमद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे नवयुग जन चेतना के संस्थापक/अध्यक्ष व ग्राम विकास अधिकारी संघ पुरवा के ब्लॉक अध्यक्ष पुत्तन लाल पाल ने आचार्य विनोबा भावे के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद अपने उद्बोधन में कहा कि महापुरुषों की जयंती मनाने के पीछे एक मकसद होता है कि हम उनके किये गये अच्छे कार्यों को याद करें और उनके बताए हुए रास्ते पर चलें, तभी उनकी जयंती मनाना सार्थक होगा।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संचालक रघुराज मगन ने आचार्य विनोबा भावे के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य जी ने पूरे भारत में जहां अस्सी हजार किलोमीटर पैदल यात्रा करके जमीदारों से 48 लाख एकड़ जमीन दान में प्राप्त की, वहीं स्वयं की 450 एकड़ जमीन भी भूमिहीन गरीबों में दान की थी, जिसे इतिहास हमेशा याद रखेगा। सर्वोदय मंडल के महामंत्री मयंक आलोक, नसीर अहमद तथा डॉक्टर रामनरेश ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर विद्यालय के सैकड़ों छात्र-छात्राएं एवं शिक्षक मौजूद रहे। रघुनंदन यादव, राजेंद्र सिंह, रजनीश अनुपम तथा दिनेश नारायण अवस्थी भी इस जयंती कार्यक्रम के साक्षी बने। अंत में आयोजक राम सजीवन ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। **-रघुराज सिंह मगन**

दक्षिणांचल में विनोबा जयंती

विनोबा भावे की 127वीं जयंती गोविंदपुर स्थित बनवासी सेवा आश्रम के प्रांगण में मनायी गयी। कार्यक्रम की शुरुआत आश्रम के अध्यक्ष अजय शेखर द्वारा द्वीप प्रज्वलित करके किया गया।

वक्ताओं ने विनोबा के जीवन के रोचक किस्से बताये और भूदान आंदोलन के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। डॉ. विभा ने कहा कि वे इस युग के महान संत थे। विनोबा भावे के अनुसार विज्ञान और अध्यात्म से ही मानव जीवन का विकास संभव है। उन्होंने मौजूदा विकास मॉडल के दुष्प्रभाव की चर्चा भी की।

इस अवसर यज्ञनारायण भाई, नीरा बहन, लालजी, प्रदीप भाई, अभिषेक व विकास सहित अनेक सम्मानित कार्यकर्ता उपस्थित रहे। संचालन शिवशरण भाई ने किया। **-शिवनारायण**

समालखा में विनोबा जयंती

गांधी स्मारक निधि पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश और स्वाध्याय आश्रम, पट्टीकल्याणा, जिला पानीपत में संत विनोबा भावे की 126वीं जयंती मनायी गयी। इस

अवसर पर प्रभात फेरी निकाली गयी तथा श्रमदान किया गया। संत विनोबा भावे 1960 में पट्टीकल्याणा आश्रम में अपनी भूदान पदयात्रा के दौरान तीन दिन रुके थे। उस समय उनसे मिलने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी आये थे। बिनोबा जी ने ही इस आश्रम को स्वाध्याय आश्रम का नाम दिया। कार्यक्रम में स्वाध्याय आश्रम, पट्टी कल्याणा के सचिव आनंद कुमार शरण ने उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि गांधीजी के सत्याग्रह ने विनोबा जी को असाधारण प्रसिद्धि दी। बिनोबा जी का भूदान आंदोलन दुनिया को एक अद्भुत देन है। विनोबा जी को भारत के विभिन्न प्रांतों के लोगों ने लगभग पचास लाख एकड़ जमीन भूदान में दी थी। वे प्रत्येक जमींदार परिवार से यह कहते थे कि आप के जितने पुत्र हैं, उनमें से एक मुझे भी मान लो और बराबर बंटवारा करते हुए एक भाग मुझे भी दे दो।

कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर विकास सक्सेना ने किया। उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य बिनोवा भावे ने गीता को अपने शब्दों में गीता प्रवचन के रूप में लिखा है। उनकी यह पुस्तक विश्व प्रसिद्ध है और कई भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। उन्होंने बताया कि वह देश की आजादी के लिए कई बार जेल गए। जब वे धुलिया जेल में थे तो उन्होंने गीता प्रवचन दिया, जो आज भी उनकी महत्वपूर्ण देन है। इसे सभी को पढ़ना चाहिए। 87 वर्ष की आयु में 15 नवंबर 1982 को वे ब्रह्मलीन हो गये। इस अवसर पर गांधी स्मारक विधि के सभी कार्यकर्ता, साधक व साधिकाएं, प्राकृतिक जीवन केन्द्र के प्रशिक्षण पर आये विद्यार्थी व प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। **-आनंद कुमार शरण**

बरतारा में विनोबा जयंती

विनोबा सेवा आश्रम, बरतारा में 11 सितंबर को विनोबा की 126वीं जयंती मनायी गयी। विनोबा के चित्र पर सूतांजलि अर्पित करने के बाद जयंती समारोह के विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद एवं अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष नरेश यादव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बाबा का ग्राम स्वराज्य, ग्राम सशक्तीकरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने आवाहन किया कि हम सब गांव की तरफ लौटें और उसे बेहतर बनाने में अपना जीवन लगायें। राष्ट्रीय युवा योजना के चिंतक अजय पांडेय ने कहा कि विनोबा ने पदयात्रा और विचार से देश और दुनिया को नयी दिशा दी थी। विश्व युवक केन्द्र, दिल्ली के मुख्य कार्यकारी अधिकारी उदय शंकर ने कहा कि आज युवा जिस दिशा में जा रहा है, उसे रचनात्मक कामों में जोड़ने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सेवाधाम आश्रम, उज्जैन के संस्थापक सुधीर भाई गोयल ने कहा कि जिसने विनोबा को न देखा हो, वह यहां आकर बाबा के कामों को देखकर शिक्षा ग्रहण करे। उन्होंने विनोबा के जीवन निर्माण में उनकी मां रुकमणि देवी का स्थान सर्वोपरि बताया। कार्यक्रम में देश भर से 126 रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आश्रम में सर्वधर्म प्रार्थना, साफ-सफाई और श्रमदान कार्यक्रम में सभी द्वारा भाग लिया गया।

इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारी डॉ. एके शुक्ला, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी शाहजहांपुर, हरदोई के नवनीत गुप्ता, उपाध्यक्ष हरिजन सेवक संघ उत्तर प्रदेश, अवधेश मिश्रा, विश्वम्भर मलिक और पूना से पधारे कृष्ण सिद्धार्थ, उदय प्रताप सिंह, रवीन्द्रपाल सिंह व डॉ. आफताब अख्तर ने अपनी बात रखी। आश्रम के संचालक रमेश भइया के प्रति सबको प्रेरित करने और बाबा के विचारों से जोड़े रखने के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में ओमकार मनीषी, डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्रा, लखनऊ के राहुल अग्रवाल, अमरीश समवीना, डॉ. आफताब अखतर को सम्मानित भी किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के काबीना मंत्री सुरेश खन्ना कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

माध्यमिक शिक्षा परिषद, राजस्थान सर्वोदय विचार परीक्षा का आयोजन करेगा

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने राजस्थान राज्य गांधी स्मारक निधि के साथ मिलकर सर्वोदय विचार परीक्षा का आयोजन करने का निर्णय लिया है। यह परीक्षा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों और सिद्धांतों से रूबरू करवाने के लिए होगी। इसके लिए आवेदन 30 सितंबर तक निःशुल्क किये जा सकेंगे। परीक्षा दो सत्रों में होगी और नवंबर में करवायी जायेगी। पहले सत्र में कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थी व दूसरे ग्रुप में नवीं से 12वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थी शामिल हो सकेंगे। परीक्षा में 100 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे, जिन्हें 90 मिनट में हल करना होगा। इस परीक्षा के लिए राज्य के हर जिले में परीक्षा केन्द्र बनाये जायेंगे। परीक्षा का कोर्स महात्मा गांधी के जीवनवृत्त और उनसे संबंधित पुस्तकों से रहेगा। बोर्ड अध्यक्ष डॉ. डीपी जारोली ने बताया कि मुख्यमंत्री ने वर्ष 2021-22 के बजट में इस परीक्षा के आयोजन की घोषणा की थी और कहा था कि भविष्य में किसी भी प्रकार की छात्रवृत्ति व अन्य मेरिट आधारित प्रोत्साहन के लिए छात्र-छात्राओं को यह परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा। परीक्षा का कोर्स व पुरस्कारों की घोषणा गांधी जयंती 2 अक्टूबर को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत करेंगे। विद्यार्थी इस परीक्षा के लिए आवेदन अपने महाविद्यालय, विद्यालय प्रधानाचार्य के माध्यम से ऑनलाइन कर सकेंगे। **- स.ज. डेस्क**

हिन्दी दिवस पर रायबरेली में उपवास सत्याग्रह

14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के पूर्व अध्यक्ष और वयोवृद्ध सर्वोदयी रवीन्द्र सिंह चौहान ने अंग्रेजी की गुलामी के विरुद्ध एक दिन का उपवास सत्याग्रह किया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. राजेन्द्र बहादुर सिंह समाधि स्थल, रायबरेली में आयोजित इस एक दिवसीय सत्याग्रह में क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रवीन्द्र भाई ने कहा कि अपनी मातृभाषा के बल पर ही हमारा देश आत्मनिर्भर हो सकता है। मैं मातृभाषा/राष्ट्रभाषा में ही शिक्षा देने का हामी हूं। देशी-विदेशी भाषाओं का जितना अधिक ज्ञान हो, वह अच्छा है। मैं विदेशी भाषा अंग्रेजा) की गुलामी (अनिवार्यता) के विरुद्ध हूं।

-रवीन्द्र सिंह चौहान

राष्ट्रीय युवा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

सर्व सेवा संघ की युवा शाखा आजादी के 75वें वर्ष में राष्ट्रीय युवा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करने जा रही है। शिविर का आयोजन 20 से 24 सितंबर के बीच सेवाग्राम में किया जायेगा। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से देश के युवाओं को गांधी विचारधारा और सर्वोदय आंदोलन के मूल्यों से जोड़ने की कोशिश की जायेगी। आम जनजीवन को गांधीवादी मूल्यों के प्रभाव से सिंचित करने हेतु देश में युवाओं की एक मजबूत शक्ति खड़ी हो, ऐसी हमारी कोशिश है। हमें विश्वास है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य भूमि सेवाग्राम से प्रेरणा लेकर ये युवा सच्चे अर्थों में देश सेवा के काम से जुड़ सकेंगे। **-अजमत**

कुरुक्षेत्र से राजघाट पदयात्रा 21 सितंबर से 2 अक्टूबर

आजादी के अमृत जयंती वर्ष में बापू और विनोबा के सपनों को साकार करने और जयजगत के नारे को बुलंद करने के उद्देश्य से देश के युवा गांधीजनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने एक पदयात्रा का आयोजन करने का निर्णय लिया है। 21 सितंबर (विश्व शांति दिवस) को कुरुक्षेत्र से शुरू होने वाली इस पदयात्रा का समापन 2 अक्टूबर (विश्व अहिंसा दिवस) को गांधी समाधि, राजघाट, नई दिल्ली में होगा। बारह दिनों की इस यात्रा में युवा मुख्य रूप से कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, समालखा और सोनीपत होते हुए दिल्ली पहुंचेंगे और रास्ते भर शांति व अहिंसा का संदेश देंगे। यह यात्रा युवाओं के लिए एक संकल्प यात्रा होगी। पदयात्री किसी से भी कोई आर्थिक सहयोग नहीं लेंगे और अपना खर्च स्वयं वहन करेंगे।

-संजय शर्मा

ऑल इंडिया थिएटर कौंसिल का अधिवेशन

11-12 सितंबर 2021 को ऑल इंडिया थियेटर काउंसिल (एआईटीसी) का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन सह सांस्कृतिक महोत्सव वाराणसी में सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन का उद्घाटन कौंसिल के राष्ट्रीय संरक्षक अवधेश कुमार सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक मानव, राष्ट्रीय महासचिव सतीश कुन्दन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वय अशोक मेहरा व मो निज़ाम, राष्ट्रीय सलाहकार वशिष्ठ प्रसाद सिन्हा, शिवलाल सागर तथा सुरेन्द्र सागर की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। राष्ट्रीय संरक्षक अवधेश कुमार सिंह ने अधिवेशन को संबोधित करते हुए कहा कि रंगमंच तथा रंगकर्मीयों को बचाने के लिए कलाकारों को आगे आना होगा और रंगमंच को मजबूत करना होगा। अध्यक्षीय भाषण देते हुए अशोक मानव ने कहा कि अपने चार साल के कार्यकाल में कौंसिल का 4 राज्यों से 16 राज्यों तक विस्तार हुआ। आगे भी हम लोगों की लगभग 8 राज्यों के सक्रिय रंगकर्मी मित्रों से लगातार बातचीत जारी है। हमें उम्मीद ही नहीं, पूरा विश्वास है कि आने वाले दो सालों में पूरे भारत में एआईटीसी का विधवत गठन हो जाएगा। स्वागत भाषण उत्तर प्रदेश प्रभारी अष्टभुजा मिश्रा ने किया। वार्षिक प्रतिवेदन राष्ट्रीय महासचिव सतीश कुन्दन ने प्रस्तुत किया, जो एआईटीसी की दर्पण स्मारिका में प्रकाशित है। उन्होंने कहा कि एआईटीसी को देश भर के कलाकार आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। हम उनकी आशा को टूटने नहीं देंगे। हम जहां रंगमंच के लिए कार्यक्रम कर रहे हैं, वहीं कलाकारों के लिए आपदा राहत कोष का गठन कर उनकी मदद का एक रास्ता भी खोल रहे हैं। हम प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा से भी कलाकारों को जोड़ रहे हैं।

3 अप्रैल, विश्व हिन्दी रंगमंच दिवस के दिन देश भर के जरूरतमंद पांच कलाकारों को आर्थिक मदद पहुंचायी जायेगी। विभिन्न राज्यों में संगीत नाटक अकादमी का गठन, पाठ्यक्रम में नाटक को शामिल करने तथा नाटकों के शिक्षकों की बहाली करने हेतु आंदोलन करने का भी निर्णय लिया गया। **-सतीश कुन्दन**

गांधी स्टडी सर्कल के कार्यक्रम

गांधी स्टडी सर्कल व राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा वरिष्ठ गांधीवादी डॉ. एस. एन. सुब्बाराव के मार्गदर्शन व प्रेरणा से जोधपुर के शनिधाम स्थित विवेकानंद स्मारक पर 5 अगस्त को श्रमदान तथा सर्वधर्म प्रार्थना, कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जोधपुर के शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में झंडारोहण कार्यक्रमों में भागीदारी, संविधान के प्रति जागरूकता, संविधान की उद्देशिका का वाचन, श्रमदान तथा पौधारोपण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

19 अगस्त को साबरमती आश्रम की मूल संरचना को अक्षुण्ण रखने की मांग करते हुए राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन, जोधपुर संभागीय आयुक्त, जोधपुर जिला कलेक्टर तथा मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार को सौंपा गया। काका साहेब कालेलकर के पुण्यतिथि के अवसर पर 21 अगस्त को पुष्पांजलि, सर्वधर्म प्रार्थना, नाममाला पाठ व काका साहेब कालेलकर के जीवन पर विचार-विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संत राजाराम के जीवन दर्शन व नशामुक्ति पर 22 अगस्त को वेबीनार का आयोजन किया गया।

स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री नाथूराम मिर्धा की 25वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 30 अगस्त को जोधपुर में चौपासनी रोड, मिर्धा फार्म स्थित उनकी समाधि पर पुष्पांजलि, प्रार्थना कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

-संतोष छापर

अनुपम बाग और सिद्धराज ढड्ढा बाग का लोकार्पण

राजस्थान के अलवर में स्थापित तरुण भारत संघ आश्रम में पर्यावरणविद एवं गांधीवादी विचारक स्व. अनुपम मिश्र और स्व. सिद्धराज ढड्ढा की स्मृति में 5 सितंबर को 'अनुपम बाग' और 'सिद्धराज ढड्ढा बाग' का लोकार्पण अनुपम मिश्र की पत्नी व सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मंजूश्री मिश्र, डॉ. राजेन्द्र सिंह, मीना सिंह, कुमारप्पा संस्थान के संस्थापक डॉ. अवध प्रसाद तथा वरिष्ठ पत्रकार सत्री सिविस्टियन ने पौधारोपण करके किया। इस मौके पर डॉ. राजेन्द्र सिंह ने कहा कि शिक्षक दिवस के मौके पर सिद्धराज ढड्ढा (प्रख्यात गांधीवादी एवं प्रथम उद्योग मंत्री राजस्थान) और अनुपम मिश्र (लेखक 'आज भी खरे हैं तालाब', 'राजस्थान की रजत बूंदें') की सीखों को पर्यावरण प्रेमी एवं समता हितैषी विचारधारा को फैलाना चाहिए।

इस बाग में पीपल, आम, बरगद, नीबू, आंवला आदि के 101 पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमित कुमार, नामा, जितेन्द्र जैमन, ब्रजेश पटेल, तरुण भारत संघ के निदेशक मौलिक सिसोदिया, सुरेश रैकवार, गोपाल सिंह, छोटेलाल मीणा, राहुल सिसोदिया, भरत रैकवार, पारस प्रताप सिंह आदि कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

प्रबोधन यात्रा के लिए संगोष्ठी

11 सितंबर 2021 को बनवासी सेवा आश्रम द्वारा संचालित ग्राम निर्माण केन्द्र खैराही में माह भर चलने वाली प्रबोधन यात्रा के संयोजन के लिए क्षेत्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम स्वराज्य के प्रतिनिधि शामिल रहे तथा ग्राम प्रधान रनटोला, दिनेश कुमार जायसवाल व शीतल भाई ने अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. विभा बहन ने कोरोना की तीसरी लहर से बचाव तथा शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता कैसे बढ़े, इस पर विस्तार से चर्चा की।

प्रसिद्ध साहित्यकार व आश्रम के अध्यक्ष अजय शेखर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि शहरी जीवन बनावटी हो गया है। जिस प्रकृति ने हमें जीवन दिया, उसी प्रकृति को हम खत्म करते जा रहे हैं। सभा के अन्त में पीपुल्स फॉर प्रोग्रेस इन इण्डिया के सहयोग से कोविड से प्रभावित 15 जरूरतमंदों को

'कोविड रिलीव किट' उपलब्ध करायी गयी। ग्रामीण क्षेत्र के 200 जरूरतमंद लोगों को ऐसे पैकेट वितरित किये जा रहे हैं। इस अवसर पर ग्राम निर्माण से जुड़े सभी कार्यकर्ता, आरोग्य केन्द्र स्वास्थ्य टीम की सदस्य रेखा, दुर्गा, चांदतारा, राहुल कुमार और बिन्दु आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन शिवनारायण भाई व संचालन अशोक कुमार ने किया। **-देवनाथ भाई**

लोकनीति सत्याग्रह

किसान जन-जागरण पदयात्रा

पिछले नौ महीनों से संयुक्त किसान मोर्चा के सामूहिक नेतृत्व में जारी किसान आंदोलन के प्रति समर्थन जताने और जुटाने के उद्देश्य से नवनिर्माण किसान संगठन एक पदयात्रा शुरू करने जा रहा है। संगठन के संयोजक अक्षय कुमार के मुताबिक 2 अक्टूबर को चंपारण से शुरू होने वाली इस यात्रा का समापन 20 अक्टूबर को वाराणसी में होगा। पदयात्रा के माध्यम से जन-जागरण करते हुए पदयात्री इस बीच कुल 350 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। **-अक्षय कुमार**

उत्तराखंड सर्वोदय मंडल का पुनर्गठन

उत्तराखंड सर्वोदय मंडल का पुनर्गठन वरिष्ठ गांधीवादी सुश्री राधा बहन और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुरेश भाई की उपस्थिति में 11 सितंबर को सम्पन्न हुआ। लक्ष्मी आश्रम कौसानी में सर्वोदयी व गांधीवादी साथियों की हुई एक बैठक में उत्तराखंड सर्वोदय मण्डल के सर्वसम्मति से हुए इस चुनाव में इस्लाम हुसैन को अध्यक्ष चुना गया। बाद में इस्लाम भाई ने सबसे विचार-विमर्श करके सुरेन्द्र लाल आर्य को मंत्री और देवेन्द्र बहुगुणा को उपाध्यक्ष नियुक्त किया।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए राधा बहन ने कहा कि वर्तमान समय में गांधीजी के विचारों को फैलाने की आवश्यकता है। विश्व में गांधीवाद से ही भारत का प्रतिनिधित्व होता है। बिना गांधी जीवन दर्शन के भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने गांधीजनों से उत्तराखंड में सर्वोदय दर्शन को गांव-गांव पहुंचाने का आवाहन किया। इस अवसर पर उत्तराखंड आचार्यकुल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विजय शंकर शुक्ला ने आशा प्रकट की कि उत्तराखंड सर्वोदय मण्डल व आचार्य कुल भविष्य में आपसी समन्वय से गांधी व विनोबा के मूल्यों को स्थापित करने का कार्य करेगा। इससे पूर्व उत्तराखंड सर्वोदय मण्डल के पूर्व अध्यक्ष सुरेश भाई ने अपने कार्यकाल के कार्यों का संक्षिप्त का विवरण देते हुए सभी सर्वोदयी जनों के सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष इस्लाम भाई ने इस अवसर पर सर्वोदय मण्डल की मजबूती के लिए सभी गांधीजनों से जुटने की अपील की। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में से गांधीवाद के समक्ष आ रही चुनौतियों का डटकर सामना करने की जरूरत है। इस अवसर पर लक्ष्मी आश्रम की सचिव नीमा बहन, वरिष्ठ गांधीवादी नंद किशोर उपाध्याय, देहरादून सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष यशवीर आर्य, साहिब सिंह सजवाण,बसंती बहन, हरबीर सिंह कुशवाहा, रमेश चन्द्र यादव, कान्ति बहन, हंसी बहन, कृष्णा बहन, अर्चना बहुगुणा, रमेश पंत, डेविड भाई तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड के अध्यक्ष गोविंद सिंह भण्डारी सहित अनेक गांधीजन उपस्थित थे। **-सुरेन्द्र आर्य**

चार महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम एवं उनकी तिथियां

1.	किसान जन जागरण पदयात्रा	: 02 अक्टूबर चम्पारण से प्रारम्भ।
		: 20 अक्टूबर को वाराणसी में समापन।
2.	कुरुक्षेत्र - राजघाट पदयात्रा	: 21 सितंबर कुरुक्षेत्र से प्रारम्भ।
		: 02 अक्टूबर को राजघाट, दिल्ली में समापन।
3.	सेवाग्राम - साबरमती यात्रा	: 02 अक्टूबर को सेवाग्राम से प्रारम्भ।
		: 11 अक्टूबर को साबरमती में समापन।
4.	राष्ट्रीय युवा शिविर	: 20 से 24 सितंबर, सेवाग्राम।

गांधी शांति प्रतिष्ठान समिति के चुनाव संपन्न

31 जुलाई को गांधी शांति प्रतिष्ठान समिति, जोधपुर की कार्यकारिणी के चुनाव गांधी भवन में चुनाव अधिकारी प्रो. अजीतमल जैन की देखरेख में संपन्न हुए। अध्यक्ष आशा बोथरा, उपाध्यक्ष डॉ. ओ. पी. टाक, सचिव डॉ. भावेन्द्र शरद जैन, कोषाध्यक्ष राकेश गांधी, संयुक्त सचिव धर्मेश रूटिया सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किये गये। कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में गीता भट्टाचार्या, डॉ. पद्मजा शर्मा, काजी मोहम्मद तैय्यब अंसारी एवं बादलराज सिंघवी निर्वाचित घोषित किये गये।

-भावेन्द्र शरद जैन

बनवासी सेवा आश्रम में प्रेम भाई जयंती

ग्राम स्वराज्य के रचनाकार, कर्मयोगी तथा जमुनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित प्रेम भाई, उनके गुरू और कार्यकर्ता शिल्पकार धीरेन्द्र दा और बनवासी सेवा आश्रम की स्थापना के प्रेरणास्रोत रहे उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री, भारत रत्न गोविन्द बल्लभ पंत का जन्मदिन उत्साहपूर्वक बनवासी सेवा आश्रम परिसर में मनाया गया। सुबह सभी ने मिलकर सामूहिक श्रमदान किया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार व आश्रम के अध्यक्ष अजय शेखर व आश्रम के अन्य सहयोगियों द्वारा त्रिमूर्ति को माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलन किया गया। अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा कि प्रेम भाई हर दिल में जिन्दा हैं। हमारा धर्म है कि हम उनके उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ें। जीवन के साधन उनके जीवन की साध कभी नहीं रहे। अभावग्रस्त जीवन की भी एक भव्यता होती है। कार्यक्रम में अनुग्रह, प्रदीप सिंह, डॉ. विभा बहन, आशीष कुमार द्विवेदी आदि वक्ताओं द्वारा महापुरुषों के विचारों, कृतियों व उनके साथ की स्मृतियों को याद किया गया। युवा साथियों ने कहा कि बनवासी सेवा आश्रम में रहने और शिक्षा प्राप्त करने से बाहर की दुनिया में हमारी अलग पहचान होती है।

कार्यक्रम में पूरा आश्रम परिवार शामिल रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन शिवशरण भाई ने किया। **-देवनाथ भाई**

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2023
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

पाश की तीन कविताएं

घास

मैं घास हूँ,
मैं आपके हर किये-धरे पर उग आऊँगा।

बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर,
बना दो हॉस्टल को मलबे का ढेर,
सुहागा फिरा दो भले ही हमारी झोपड़ियों पर,
मुझे क्या करोगे?
मैं तो घास हूँ, हर चीज़ ढंक लूंगा;
हर ढेर पर उग आऊँगा।

बंगे को ढेर कर दो,
संगरूर को मिटा डालो,
धूल में मिला दो लुधियाना का जिला,
मेरी हरियाली अपना काम करेगी...
दो साल, दस साल बाद,
सवारियाँ फिर किसी कंडक्टर से पूछेंगी-
'यह कौन-सी जगह है?
मुझे बरनाला उतार देना,
जहाँ हरे घास का जंगल है।'

मैं घास हूँ, मैं अपना काम करूँगा
मैं आपके हर किये-धरे पर उग आऊँगा।

हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए,
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए,
हम चुनेंगे साथी, जिन्दगी के टुकड़े

हथौड़ा अब भी चलता है, उदास निहाई पर।
हल की लीकें अब भी बनती हैं,
चीख़ती धरती पर।
यह काम हमारा नहीं बनता,
सवाल नाचता है,
सवाल के कंधों पर चढ़कर
हम लड़ेंगे साथी!

क़त्ल हुए जज़्बात की क़सम खाकर,
बुझी हुई नज़रों की क़सम खाकर,
हाथों पर पड़ी गांठों की क़सम खाकर
हम लड़ेंगे साथी!

हम लड़ेंगे तब तक,
कि बीरू बकरिहा जब तक
बकरियों का पेशाब पीता है;
खिले हुए सरसों के फूल को
बीनने वाले, जब तक ख़ुद नहीं सूँघते;
कि सूजी आँखों वाली
गाँव की अध्यापिका का पति जब तक
जंग से लौट नहीं आता;
जब तक पुलिस के सिपाही
अपने ही भाइयों का गला दबाने के लिए
विवश हैं;
कि बाबू दफ्तरों के
जब तक रक्त से अक्षर लिखते हैं;
हम लड़ेंगे, जब तक
दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाक़ी है।

जब बंदूक न हुई, तब तलवार होगी
जब तलवार न हुई, तो लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ,
तो लड़ने की ज़रूरत होगी
हम लड़ेंगे साथी!

हम लड़ेंगे,
कि लड़े बग़ैर कुछ भी नहीं मिलता।
हम लड़ेंगे,
कि अब तक लड़े क्यों नहीं?
हम लड़ेंगे,
अपनी सज़ा कबूलने के लिए।
लड़ते हुए मर जाने वालों
की याद जिन्दा रखने के लिए,
हम लड़ेंगे साथी!

सबसे खतरनाक

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती,
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती,
ग़द्दारी और लोभ की मुट्ठी
सबसे ख़तरनाक नहीं होती,
बैठे-बिठाए पकड़े जाना,
बुरा तो है।
सहमी-सी चुप में जकड़े जाना,
सबसे ख़तरनाक नहीं होता
कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना,
बुरा तो है।
जुगनुओं की लौ में पढ़ना
मुट्ठियां भींचकर बस वक्त निकाल लेना,
बुरा तो है,
पर सबसे ख़तरनाक नहीं होता।

सबसे ख़तरनाक होता है,
मुर्दा शांति से भर जाना!
तड़प का न होना,
सब कुछ सहन कर जाना!
घर से निकलना काम पर,
और काम से लौटकर घर आना!
सबसे ख़तरनाक होता है,
हमारे सपनों का मर जाना!
सबसे ख़तरनाक वह घड़ी होती है,
आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो
आपकी नज़र में रुकी होती है।

सबसे ख़तरनाक वह आंख होती है,
जिसकी नज़र दुनिया को मोहब्बत से चूमना
भूल जाती है।
और जो एक घटिया दोहराव के क्रम में
खो जाती है।
सबसे ख़तरनाक वह गीत होता है,
जो मरसिए की तरह पढ़ा जाता है।
आतंकित लोगों के दरवाज़ों पर
गुंडों की तरह अकड़ता है।
सबसे ख़तरनाक वह चांद होता है,
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आंगन में चढ़ता है,
लेकिन आपकी आंखों में
मिर्चों की तरह नहीं पड़ता।

सबसे ख़तरनाक वह दिशा होती है,
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और जिसकी मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती
ग़द्दारी और लोभ की मुट्ठी
सबसे ख़तरनाक नहीं होती। ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए प्रकाशक अरविन्द अंजुम द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार